वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

जुलाई - 2016

अंदर पढ़े ...

मस्तिष्क की सत्ता

भविष्यवाणी का मनोविज्ञान

पुनर्जन्म

देश में देवदासी प्रथा

20/-

जिस दिन कष्ट भोग रही मानवता की मुक्ति के लिए...बहुत सारे स्त्री-पुरूष आगे आ गए उस दिन स्वतंत्रता का युग शुरू होगा । ...शहीद भगत सिंह

गीत

बल्ली सिंह चीमा

ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गांव के
अब अंधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गांव के।

कह रही है झोंपडी ओ' पूछते हैं खेत भी,
कब तलक लुटते रहेंगे लोग मेर गांव के।

बिन लड़े कुछ भी यहां मिलता नहीं ये जानकर
अब लड़ाई लड़ रहे हैं लोग मेरे गांव के।

कफ़न बांधे हैं सिरों पर हाथ में तलवार है
ढूंढने निकले हैं दुश्मन लोग मेरे गांव के।

हर रुकावट चीखती है ठोकरों की मार से
बेड़ियां खनका रहे हैं लोग मेरे गांव के।

दे रहे हैं देख लो अब वो सदा–ए–इंकलाब
हाथ में परचम लिए हैं लोग मेरे गांव के।

एकता से बल मिला है झौंपड़ी की सांस को,
आंधियों से लड़ रहे हैं लोग मेरे गांव के।

देख 'बल्ली' जो सुबह फीकी दिखे है आजकल
लाल रंग उसमें भरेंगे लोग मेरे गांव के।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416036203 पर एस.एम.एस करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

Reg. No. HARHIN/2014/60580

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

अनुपम राजपुरा - 94683-89373

बलबीर चन्द लोंगोवाल - 98152-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

वार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है–

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :

Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:

@gurmeeteditor

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक **सफीदों** में दिनांक **11-09-2016**, दिन रविवार को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

संपर्क सूत्रः

पलविंद्र सिंह- 9896163452

जसबीर मानव-8930062168

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

संपादकीय

मानवता का संहार

मथुरा काण्ड ने एक बार फिर संवेदनशील व्यक्ति को चिंतित कर दिया है। इस काण्ड में कितने परिवार उजड़ गए। इस का आंकलन न करके इस बात को प्रमुखता से उछालने की कोशिश की गई कि इनमें पक्ष और विपक्ष में कौन दोषी हैं । सरकारी आंकड़ों के अनुसार 20-22 व्यक्ति इस कांड में अपना जीवन गवां बेठै हैं। गैर सरकारी आंकड़े और भी भयावह तस्वीर प्रस्तुत कर रहे हैं।

देश में बाबागिरी करने वालों और राजनीतिक रोटियां सेंकने वालों के बीच पिसते आम आदमी की ज़िंदगी की कोई कीमत नहीं रह गई है। यह कोई पहली घटना नहीं है, जहां बाबागिरी का धंधा करने वालों और सत्ता पक्ष में फसाद हुआ हो। कुछ समय पूर्व हरियाणा में भी एक बाबा के साथ सत्ता पक्ष का लम्बा संघर्ष चला था, जिसे बड़ी मुश्किल से काबू पाया गया, यद्यपि इस मामले में अभी भी तनावपूर्ण स्थिति बनी रहती है।

इस समस्या की जड़ क्या है? कोई भी बाबा धीरे-धीरे अपनी वाकपटुता और राजनैतिक व प्रशासनिक रसूख से किसी भी क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाता जाता है। एक स्थिति ऐसी आती है जब वह वोट बैंक के रूप में स्थापित होने लगता है फिर राजनैतिक पार्टियां बाबा की चरण-वंदना करने लगती हैं और उनके गैर कानूनी कार्यो को अनेदखा कर उसे ताकत देने लगती हैं। विभिन्न सामाजिक व आर्थिक विपत्तियों से फंसे लोगों के अलावा बहुत सारे बेरोजगार, आवारा और असमाजिक कार्य करने वाले लोग इन बाबाओं के गिरोह में शामिल होते जाते हैं। स्थिति तब विकट बनती है जब बाबा सत्ता के खेल में भी शामिल होने लगता है और पक्ष-विपक्ष के बीच में अपनी भूमिका के कारण चर्चित होने लगता है। विपक्षियों के सत्ता में आने पर उसे सत्ता के चाबुक का सामना करना पड़ता है और फिर इसी के बीच इस प्रकार की दर्दनाक घटनाएं घटित होती हैं। आम जनता जो अंधविश्वास के कारण बाबा के चंगुल में फंसी होती है, वह ढाल बनने की कोशिश करती है, और एक अन्तहीन दुर्घटनाओं की स्थिति आम जनता की बन जाती है।

आम जनमानस जब तक बाबाओं के झूठे चमत्कारी आभामण्डल से चमत्कृत होता रहेगा, मथुरा कांड जैसी दुखदायी घटनाओं को झेलने के लिए विवश होता रहेगा। आज जरूरत है कि जनता को बाबाओं और राजनीतिज्ञों के गठजोड़ से अवगत कराया जाये। - gurmeetambala@atheist.com

विचार श्रृंखला

मस्तिष्क की सत्ता

धर्म, परम्पराएं और अंधविश्वास

शरद कोकास

8871665060

धर्म और परम्पराओं के नाम पर कई बार हम ऐसे विश्वास पाल लेते हैं, जिनसे हमारा नुकसान होता है। यद्यपि हम अज्ञानतावश उनसे अनजान रहते हैं। एक प्रसंग मुझे याद आ रहा है। दीपावली के समय की बात है। मैं घर से दूर किसी अन्य शहर में अपने मित्र के यहां था। वह मित्र अविवाहित था। अकेला ही रहता था और गृह में कोई गृहलक्ष्मी नहीं थी, लेकिन धन की देवी लक्ष्मी पर उसकी आस्था थी। पूजन सम्पन्न होने के पश्चात् मैंने अपने मित्र से कहा चलो शहर की रोशनी देखकर आते हैं। हम लोग जब निकलने लगे, तो मैंने उनसे कहा दरवाजे बंद कर ताला तो लगा दो।

उसने सहजता से कहा कि आज के दिन लक्ष्मी भी आ सकती है इसलिए द्वार पर ताला नहीं लगाया जाता। मैंने कहा 'और चोर आ गए तो?' और सचमुच ऐसा ही हुआ। जब हम लोग लौटे तो चोर लक्ष्मी जी के पास रखी नकदी पर हाथ साफ कर चुके थे। उनसे ज्यादा तो उसके घर में कुछ था भी नहीं। मैंने कहा..देख लो, यह क्यों भूल गए कि जिस दरवाजे से लक्ष्मी आ सकती है, उससे जा भी सकती है।

ताप्पर्य यह है कि हमें सायास विश्वास और अंधविश्वास के इस दुष्चक्र से निकलना बहुत जरूरी है अन्यथा हम जीवन भर उन्हीं मान्यताओं और जर्जर हो चुकी परम्पराओं को ढोते रहेंगे और इसका नुक्सान उठाते रहेंगे। हालांकि इससे कोई विशेष नुक्सान नहीं है, क्योंकि इतनी बुद्धि तो हम में है कि जैसे ही हमें नुक्सान की संभावना दिखाई देती है, हम सतर्क हो जाते हैं।

इस पूंजीवादी व्यवस्था ने ऐसे अनेक शातिर लोगों को जन्म दिया है। ऐसा भी नहीं कि ऐसे लोग पहले से नहीं थे लेकिन अब ठगने के तरीके बदल गए हैं। अब तो सत्ता ही ठगती है। चालाक लोग, सामान्य लोगों की इस मनोवृति से हमेशा फायदा उठाते हैं और अक्सर सीधे-सादे लोग अंधविश्वासों का शिकार बन जाते हैं। हम लाख सतर्कता बरतें लेकिन कहीं न कहीं तो ठगे जाते ही हैं। अगर हम चाहते हैं कि हमारा जीवन सहज हो, सरल हो और इस प्रकार की दुर्घटनाओं से रहित हो तो इसके लिए हम वास्तविकता जानने का प्रयास करना होगा। हमें अपने-आप को प्रशिक्षित करने की शुरुआत करनी होगी। इसके लिए सबसे अधिक आवश्यकता है अपने-आपको वैज्ञानिक दृष्टि से लैस करने की, अपने-आप में इतिहास बोध जागृत करने की तथा ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन की।

आप कहेंगे व्यवस्तता के इस युग में अपनी रोजी-रोटी के लिए जद्दोजहद करते हुए इतनी फुर्सत कहां है जो अपने वैज्ञानिक प्रशिक्षण के लिए किताबें-विताबें पढ़ें। इसके लिए किताबें पढ़ने की जरूरत भी नहीं है। वैसे भी मनोविज्ञान, प्रकृति विज्ञान, जीव विज्ञान, भौतक शास्त्र, रसायन विज्ञान आदि इतने सारे विज्ञान हैं कि अब बिना रूचि और उपयोगिता के पढ़ना कठिन है। आप तो सिर्फ उन विषयों को याद करें जिन्हें बचपन से लेकर अब तक आपने अपनी शोलय व महाविद्यालयीन शिक्षा के अंतर्गत पढ़ा है। बिना किताबें पढ़े भी हम अपनी सहज बुद्धि से आज जो कुछ हमारे सामने घटित हो रहा है, उसका वैज्ञानिक विश्लेषण तो कर ही सकते हैं। तर्क के आधार पर विश्वास और अंधविश्वास के बीच अंतर करते हुए अनेक मिथ्या बातों को खारिज

भी कर सकते हैं।

हम अपने दैनन्दिन जीवन में ऐसा करते भी हैं। लेकिन कई बार स्थायी रूप से इसका प्रभाव नहीं पड़ता। इसीलिए आये दिन हम अखबारों में ठगी की वही वही खबरें पढ़ते हैं..'नकली फोन काल से ठगा गया' आदि आदि। हम पढ़े-लिखे लोग ऐसे लोगों की मूर्खता पर हंसते हैं और सोचते हैं कि काश इस तरह ठगे जाने से बेहतर लोग इसके बारे में पहले से जान लेते। लेकिन हम पढ़े-लिखे लोग और भी उन्नत तरीके से ठगे जाते हैं और इसका हमें पता भी नहीं चलता। उदाहरण के तौर पर मेरी जानकारी में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसने सौ ग्राम की टूथपेस्ट की ट्यूब से पेस्ट निकाल कर जांचा हो कि वह सौ ग्राम है या नहीं। न हम पेट्रोल की जांच करते हैं न गैस की, न गंगा जल लिखी बोतल की, कि उसमें गंगा का जल है या नहीं। आपने कभी जानना चाहा कि जिन वस्तुओं को आप खाद्य के रूप में उपयोग कर रहे हैं उनमें क्या मिला है? अगर यह मैगी काण्ड नहीं होता, तो इतनी चेतना भी आप में नहीं उत्पन्न होती। आपके मौहल्ले में जब सड़क बनती है या कोई सार्वजनिक ईमारत बनती है तो आपने कभी देखा है जाकर कि रेत में कितनी सीमेंट मिलाई जा रही है? चंदा मांगने वाले चंदे का क्या उपयोग करते हैं। आपने कभी पूछा है? अगर कोई एजेंट किसी काम के लिए आपसे शुल्क मांग रहा है तो उसमें से कितना वह सरकारी खजाने में जमा कर रहा है?

हम बहुत सारे विश्वासों की जांच करना चाहते हैं लेकिन हमें विश्वास दिला दिया जाता है.. 'आल इस वेल' कई बार विश्वास करने के लिए धर्म और ईश्वर और भाग्य के नाम पर भी हमें बाध्य किया जाता है कि हम आंख मूंदकर उस पर विश्वास कर लें जो हमें बताया जा रहा है। कृपा जैसी कोई चीज नहीं होती, फिर भी एक पाखंडी बाबा कहता है कि कृपा आ रही है तो हम विश्वास कर लेते हैं। हम ठगे जाने से कैसे बचें और कोई अंधविश्वास भी हमारा कोई नुक्सान न कर सके, इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी है हमारे जीवन में और हमारे आसपास घटित होने वाली हर घटना के पीछे का कारण जानना। इसके लिए हमारे पास पर्याप्त वैज्ञानिक व ऐतिहासिक ज्ञान व चेतना का सार होना भी आवश्यक हैं। बिना इसके कुछ भी संभव नहीं है। यह चेतना हमारे भीतर है सिर्फ हमें उसका उपयोग करना है।

★★★

कविता

-अवतार बठिण्डा

कविता कोई
मनोरजन या
शुगल की वस्तु नहीं होती
और न ही किसी कवि दरबार में
यूं ही फालतू वाह-वाही बटोरने के लिए होती है
यह टकरने-टकराने और मरने-मारने के लिए भी होती है
बहुत खतरनाक होता है
कविता का
नपुंसक बन जाना
और किसी कवि का
सारी उम्र
बस कवि रह जाना
कविता की सब से ज्यादा तौहीन
तब होती है
जब यह बेचारी केवल
किताबें छापने और
बच्चे पालने के लिए रह जाती है
यह फूलों के लिए ही नहीं
युद्ध के लिये भी होती है
यह तख़्त के लिए नहीं
तख़्ते के लिए भी होती है
यह शोहरत की जगह
बरबाद भी कर देती है
यह शब्दों का नहीं

★★★

विचार श्रृंखला

मस्तिष्क की सत्ता

धर्म, परम्पराएं और अंधविश्वास

शरद कोकास
8871665060

धर्म और परम्पराओं के नाम पर कई बार हम ऐसे विश्वास पाल लेते हैं, जिनसे हमारा नुकसान होता है। यद्यपि हम अज्ञानतावश उनसे अनजान रहते हैं। एक प्रसंग मुझे याद आ रहा है। दीपावली के समय की बात है। मैं घर से दूर किसी अन्य शहर में अपने मित्र के यहां था। वह मित्र अविवाहित था। अकेला ही रहता था और गृह में कोई गृहलक्ष्मी नहीं थी, लेकिन धन की देवी लक्ष्मी पर उसकी आस्था थी। पूजन सम्पन्न होने के पश्चात् मैंने अपने मित्र से कहा चलो शहर की रोशनी देखकर आते हैं। हम लोग जब निकलने लगे, तो मैंने उनसे कहा दरवाजे बंद कर ताला तो लगा दो।

उसने सहजता से कहा कि आज के दिन लक्ष्मी भी आ सकती है इसलिए द्वार पर ताला नहीं लगाया जाता। मैंने कहा 'और चोर आ गए तो?' और सचमुच ऐसा ही हुआ। जब हम लोग लौटे तो चोर लक्ष्मी जी के पास रखी नकदी पर हाथ साफ कर चुके थे। उनसे ज्यादा तो उसके घर में कुछ था भी नहीं। मैंने कहा..देख लो, यह क्यों भूल गए कि जिस दरवाजे से लक्ष्मी आ सकती है, उससे जा भी सकती है।

ताप्पर्य यह है कि हमें सायास विश्वास और अंधविश्वास के इस दुष्चक्र से निकलना बहुत जरूरी है अन्यथा हम जीवन भर उन्हीं मान्यताओं और जर्जर हो चुकी परम्पराओं को ढोते रहेंगे और इसका नुक्सान उठाते रहेंगे। हालांकि इससे कोई विशेष नुक्सान नहीं है, क्योंकि इतनी बुद्धि तो हम में है कि जैसे ही हमें नुक्सान की संभावना दिखाई देती है, हम सतर्क हो जाते हैं।

इस पूंजीवादी व्यवस्था ने ऐसे अनेक शातिर लोगों को जन्म दिया है। ऐसा भी नहीं कि ऐसे लोग पहले से नहीं थे लेकिन अब ठगने के तरीके बदल गए हैं। अब तो सत्ता ही ठगती है। चालाक लोग, सामान्य लोगों की इस मनोवृति से हमेशा फायदा उठाते हैं और अक्सर सीधे-सादे लोग अंधविश्वासों का शिकार बन जाते हैं। हम लाख सतर्कता बरतें लेकिन कहीं न कहीं तो ठगे जाते ही हैं। अगर हम चाहते हैं कि हमारा जीवन सहज हो, सरल हो और इस प्रकार की दुर्घटनाओं से रहित हो तो इसके लिए हम वास्तविकता जानने का प्रयास करना होगा। हमें अपने-आप को प्रशिक्षित करने की शुरुआत करनी होगी। इसके लिए सबसे अधिक आवश्यकता है अपने-आपको वैज्ञानिक दृष्टि से लैस करने की, अपने-आप में इतिहास बोध जागृत करने की तथा ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन की।

आप कहेंगे व्यवस्तता के इस युग में अपनी रोजी-रोटी के लिए जद्दोजहद करते हुए इतनी फुर्सत कहां है जो अपने वैज्ञानिक प्रशिक्षण के लिए किताबें-विताबें पढ़ें। इसके लिए किताबें पढ़ने की जरूरत भी नहीं है। वैसे भी मनोविज्ञान, प्रकृति विज्ञान, जीव विज्ञान, भौतक शास्त्र, रसायन विज्ञान आदि इतने सारे विज्ञान हैं कि अब बिना रूचि और उपयोगिता के पढ़ना कठिन है। आप तो सिर्फ उन विषयों को याद करें जिन्हें बचपन से लेकर अब तक आपने अपनी शोलय व महाविद्यालयीन शिक्षा के अंतर्गत पढ़ा है। बिना किताबें पढ़े भी हम अपनी सहज बुद्धि से आज जो कुछ हमारे सामने घटित हो रहा है, उसका वैज्ञानिक विश्लेषण तो कर ही सकते हैं। तर्क के आधार पर विश्वास और अंधविश्वास के बीच अंतर करते हुए अनेक मिथ्या बातों को खारिज

कल्याणकारी वाणी पृथ्वी पर से कभी विलीन नहीं होती।

हर दिमाग एक ऐसा खेत है, जिसमें प्रकृति विचार-रूपी बीज बोती है और उसकी पैदावार मिट्टी के अच्छे या बुरे होने पर निर्भर करती है।

इतना होने पर भी युगों तक आदमी सभी दिशाओं में सच्चाई के साथ 'अलौकिक' के सहारे रहा। उसके अस्तित्व में विश्वास करता रहा। उसने प्रकृति की एकरूपता में विश्वास नहीं किया, उसे कार्य-कारण का कुछ ध्यान नहीं रहा। उसे 'गति' के अविनाशी होने की कुछ कल्पना नहीं थी।

औषधी के रूप में उसने मंत्रों, जादू, ताबीजों और टोटकों में विश्वास किया। जंगली आदमी को यह कभी सूझा ही नहीं कि बीमारी भी प्राकृतिक होती है।

रसायन-शास्त्र के रूप में उसने 'अमृत' की खोज की, पारस-पत्थर की खोज की और किसी ऐसे तरीके की खोज में रहा, जिससे वह कम-कीमत की धातुओं को सोने में बदल सके।

राज्य-शासन के रूप में उसने जाना कि सारी शक्ति का स्रोत प्रकृति से परे की शक्ति में है।

शताब्दियों तक उसकी सदाचार की कल्पना आज्ञाकारी रहने मात्र की कल्पना थी-प्रकृति में जो कुछ विद्यमान है, उसके प्रति आज्ञाकारी नहीं, किन्तु प्रकृति के परे किसी काल्पनिक अस्तित्व के प्रति।

अनुभव से, तजुर्बे से, संभव है अनायास ही आदमी को यह पता लग गया कि कुछ रोग प्राकृतिक साधनों से अच्छे किए जा सकते हैं और अनेक अवस्थाओं में उसका दुख-दर्द खास तरह के पत्तों तथा वृक्ष की छालों के उपयोग से दूर किया जा सकता है।

यह आरंभ था। शनैः-शनैः जो प्राकृतिक है, उसमें आदमी का विश्वास बढ़ने लगा तथा मंत्रों तथा जादू-टोनों में उसका विश्वास घटने लगा। शताब्दियों तक यह संग्राम होता रहा, किन्तु अंत में जो प्राकृतिक है उसी की विजय हुई। अब हम यह जानते हैं कि सभी बीमारियां स्वाभाविक ढंग से उत्पन्न होती हैं और जितनी भी औषधियां हैं, जितने भी इलाज हैं, सभी प्राकृतिक नियमों के अनुसार काम करते हैं। अब हम जानते हैं कि जिस प्रकार मंत्र-तंत्र और जादू-टोना किसी एक भी गणित के प्रश्न को हल करने के लिए बेकार है, उसी प्रकार वे किसी रोग को दूर कर सकने में भी असमर्थ है। अब हम जानते हैं कि कहीं कोई 'अलौकिक' चिकित्सा नहीं होती।

रसायन-शास्त्र में जो लड़ाई लड़ी गई, वह लंबी रही और अत्यंत तीखी, किन्तु अब न कोई 'अमृत' की खोज में भटकता है और न ही पारस-पत्थर की। हम निष्ठापूर्वक जानते हैं कि रसायन शास्त्र के क्षेत्र में कहीं कुछ भी 'अलौकिक' नहीं है। हम जानते हैं कि एक पदार्थ के ठीक इतने कण दूसरे के नियमों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। हम प्रकृति की समानरूपता पर अखण्ड विश्वास रख सकते हैं-इस बात पर कि पृथ्वी के आकर्षण के नियम सदैव एक ही रहेंगे। हम जानते हैं कि एक चक्र की परिधि और उसके व्यास के परस्पर के संबंध में कभी कोई अंतर नहीं आ सकता।

इसी प्रकार हम लोग जो अमरीका के संयुक्त राज्य में रहते हैं, विश्वास करते हैं कि शासन करने का अधिकार, नियम बनाने और उसे कार्यान्वित करने का अधिकार शासित लोगों की रजामंदी से प्राप्त होता है, न कि किसी 'अलौकिक' स्रोत से। हम यह नहीं मानते कि राजा किसी 'अलौकिक' शक्ति की इच्छा से राज्य सिंहासन पर बैठा है और हम यह भी नहीं जानते कि किसी अलौकिक शक्ति की ही इच्छा से दूसरे लोग प्रजाजन हैं, गुलाम हैं तथा दास हैं।

इसी प्रकार सदाचार के बारे में हमारे जो विचार थे, वे भी बदल गए हैं। करोड़ों लोगों का अब यही विश्वास है कि जिससे सुख और कल्याणकारी उत्पत्ति हो, वही परम सदाचार है। अविवेकपूर्ण आज्ञाकारिता न सदाचार का आधार है और न उसका सार। वह तो मानसिक परतंत्र का परिणाम है। कृतज्ञता के भाव से प्रभावित होकर उसके अनुसार कुछ करना तो स्वतंत्रता और श्रेष्ठता का लक्षण है।

ऐसे लोग अनेक हैं, जो इस परिणाम पर पहुंच गए हैं कि सच्चे धर्म को 'अलौकिकता' से कुछ लेना-देना नहीं। धर्म का मतलब यह नहीं कि बिना किसी प्रमाण के सर्वथा विरुद्ध किसी बात पर विश्वास किया जाए। इसका मतलब किसी 'अज्ञात' की पूजा नहीं है और न किसी 'अनन्त' के लिए कुछ करना। रीति-रिवाज, प्रार्थनाएं, इलहामी किताबें, करिश्मे, विशेष दैवी कृपा तथा हस्तक्षेप-सभी अलौकिकता के अंश हैं और उनका सच्चे धर्म से कुछ संबंध नहीं।

प्रत्येक विज्ञान का आधार है-प्रकृति और सिद्ध हुई बातें। इसलिए धर्म को भी, प्रकृति के स्वभाव में ही अपना आधार खोजना होगा।

2

क्योंकि अज्ञान अंधकार है, इसलिए हमें जिस चीज की आवश्यकता है, वह मानसिक प्रकाश है। क्योंकि हर प्रकार की उन्नति का आधार शिक्षा है। इसलिए जो सबसे अधिक महत्व की बात है वह यह है कि लोगों को यह शिक्षा दी जाए कि सारा विश्व प्राकृतिक है, आदमी ही आदमी का 'परमात्मा' है, हम अपने मस्तिष्क के विकास द्वारा कुछ कष्टों से बच सकते हैं, कुछ बुराइयों से बचे रह सकते हैं, कुछ बाधाओं को पार कर सकते हैं और प्रकृति की कुछ बातों तथा शक्तियों से लाभ उठा सकते हैं। यह भी कि आविष्कार और अध्यवसाय द्वारा हम एक सीमा तक अपने शरीर की आवश्यकताएं पूरी कर सकते हैं तथा विचार, अध्ययन और प्रयत्न द्वारा आंशिक तौर पर हम अपने मन की भूख भी मिटा सकते हैं।

आदमी को प्रकृति के परे की किसी भी शक्ति से सहायता की आशा छोड़ देनी चाहिए। अब उसे इस बात का निश्चय हो जाना चाहिए कि पूजा से धन पैदा नहीं हुआ और न प्रार्थनाओं से ऐश्वर्य। उसे मालूम होना चाहिए कि प्रकृति के परे की किसी शक्ति ने दीनों की सहायता नहीं की, न नंगों को वस्त्र दिए, न भूखों को भोजन दिया, न निर्दोषों को बचाया, न बीमारियों को रोका और न दासों को मुक्त किया।

यह विश्वास करके कि प्रकृति से परे कोई शक्ति है ही नहीं, आदमी को चाहिए कि वह अपना सारा ध्यान इस दुनिया की बातों पर केंद्रित करे, प्रकृति की बातों पर।

सबसे पहले तो उसे अपव्यय बंद करना चाहिए-शक्ति का अपव्यय, धन का अपव्यय। हर भले पुरुष तथा भली स्त्री को यह प्रयत्न करना चाहिए कि युद्धों की आवश्यकता न रहे, लोग जंगली-शक्ति को अपील करना छोड़ दें। अदमी जब जंगली अवस्था में होता है तो वह अपने शारीरिक बल पर भरोसा रखता है और स्वयं आप ही 'न्याय' तथा 'अन्याय' का निर्णायक होता है। सभ्य आदमी अपने मतभेद मिटाने के लिए शस्त्रों का सहारा नहीं लेते। वे अपने झगड़ों को न्यायाधीशों तथा न्यायालयों में ले जाते हैं। जंगली और सभ्य आदमी में यही बड़ा भेद है। परन्तु जातियां, एक-दूसरे के प्रति अभी भी जंगलीपन का रिश्ता निभाए चली जा रही हैं। उनके पास अपने झगड़ों को निपटाने का कोई मार्ग नहीं। हर जाति अपने-आप निर्णय करती है और फिर उस निर्णय के अनुसार कार्य हुआ देखना चाहती है। इसी से युद्ध होते हैं। हज़ारों आदमी इस समय इस बात में लगे हुए हैं कि अपने भाइयों को मारने के लिए नए-नए अस्त्रों-शस्त्रों का आविष्कार करें। ढाई हजार वर्ष से शांति का पाठ पढ़ाया जा रहा है और तब भी संसार की सभ्य जातियां सबसे अधिक युद्धप्रिय हैं। यूरोप में आज लगभग एक करोड़ बीस लाख सिपाही युद्ध क्षेत्र के लिए तैयार खड़े हैं और हर देश की सीमाओं पर किलेबंदी है। समुद्र फौलाद के जहाजों से भरा है, जिनमें मृत्युकर गैस लदी है। सभ्य संसार ने अपने-आपको दरिद्र बना लिया है और ईसाई-देशों का कर्जा जोकि अधिकांश युद्धों के लिए ही लिया गया है, तीस अरब डालर है। इसी बड़ी रकम पर सूद देना पड़ेगा और यह देना पड़ेगा श्रमिकों को, अधिकांश गरीबों को, जिन्हें मजबूरी से जीवन की आवश्यकताओं के बिना ही रहना पड़ता है। यह ऋण प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। या तो इस अवस्था में परिवर्तन होना चाहिए, अन्यथा ईसाई-संसार का दीवाला निकल जाएगा।

इस रकम का सूद वर्ष में कम से कम 20 करोड़ डालर होगा। अब यदि इसमें स्थल-सेना तथा जल-सेना का खर्च सम्मिलित कर लें, जहाजों की मुरम्मत का खर्च, मृत्यु के नए-नए साधनों के निर्माण का खर्च, तो यह सारी रकम लगभग साठ लाख डालर प्रतिदिन हो जाएगी। यदि मान लें कि काम-काज का एक दिन दस घंटे का होता है, तो प्रति घंटा छह लाख डालर का खर्च हुआ और प्रति मिनट दस हजार डालर का।

जरा सोचिए कि यह सारी रकम अपने भाइयों को मारने और उसकी तैयारी करने में खर्च की जाती है। इस बड़ी रकम से जो भलाई के काम किए जा सकते हैं, जो स्कूल बनाए जा सकते हैं, जिन इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है, उनका विचार करो। जरा सोचो कि इस रकम से कितने घरों का निर्माण हो सकता है कितने बच्चों के तन ढके जा सकते हैं।

किसी आदमी में इतना सामर्थ्य नहीं कि वह अपनी कल्पना-शक्ति से युद्ध के कष्टों, उसकी भयानक बातों तथा उसकी क्रूरताओं को चित्रित कर सके। जरा सोचिए कि गोलियां आदमियों के बदनों को छेदती हुई चली जा रही हैं। जरा विधवाओं और अनाथों की बात सोचिए। जरा लंगड़े-लूले अपाहिजों की बात सोचिए। ★★★

कुछ शब्द

 बलदेव सिंह महरोक

मुझे अपने शब्दकोश में
कुछ शब्द अच्छे नहीं लगते।
मुझे अच्छा नहीं लगता शब्द 'राष्ट्रवाद'
देशभक्ति का आवरण ओढ़े,
राष्ट्र और राष्ट्र के बीच,
युद्ध का प्रतीक.........
गैस चैम्बरों में
सड़ती हुई लाशों की
बदबू आती है मुझे
इस शब्द में।

मुझे अच्छा नहीं लगता शब्द 'धर्म'
घृणा का प्रतीक,
जो जोड़ता नहीं तोड़ता है
आदमी को आदमी से।
जो सिखाता है तो बस,
आपस में बैर रखना।

मुझे अच्छा नहीं लगता शब्द 'जाति'
इंसानों के लहू से
भीगा यह शब्द,
ऊँच, नीच, छूत और अछूत,
इन चार बेटों का यह बाप।
सुनाई देती हैं मुझे चीखें,
इस शब्द में,
गालियां खाते हुए
किसी मजदूर की,
और अस्मत लुटाते हुए
किसी अछूत कन्या की।

मेरे शब्दकोश में
सदियों से छिप कर बैठे ये शब्द,
मारने लगे हैं अब सड़ांध,
और गंदा कर रहे हैं मेरे शब्दकोश को।

निकाल देना चाहता हूं
इन शब्दों को अब,
मैं अपने शब्दकोश से
और बना देना चाहता हूं पवित्र
मैं अपने शब्दकोश को ।

-मो॰ 9253064969

दामोदर धर्मानन्द कोशाम्बी

दामोदर धर्मानन्द कोशाम्बी एक भारतीय गणितज्ञ, सांख्यिकविद्, मार्क्सवादी इतिहासकार और बहुश्रुत विद्वान थे, जिन्होंने आनुवंशिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। वे मुद्राशास्त्र में अपने कार्यो तथा प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के अपने समालोचनात्मक संपादनों के लिए विशेष तौर पर जाने जाते हैं। उनके पिता, धर्मानन्द कोशाम्बी ने प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन बौद्धों के पालि ग्रंथों के संदर्भ में किया था। दामोदर ने पिता का अनुसरण करते हुए उनका अध्ययन प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में किया। उन्होंने इस अध्ययन में अपने ऐतिहासिक भौतिकवादी (मार्क्सवादी) दृष्टिकोण का भी उपयोग किया। वे भारतीय इतिहास लेखन के मार्क्सवादी स्कूल के संस्थापक पितामह माने जाते हैं।

वे अपने समकालीन भारतीय प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के आलोचक थे। उनका कहना था कि लोकतांत्रिक समाजवाद का बहाना बनाकर वे भारत में पूंजीवाद को प्रोत्साहन दे रहे थे। वे सन् 1949 ई. की चीनी क्रांति के प्रशंसक थे। वे विश्व शांति आंदोलन के उत्साही कार्यकर्त्ता थे। प्रो. इरफान हबीब की राय में कोशाम्बी उन पहले व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने इतिहास के विकास के अध्ययन में पहली बार किसानों व मजदूरों के अध्ययन को भी जोड़ा।

कोशाम्बी का जन्म जुलाई 31, 1907 ई. को एक मराठी परिवार में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा भारत में हुई पर सन् 1918 में मात्र 11 वर्ष की आयु में वे अपने पिता के साथ कैम्ब्रिज (अमेरिका) चले गए। वहां उनके पिता की नियुक्ति बौध ग्रंथ 'विशुद्धिमग्ग' के समालोचनात्मक प्रकाशन के लिए हुई थी। यहीं कोशाम्बी ने एक वर्ष ग्रामर स्कूल में अध्ययन किया और फिर हाई स्कूल 1920 में कैम्ब्रिज स्कूल से पास किया। यहां वे कैम्ब्रिज ब्वाय स्काउट्स के भी सदस्य बने। अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान नार्बर्ट वीनर से यहीं सह-छात्र के रूप में उनकी दोस्ती प्रारंभ हुई।

कोशाम्बी अपनी अंतिम स्कूल परीक्षा में बेहद अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुए। अतः वे हार्वर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षा की अनिवार्यता से छूट के साथ सीधे प्रवेश पा गए (1924)। लेकिन कुछ ही समय बाद वे वहां की शिक्षा छोड़ वापस भारत आ गए, जहां गुजरात विश्वविद्यालय में उनके पिता ने नई नियुक्ति पा ली थी। वे गांधीजी के निकट सम्पर्कियों में शामिल थे। सन् 1926 ई. में वे पुनः हार्वर्ड लौट गए और वहां मैथमैटिक्स के अध्ययन में जुट गए। सन् 1929 ई. में उन्होंने सर्वाधिक अंकों के साथ बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर ली। नतीजतन 'फी बेटा कप्पा सोसायटी' ने उन्हें राष्ट्रीय सम्मान देकर अपना आजीवन सदस्य बना लिया। लेकिन वे शीघ्र ही चीन सरकार के तकनीकी सलाहकार बनकर भारत लौट आए। बाद में वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में मैथमैटिक्स व जर्मन पढ़ाने के लिए नियुक्त हो गए। सन् 1930 ई. में अपने ही बल पर 'इंडियन जर्नल ऑफ फिजिक्स' में अपना शोध-लेख, 'प्रोशेसन्स ऑफ ऐन इलिष्टिक ऑर्बिट' छपवाया। यह बड़ी प्रतिष्ठा की बात थी।

सन् 1931 में कोशाम्बी ने एक धनी परिवार की उत्कृष्ठ बाला, नलिनी मडगावकर से विवाह कर लिया। इसी दौरान अलीगढ़ विश्वविद्यालय में गणित पढ़ा रहे प्रो. आन्द्रे वील ने उन्हें अपने यहां बुला लिया। यहां उन्होंने 2 वर्षो में 8 शोध लेख विभिन्न भाषाओं (फ्रैंच, इटालियन और जर्मन) में प्रकाशित किए। इससे उनकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई।

सन् 1933 ई. में वे पुणे के फरगुशन कालेज में आ गए। यहां उन्होंने 12 वर्षो तक मैथमैटिक्स पढ़ाई। यहां उन्होंने सन् 1944 ई. में

4 पृष्ठों का एक खोजपत्र प्रकाशित किया। शीर्षक था, 'द ऍस्टीमेशन ऑफ मैप डिस्टेन्स फ्राम रिकम्बीनेशन वैल्यूज इन एनाल्स आफ यूजेनिक्स', जिसके आधार पर बाद में कोशाम्बी मैप फंक्शन सिद्धांत का नाम पड़ा। इसी दौरान कोशाम्बी ने एक के बाद एक कई शोधपत्र प्रकाशित किए, जिन्होंने सांख्यिकी, समुद्र विज्ञान, रसायन यांत्रिकी और ज्ञान के कई क्षेत्रों में स्थायी प्रभाव डाला। इन सभी खोजों का योगदान अब और भी ज्यादा माना जाने लगा है।

मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में कोशाम्बी की खोजें उन्हें इतिहास के अध्ययन की ओर ले गई। उन्होंने प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया और संस्कृत कवि भर्तृहरि की 'शतकत्रयी' व 'सुभाषिताज' प्रकाशित की (1945-48)। इन्हीं अध्ययनों के दौरान वे देश के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गए और उन्होंने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के मुखर पक्षधर बनकर उसके समर्थन में कई राजनीतिक लेख भी लिखे। सन् 1945 ई. में होमी जे. भाभा ने कोशाम्बी को 'टाटा इन्स्टीच्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च' में आने का निमंत्रण दिया, जो उन्होंने स्वीकार कर लिया। देश की आजादी के बाद वे कम्प्यूटर के अध्ययन के लिए इंग्लैंड व अमेरिका गए। इसी दौरान भारतविद् ए.आई.बासम से उनकी प्रगाढ़ मित्रता स्थापित हुई।

जब वे पुनः भारत लौटे, तो शीत युद्ध उग्र था। वे विश्व शांति आंदोलन से निरंतर जुड़ते गए। इस जुड़ाव के कारण उन्होंने चीन, रूस व हेलसिंकी की यात्राएं कीं। वे परमाणु ऊर्जा के विपरीत सौर ऊर्जा जैसे पारम्परिक ऊर्जा स्त्रोतों के विकास के पक्षधर थे, जो भारत के सत्ता प्रतिष्ठान के संचालकों की समझ से परे थी। इस दौरान भी वे निरंतर अध्ययन में जुटे थे। सन् 1956 में छपी, 'अन इन्ट्रोडक्शन टु द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री' इन्हीं अध्ययनों का परिणाम थी। इस बीच वे चीन भारत के विकास के तुलनात्मक मूल्यांकन में चीन के निरंतर प्रशंसक बनते जा रहे थे। भारत के सत्ता वर्ग को इससे नाराजगी हो रही थी। परिणामतः सन् 1962 ई. में वे टाटा इंस्टीच्यूट व भाभा दोनों से अलग हो गए। इस अलगाव की शांति के दिनों में उन्होंने 'द कल्चर एंड सिविलाइजेशन ऑफ एन्शिएन्ट इंडिया' नामक खोजपूर्ण पुस्तक की रचना की (1965)। पुस्तक का कई योरुपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ और उसकी व्यापक प्रशंसा हुई।

कोशाम्बी का विस्तृत अध्ययन क्षेत्र निरन्तर बढ़ता जा रहा था कि जून 29, 1966 ई. को पुणे में उनका निधन हो गया। सरकारी संस्था विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मृत्युपरांत उन्हें सन् 1980 ई. में हरिओम आश्रम एवार्ड प्रदान किया। मृत्यु के समय वे नृतत्वशास्त्र के गंभीर अध्ययन में लगे हुए थे।

हम ऊपर बता चुके हैं कि भारतीय इतिहास के लेखक के रूप में कोशाम्बी ने उसे एक क्रांतिकारी मार्क्सवादी दिशा दी। उन्होंने भारतीय इतिहास के राष्ट्रवादी तथा साम्राज्यवादी स्कूलों के लेखकों को एकदम नकार दिया। वे उसे कुछ बड़े लोगों के दृष्टांतों का विवरण बनाए हुए थे। कोशाम्बी ने उसे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परिवर्तनों व विकास के आयामों के अध्ययन का रूप प्रदान किया। प्रो. ए.आई. वासम के अनुसार, 'ॲन इन्ट्रोडक्शन टु द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री' एक युग प्रवर्तक रचना है।...इसने दुनियाभर के हजारों इतिहास के छात्रों को इतिहास के अध्ययन की नई दृष्टि, नया प्रोत्साहन और नई प्रेरणा दी है।' प्रो. इरफान हबीब के अनुसार दक्षिण-पूर्व के इतिहास का कोई भी विद्यार्थी कोशाम्बी के विचारों का कितना भी विरोधी हो, पर उनके विचारों को नज़रअंदाज करने की गलती कदापि नहीं कर सकता। कोशाम्बी ने पहली बार इतिहास के अध्ययन में आधुनिक गणित, सांख्यिकी व सिक्कों के भार का तार्किक अध्ययन प्रस्तुत किया और इन माध्यमों से उन्होंने उनके कालनिर्धारण का जो कार्य किया, वह अभूतपूर्व था।

गणित संबंधी अनेक शोध-पत्रों के अतिरिक्त कभी अनेक पुस्तकें लिखीं हैं।

(डा. रणजीत द्वारा संपादित पुस्तक 'भारत के प्रख्याल नास्तिक' से साभार) ★★★

के प्रख्याल नास्तिक' से साभार) ★★★

भविष्यवाणी का मनोविज्ञान

संजीव खुदशाह
मो॰99770 82331

यदि ज्योतिष बोगस है तो फिर ज्योतिषी सही कैसे बता देते हैं। यह प्रश्न अधिकतर या जिनके बारे में किसी ज्योतिषी द्वारा कोई बात सही निकलने के कारण ज्योतिषी पर विश्वास करने वाले व्यक्तियों के मन में उठता है कि यह कैसे होता है। तो चलिए इसी बात को कुछ इस तरह से समझें कि स्वयं आप ही किसी ज्योतिषी के पास गए हैं। भविष्य जानने के लिए और आपने प्रश्न शुरू कर दिएः-

प्रश्न : मेरे बारे में कुछ बताइए।

वैसे तो इस प्रश्न का तात्पर्य भविष्य के बारे में बताने से ही होता है पर ज्योतिषी तो ठग है, जिन्हें अपना भविष्य भी नहीं पता, वह दूसरों का भविष्य कैसे बता सकते हैं। इसलिए वह आपके बारे में सामान्य बातों से भविष्यवाणी का शुभारम्भ करते हैं जैसे कि आप का स्वभाव बहुत अच्छा है या आपको बहुत क्रोध आता है। आप दोस्त बहुत बनाते हैं अथवा कम, आप तो सभी पसंद करते हैं, पर आपको कम ही लोग पसंद करते हैं। आपके काम होते होते रह जाते हैं, आपकी कोई सुनता ही नहीं, आपको समझना आसान नहीं है। आप सबकी मदद करते हैं इत्यादि बाते हैं जो ज्योतिषी कहता जाता है और आप उसकी हां में हां मिलाते जाते हैं। खुश होकर कि कितना ज्ञानी अन्तर्यामी ज्योतिषी है और साथ ही साथ अपने बारे में भी उगलते जाते हैं। कुछ बातों को आपने नकार भी दिया तो ज्योतिषी कह देंगे कि आपकी जन्म की तारीख समय सही नहीं लग रहे हैं। इस आधार पर आपसे कुछ पूछताछ होगी आपके भूतकाल की। आपके बारे में जानकारी निकलवाने के लिए एक बार वह मिल गई तो उसके बाद कुंडली भी सही और ज्योतिषी तो....!

प्रश्न : शिक्षा कैसी है/उच्च अध्ययन के योग हैं। कि नहीं/कोई रूकावट तो नहीं है/ कौन सा क्षेत्र अच्छा रहेगा-मैडिकल या इंजीनियरिंग में जा सकता है/योग हैं।

-हर माता-पिता बच्चों को अच्छी शिक्षा देते हैं/प्रयास करते हैं। बातचीत में आपके IQ का और विषय से संबंधित रूचि पता लग ही जाएगा। आपने पहले क्या पढ़ाई की है। अभी क्या करने की सोच रहे हैं। कोई परीक्षा दी थी। उत्तीर्ण हुए या नहीं क्या कमी रह गई। परिस्थिति आदि यह सब जानकारी आप स्वयं ही दे देते हैं। इस आधार पर आपकी योग्यता निश्चित हो जाती है। यह सब जानने के पश्चात आपको कुछ भी कह दिया जाएगा। 4 वर्ष से पहले कोई डिग्री पूर्ण नहीं होती। उसके पश्चात् आपको सफलता मिले या न मिले ज्योतिषी तो बहुत पीछे छूट गया।

प्रश्न : नौकरी मिलेगी कि नहीं?सरकारी मिलेगी या प्राईवेट?नौकरी करूंगा या व्यापार?किस क्षेत्र से संबंधित व्यापार सही रहेगा?

आपकी शिक्षा, रूचि से संबंधित जानकारी आप दे चुके हैं। शिक्षा के किस क्षेत्र में पढ़ाई की है। यह भी बता देते हैं। उस पर ही व्यक्ति का कार्यक्षेत्र निर्भर करता है। अब सब कुछ ज्योतिषी के सामने है। यह उसके स्वयं के IQ पर निर्भर करता हैं कि उसने आपको कितना पहचाना है (ठग है तो अनुभव के आधार पर यह काम मुश्किल नहीं होता) उसी आधार पर आपको सलाह भी मिल जाएगी। यदि आपमें योग्यता हुई तो प्राईवेट नौकरी या व्यापार पक्के, यदि नहीं तो सरकारी नौकरी-यह मिलने से रही।

प्रश्न : क्या मेरे पास धन/वाहन/मकान/जमीन आदि होंगे -तो कब?

इस सब की चाह किसे नहीं होती है पाने के लिए प्रयत्नशील भी रहता है। वैसे तो आपकी

आर्थिक स्थिति ज्योतिषी को पता ही है, फिर भी कहा जाता है कि आपके पास धन तो बहुत आता है, पर रुकता नहीं है। सामान्य सी बात है कि व्यक्ति की ज्यादातर कमाई घर के खर्च में ही चली जाती है। सामाजिक परिवेश के कारण अनावश्यक खर्च व्यक्ति खुद कर देते हैं। इसके अलावा भी अन्य बहुत से कारण भी होते हैं। यदि आप अमीर हुए अपने परिश्रम के कारण अथवा आप में बचत करने की प्रवृति भी है तो कोई समय बता दिया जाता है कि कब यह सब व्यक्ति के पास होगा और उस दिए गए समय तक नहीं भी कर पाए तो भी कोई विशेष नुकसान तो होने से रहा। व्यक्ति फिर किसी अन्य ज्योतिषी के पास जाएगा कि पहले वाले की भविष्यवाणी तो सत्य नहीं हुई।

प्रश्न : मैं विदेश जाऊंगा या नहीं/कब जाऊंगा/विदेश में बसने के योग हैं?

–अब जाहिर है कि विदेश वही व्यक्ति जा सकता है जिसके पास इसकी पूर्ति के लिए संसाधन भी उपलब्ध हों और वह अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयासरत भी होगा ही। अब इस एक प्रश्न में ही व्यक्ति ने बहुत सी छुपी हुई जानकारी ज्योतिषी को दे दी जैसे कि उसकी शिक्षा, धन, पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि फिर कोई समय बता दिया जाएगा तुक्का लग गया तो ठीक नहीं तो अगला ज्योतिषी जिंदाबाद।

प्रश्न : मेरा विवाह कब होगा/पत्नी कैसी मिलेगी/स्वभाव कैसा होगा/नौकरी वाली मिलेगी कि नहीं (स्त्री के लिए पत्नी के स्थान पर पति कर दें)

विवाह एक सामाजिक व्यवस्था है। जीवनसाथी सभी अच्छा ही चाहते हैं। सुंदर, सुशील, शिक्षित, स्वभाव अच्छा हो, दोष रहित हो (शूर्पनखा जैसी पत्नी और कंस जैसा पति किसको चाहिए) और हमारी परिस्थितियां कुछ ऐसी हैं कि पति/पत्नी दोनों कमाते हों तो बहुत अच्छा। कुछ बातें आप पहले बता चुके हैं और आपकी आयु, स्वभाव, व्यक्तिव, शारीरिक स्वरूप सब ज्योतिषी के सामने होता है। इसलिए जो बातें बताई जाएंगी, वह भविष्यवाणी न होकर सामान्य ज्ञान होता है। जैसे कि स्वभाव में भिन्नता रहेगी, क्रोध बहुत रहेगा। तुनकमिजाज सास बहु की कम बनेगी आदि, बाकी मंगल दोष विषकन्या दोष आदि अस्त्र तो हैं ही।

प्रश्न : मेरा भाग्य उदय कब होगा/अच्छा समय कब आएगा?

–यदि आप निक्कमे हैं, आलसी हैं और भाग्यवादी तो होंगे ही, तभी किसी ज्योतिषी के पास जाएंगे। इसलिए आपको विवाह के पश्चात होगा, यह उत्तर मिल सकता है। ज्यादातर को यही मिलता है या ज्योतिषी अनुमान लगाकर कि अभी इसकी हालत ऐसी है तो इतने समय तक तो कुछ कर ही लेगा, इस आधार पर कोई संख्या बता देगा– अब निकम्मा दामाद/पत्नी कौन चाहेगा। इसिलए ससुराल वाले कुछ न कुछ तो करेंगे ही और माता–पिता भी–शादी हो गई तो कुछ करना ही पड़ेगा जीवन यापन के लिए, उनके प्रयास से लीजिए हो गया भाग्य उदय और यदि आप में योग्यता हुई तो शादी से पहले। योग्य व्यक्ति की आवश्यकता कहां नहीं होती है नौकरी मिलते ही हो गया भाग्य उदय।

प्रश्न : स्वास्थ्य कैसा रहेगा?

इस प्रश्न में भी आप कुछ अहम जानकारी दे ही देते हैं जैसे कि मैं कभी बीमार हुआ था या स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, क्या कब कैसे हुआ था। यदि नहीं भी दी है तब भी ज्योतिषी कुछ सामान्य बाते ही कहेगा या सामान्य बीमारियां होने अथवा उनसे बचने की सलाह देता है और कोई समय बता देगा कि यह समय स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं रहेगा। बीमारियां बताकर तो आती नहीं है तो बताए गए उस समय पर भी बीमार हो सकते हैं। मौसम के प्रभाव के चलते कारण चाहे जो भी हो मामूली सर्दी जुकाम होने भी ज्योतिषी की भविष्यवाणी को सही मान लिया जाता है।

प्रश्न : *सन्तान कब होगी/योग कब बनेगा?*

–यह प्रश्न केवल वही व्यक्ति करेंगे, जिनको कोई सन्तान नहीं है। पहले व्यक्ति डाक्टर वैद्य हकीम आदि से इलाज करवा चुके होंगे। क्योंकि सन्तान न होने का कारण बायोलोजिकल होते हैं। इसलिए समस्या भी शारीरिक ही होती है। यदि समस्या

गंभीर नहीं है तो कुछ समय के इलाज से सन्तान भी हो ही जाती है। फिर चाहे ज्योतिषी द्वारा बताए गए उपाय-गोपाल सहस्त्रनाम या किसी उपाय के कारण हुई मान ली जाए और ज्योतिषी यह बात तो पूछते ही हैं कि डाक्टर ने क्या कहा, मैडिकल रिपोर्ट क्या कहती हैं आदि। अब यह बातें पता लगने के बाद यदि सन्तान प्रतिबंधक योग उत्पन्न हो जाए तो आश्चर्य नहीं।

प्रश्न : मेरी आयु कितनी है?

वैसे तो यह प्रश्न व्यक्ति पूछते नहीं हैं और ज्योतिषी प्रश्न का उत्तर देते भी नहीं हैं, पर यदि कोई पूछ ले तो उत्तर में पूर्ण आयु बता दी जाती है-70ए 80ए 90 वर्ष। अब यदि कोई बताए गए वर्ष पार कर गए तो ज्योतिष और ज्योतिषी दोनों की वाहवाही, अगर कोई उससे पहले ही भगवान को प्यारे हो जाएं तो...! आप स्वयं ही विचार करें।

अब व्यक्ति यहीं पर तो रुकेगा नहीं और भी सवाल करेगा जैसे-जैसे प्रश्न पूछता जाएगा। अपने बारे में जानकारी भी देता जाएगा। कौन सा ज्योतिषी होगा, जो कोई एक भविष्यवाणी सही न कर सके। इतनी जानकारी मिलने के बाद भी। इस प्रकार आप समझ सकते हैं कि ज्योतिषी द्वारा बताई गई बात भविष्यवाणी न होकर केवल टुल्लेबाजही होती है जिसे मनोवैज्ञानिक रूप से भविष्यवाणी समझ लिया जाता है।

Email:
sanjeevkhudshah@gmail.com

★★★

अंजू 5 लोगों को नई जिंदगी दे गई।

एक सड़क दुर्घटना के बाद ब्रेन डेड घोषित 18 साल की स्टूडेंट की किडनी, लीवर, और कोर्निया जरूरतमंद लोगों को डोनेट कर दिए गए। अंजू की मां का कहना है कि उनकी बेटी शायद दूसरों को जीवने देने के लिए ही पैदा हुई थी। वहतो अपना खाना और खिलौने तक दूसरों को दे देती थी और मरने से पहले अपने शरीर के अंग भी दूसरों दे गई। ,

बतादें कि चार दिन पहले(जून, 2016 में) अंजू यमुनानगर में सड़क हादसे का शिकार हुई थी। उसे इलाज के लिए चंडीगढ़ पी.जी.आई.अस्पताल में दाखिल करवाया गया। डाक्टरों ने अंजू को ब्रेन डेड घोषित कर दिया। डाक्टरों की तरफ से अंजू को ब्रेन डेड घोषित करने पर उसके माता-पिता सकते में आ गए और उन्होंने एकदम से कहा कि वह अंजू के अंगो को डोनेट करेंगे क्योंकि उसे दूसरों की मदद करने का शौक था। अंजू के माता-पिता ने कहा कि अंजू की आत्मा को तभी शांति मिलेगी जब उसके अंगों को दूसरे इस्तेमाल करेंगे। ये शब्द बोल करक अंजू के माता-पिता भावुक हो गए। (रिपोर्ट 9 जून 2016)

पृष्ठ 31 का शेष (शिक्षा का..)

शिक्षा क्षेत्र में इस प्रकार का वातावरण बहुत ही खतरनाक है। एक तरफ तो सरकार शिक्षा का अधिकार पर जोर दे रही है, दूसरी तरफ शिक्षा ग्रहण करने के लिए साधारण आदमी व उनके बच्चों को इतनी अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके विपरीत धनवान अभिभावकों के बच्चे अच्छी से अच्छी एवं उच्च्य शिक्षा पाने में सक्षम होते जा रहे हैं।

वर्तमान में हमारे समाज का ज्वलंत विषय है। इस बारे में हमारी सरकार को गंभीरता से कदम उठाने होंगे कि शिक्षा के इस व्यवसायीकरण पर नकेल कसी जा सके, ताकि कहीं ऐसा न हो कि भविष्य में आमजन साधारण व्यक्ति के बच्चे वित्तीय अक्षमता के कारण उच्च्य शिक्षा से वंचित रह जाएं।

धरती और चमत्कार

एस.एस.चव्हाण
मो. 9433131606

लगभग 450 करोड़ साल पहले पृथ्वी का निर्माण माना जाता है। 350 से 400 करोड़ साल पूर्व एक पेशीय सूक्ष्मजीव से धीरे-धीरे विविधतापूर्ण जीवसृष्टि का निर्माण हुआ है। इस नैसर्गिक चक्र में जो जीव संघर्ष के बाद बचे रहे वे उत्क्रांति में आगे आए हैं। 'एप' नाम के बंदर को मानव का पूर्वज माना जाता है। आदिमानव पहले जंगल में रहता था। भूकंप, ज्वालामुखी, आंधी-तूफान, भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक संकटों से उसे आश्चर्य और डर के परदे खोल दिए और आज का मानव 'मोबाईलमैन' बन गया। फिर भी धरती के चमत्कारों के बारे में उसे पता नहीं है। हमने विज्ञान की सृष्टि ली है पर आज भी हमारी दृष्टि आदिमानवों के समान ही है। सम्पति के लिए हत्या करना, भ्रष्टाचार करना, बलात्कार करना, आतंकवाद को बढ़ावा देकर अशांति फैलाना यह कार्य मानवता के खिलाफ है। समाजसेवी बाबा आमटे ने कहा था-'सच्चा युवक वही है, जो जातिवाद, अंधश्रद्धा एवं भ्रष्टाचार जैसी गलत नीतियों पर प्रहार करता है। ऐसी युवा पीढ़ी ही राष्ट्र निर्माण में जागृति ला सकती है।' स्वर्ग और नर्क यह सब काल्पनिक बातें हैं, क्योंकि हमारे पूर्वजों ने आजतक हमें एक भी पत्र नहीं भेजा या मिस्ड कॉल भी नहीं किया। अच्छे काम करके इस धरती को ही हम स्वर्ग बना सकते हैं। हमारी धरती चमत्कारी है, लेकिन उसे समझने की जरूरत है।

चमत्कार को नमस्कार करने की आदत समाज में प्रचलित है। किसी भी घटना के पीछे के रहस्य को जाने बिना उस पर आंख बंद करके विश्वास कर लेने को ही चमत्कार कहते हैं। संत तुकाराम, संत गाडगे बाबा, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, संत ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ आदि संतों ने अपने जीवन में कभी भी चमत्कार नहीं किए। चमत्कार के कारण चिंतनशीलता समाप्त होती है। ऐसा राष्ट्रसंत तुकडोजी कहते थे। कुछ संतों के मृत्यु के बाद कुछ लोगों ने उनके जीवनी (आत्मचरित्र) में स्वार्थी लोगों ने चमत्कार लिख दिए। पानी से यदि दीप जलते, तो हमें डीजल और पैट्रोल अरब देशों से मंगाने की क्या जरूरत है? दीवारें यदि चमत्कार से चलने लगी तो यातायात के साधनों की क्या जरूरत थी? चमत्कारों की चिकित्सा करना तर्कशीलता की पहचान है।

महाराष्ट्र को संतों की भूमि कहा जाता है, लेकिन इस भूमि में आज नकली संतों की बाढ़ सी आ गई है। असली संत कौन और नकली कौन इसमें भेद करना मुश्किल हो गया है। आजकल चमत्कारी चीजें बचने के विज्ञापन निजी चैनलों पर दिखाई देते हैं। गुप्त रोगों का शर्तिया इलाज करने वालों की ढेर सारी दुकानें दिल्ली में बिना रोक-टोक चल रही हैं। अंधविश्वास फैलाने के लिए महिलाओं का भी सहयोग लिया जा रहा है। कैसे सोना चाहिए, कया और कब खाना चाहिए, कपड़े कौन से पहनना चाहिए तथा घर में कौन सी चीज कहां पर रखने से स्वास्थ्य और धनलाभ हो सकता है। इस प्रकार से 24 घंटे आपको मुफ्त की सलाह देने वाले लोग अपना पाखंड चला रहे हैं। हमें मानसिक गुलाम बनाने का यह सिलसिला सदियों से चल रहा है।

'जब तक इस दुनिया में बेवकूफ लोग जिंदा है, तब तक धूर्त लोगों की चांदी ही चांदी है। प्रचार का कुड़-कचरा बिक रहा है, लेकिन विचारों के मोती किसी को दिखते नहीं। इस विडंबना पर कबीरजी कहते हैं-'चलती को गाड़ी कहे, बने दूध को खोया, रंगी को नारंगी कहे, देख कबीरा रोया।' जो व्यक्ति अज्ञान और भूल में पड़ा रहता है, उसे कष्ट भोगना पड़ता है। डा. अब्राहम कोवूर का वचन है-'जो अपने चमत्कारों की पड़ताल नहीं करने देता, वह बदमाश है, जिसमें चमत्कारों की पड़ताल करने की हिम्मत नहीं, वह बेवकूफ है और जो बगैर पड़ताल किए चमत्कारों पर विश्वास कर लेता है, वह मूर्ख है।' चमत्कार को नमस्कार करना छोड़ो और देश को बलवान बनाओ।

★★★

किश्त-15

ब्रह्माण्ड यात्रा

सौर मंडल से बाहर-घनघोर अंधकार

डा. अवतार सिंह ढींढसा
मोः 094634-89789

जब भी पृथ्वी द्वारा सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने की बात चलती है, तब तात्कालिक रूप में यह भी कहा जाता है कि सूर्य स्थिर है। यह दोनों के परस्पर सम्बंध में कहा जाता है, परन्तु यह बात सत्य नहीं है। सूर्य भी स्थिर नहीं है, बल्कि यह अपने समस्त परिवार-ग्रहों, उल्कापिण्ड, कूपर पट्टी, धूमकेतु, ऊर्ट बादल सभी को अपने साथ लेकर हमारी आकाशगंगा के इर्द-गिर्द एक घंटे में 70 हजार किलोमीटर तय करते हुए चक्कर लगा रहा है तथा पृथ्वी सूर्य के गिर्द एक घंटे में एक लाख आठ हजार किलोमीटर की दूरी तय कर रही है। हैरान न होना हमारी ग्लैक्सी आकाशगंगा भी एक घंटे में 8 लाख 28 हजार किलोमीटर की दूरी तय कर रही है, अर्थात् कुछ भी स्थिर नहीं है। अब आपकी जिज्ञासा का उत्तर मैं अवश्य दे दूं कि फिर हम इतनी तीव्र गति के साथ भाग रही पृथ्वी के ऊपर से गिर क्यों नहीं पड़ते? साथियो! वास्तव में हम सभी अर्थात् इस पृथ्वी पर जो भी जीव-जंतु, वनस्पति, भवन इत्यादि सभी कुछ पृथ्वी के केंद्र के साथ अपने गुरुत्वाकर्षण बल के कारण बंधे हुए हैं तथा यह बल हमें पृथ्वी से बाहर वायुमंडल की ओर गिरने नहीं देता।

दोस्तो, हमने अपने सौर परिवार के ऊर्ट बादल से बाहर की ओर यात्रा पर चलना है....वो देखो सूर्य की ओर पीठ करके....घनघोर अंधेरा चारों ओर तारे ही तारे!! हमारा सूर्य कहां पर गुम हो गया? वास्तव में यह गुम नहीं हुआ बल्कि दूरी के कारण इसका आकार इतना छोटा नजर आता है कि यह भी एक बड़े तारे जैसा ही नजर आता है। चारों ओर फैले घनघोर अंधकार का कारण भी यही है कि नजदीक कोई तारा नहीं है, जिसकी रोशनी हमारे पास पहुंच जाती। वैसे भी दिन जैसा प्रकाश होने के लिए वायु के कणों का होना आवश्यक है। अंतरिक्ष में वायु नहीं होती, बस एक पदार्थ होता है, जिसे 'ईथर' कहा जाता है। यहां पर किसी भी प्रकार की कोई आवाज नहीं है, क्योंकि आवाज को सुनने के लिए भी वायु जैसे माध्यम की आवश्यकता होती है, परन्तु अंतरिक्ष के इस स्थान को 'अंतरिक्ष माध्यम' भी कहा जाता है। अर्थात् एक तारे से दूसरे तारे के मध्य की दूरी के बीच का माध्यम।

अतः दोस्तो, हम अब अपने तारे सूर्य एवं नजदीक के दूसरे तारे 'एल्फा सेंटाऊरी' के 'अंतरिक्ष माध्यम' में घूम रहे हैं। यह तारा Centaurus तारा समूह/राशि का एक तारा है। Centaurus को यूनानी भाषा में एक ऐसा जीव माना गया है जिसका आध ा धड़ मानव का है और आधा घोड़े का। हम अब बढ़ रहे हैं, हमारे इस पड़ोसी तारे की ओर। दोस्तो, यह दूरी है लगभग 4.3 प्रकाश वर्ष। लो एक नई समस्या उत्पन्न हो गई कि दूरी तो हमेशा किलोमीटरों में होती है, फिर यह कैसी दूरी है जिसे वर्षो में नापा जाता है। हैरान न होना प्रायः हम भी दूरी को समय में ही नापते हैं। जब कोई यह पूछता है कि बठिंडा से चंडीगढ़ कितना दूर होगा तो हम प्रायः कह देते हैं कि बस द्वारा आपको लगभग 6 घंटे तो लग ही जाएंगे तथा कार के द्वारा 4 घंटे में पहुंच जाएंगे। बस यही तरीका अंतरिक्ष में दूरियों के लिए प्रयोग में लाया जाता है। अतः हमने दो समय बताए हैं एक बस के द्वारा और दूसरा कार द्वारा। समय की मात्रा भिन्न-भिन्न है क्योंकि कार एवं बस की गति अलग-अलग है।

दोस्तो, अब हम एक तारे से दूसरे तारे तक कार द्वारा तो जा नहीं सकते, परन्तु हां, प्रकाश

ही है जोकि एक तारे से दूसरे तारे तक पहुंच सकता है और इस प्रकार हम इस दूरी को प्रकाश की गति के द्वारा ही नाप सकते हैं। प्रकाश एक सैकिंड में तीन लाख किलोमीटर की दूरी तय करता है। इसी प्रकार हमारे मोबाईल फोन में से निकलती 'विद्युत-चुंबकीय तरंगे' भी एक सैकिंड में तीन लाख किलोमीटर की दूरी तय करती हैं। चलो अनुमान लगाएं कि हमारी पृथ्वी से 'एल्फा सेंटाऊरी' तारा कितनी दूरी पर है। मान लो कि उस तारे के निकट किसी पृथ्वी जैसे ग्रह पर हमारे कोई रिश्तेदार रहते हैं। हमारे फोन में से निकलती तरंगों ने एक सैकिंड में 3 लाख किलोमीटर का पथ तय करना है...तो हमारी ओर से भेजे गए घंटी के सिग्नल को वहां पहुंचने के लिए लगभग 4 वर्ष 3 मास 18 दिन लग जाएंगे। फिर वे फोन उठाएंगे और 'हैलो' कहेंगे... .उनकी हैलो को हम तक पहुंचने के लिए 4 वर्ष 3 मास 18 दिन का ही समय लेगी अर्थात् 4 वर्ष 3 मास 18 दिनों में तो उनकी हैलो ही हम तक पहुंचेगी। हम पूछेंगे....क्या हाल है? इसे उन तक पहुंचने के लिए भी लगभग 4 वर्ष 3 मास 18 दिन लगेंगे...वे कहेंगे कि ठीक ठाक हैं। इसको भी लगभग 4 वर्ष 3 मास 18 दिन लगेंगे। अतः इतनी सी बातचीत के लिए हमें 17 वर्ष एवं 6 मास का समय लगेगा। अतः दोस्तो, जैसे कार के द्वारा बठिंडा से चंडीगढ़ पहुंचने के लिए 4 घंटे का प्रयोग हमने बठिंडा से चंडीगढ़ के दरम्यान की दूरी बताने के लिए किया था। इसी प्रकार हम 17 वर्ष 6 मास के समय को पृथ्वी एवं 'एल्फा सेंटाऊरी' तारे के मध्य की दूरी को समझने के लिए प्रयोग किया है।

दोस्तो, आओ इसे एक अन्य तरीके से समझें। 'एल्फा सेंटाऊरी' तारे की रोशनी को हम तक पहुंचने के लिए लगभग 4 वर्ष 3 मास 18 दिन का समय लगता है अर्थात् इस तारे का प्रकाश जो हम आज देख रहे हैं वह वास्तव में 4 वर्ष 3 मास 18 दिन पूर्व का चला हुआ है तथा जो प्रकाश आज चला है, वह 4 वर्ष 3 मास 18 दिनों के पश्चात् हम तक पहुंचेगा। इस सब कुछ से ऐसे भी लगता है कि जो तारा हम आज देख रहे हैं वह वास्तव में 4 वर्ष 3 मास 18 दिन पुराना है अर्थात् हम आज अपना भूतकाल देख रहे हैं!!! ब्रह्मांड के रहस्यों के बारे में जानकारी हासिल करते करते हम हजारों एवं लाखों वर्ष पुराना भविष्य भी देखेंगे, बस यात्रा में शामिल रहना।

दोस्तो, ब्रह्मांड के बारे में ज्ञान हासिल करने के लिए सच में ही एक जागरूक दिमाग एवं चिंतन की आवश्यकता है। इस सभी कुछ के आप सामान्य रूप से स्वामी हैं। अतः ब्रह्मांड के बारे में ज्ञान को हासिल करते जाओ और ब्रह्म ज्ञानी बनते जाओ। फिर कोई भी तथाकथित ब्रह्म ज्ञानी तुम्हें मूर्ख बनाकर हराम की कमाई नहीं कर सकेगा।

दोस्तो, जरा सा इधर ध्यान दो। इस काले अंधकार में यह बादल की भांति क्या दिख रहा है? इसे अंतरिक्ष बादल या ब्रह्माण्डीय बादल अथवा नेबुला कहा जाता है। यह हाईड्रोजन, हीलियम एवं अंतरिक्षीय धूलकणों का बना हुआ है। इसमें 99 प्रतिशत गैसें एवं एक प्रतिशत अंतरिक्षीय धूलकण होते हैं। इसमें प्लाज़्मा भी होता है। प्लाज्मा से तात्पर्य है कि इसमें कुछ भाग ऐसा भी होता है, जिससे अभी परमाणुओं की रचना नहीं हुई अथवा ऐसा कह लें कि इस भाग में प्रोटोन, इलैक्ट्रोन एवं न्यूट्रोन अभी मुक्त रूप में हैं अथवा गैसों के आयन होते हैं। थोड़ा सा रूको, मैं कहीं यह बताना न भूल जाऊं कि यह कण कितने सघन होते हैं। इन कणों का घनत्व समझने के लिए मान लो कि एक ऐसा डिब्बा लो जिसकी लंबाई, चौड़ाई एवं ऊंचाई एक-एक मीटर हो और यह अंतरिक्षीय गैस उसमें भरी हो तो उस डिब्बे में इस अंतरिक्षीय गैस के 10 हजार से लेकर 10 लाख तक कण हो सकते हैं।

जब यह कण एवं गैसें गुरुत्वाकर्षण के कारण एक-दूसरे को खींचते हैं तो निकट आते समय ऊष्मा उत्पन्न होती है तथा ये बादल एक तारे को जन्म दे सकते हैं। अतः इस प्रकार तारे जन्म भी लेते हैं!!! परन्तु कुछ नेबुला (बादल) ऐसे भी होते हैं, जोकि किसी तारे की मृत्यु के पश्चात बचा हुआ मलबा ही होता है अर्थात् यह एक मृत तारे का बचा खुचा भाग भी हो सकता है। तात्पर्य यह है कि तारों की मृत्यु भी होती है!!! अर्थात् अंतरिक्ष में 'नेबुला से तारा' एवं 'तारों से नेबुला' वाला चक्कर चलता

रहता है। यह पुंज एवं ऊर्जा का खेल है न कि कोई दिव्य शक्ति यह सब कुछ करती है। (तारों के जन्म एवं मृत्यु के बारे में अगली कड़ी में विचार करेंगे)

साथियो, जैसे कि पहले बताया जा चुका है कि यदि हमारा अंतरिक्ष यान एक सैकिंड में 3 लाख किलोमीटर तय करता हो तो भी हमें निकट के तारे के पास पहुंचने के लिए 4 वर्ष 3 मास 18 दिन के लगभग लग जाएंगे। परन्तु 'नासा' द्वारा तैयार किया गया अंतरिक्ष यान अपनी एक सैकिंड में 12 किलोमीटर की गति से यहां पहुंचने में 40 हजार वर्ष लगा देगा। परन्तु हम तो अपने कल्पना रूपी यान में सवार हैं, चलो आगे बढ़ते हैं हमारे पड़ोसी तारे 'एल्फा सेंटाऊरी' की ओर। यह सूर्य से 1.1 गुना बड़ा है। यहां पर यह जरूर स्पष्ट कर लें कि धर्म ने अपनी अहंकारी सोच का दिखावा करते हुए अपनी पृथ्वी को समस्त आकाशीय वस्तुओं से बड़ा ही नहीं माना था बल्कि इसे ब्रह्माण्ड का केंद्र भी मान लिया था, परन्तु हमने देख लिया है कि हमारी पृथ्वी से बड़ा सूर्य है और हमारे सूर्य से भी बड़ा है हमारा पड़ोसी 'एल्फा सेंटाऊरी'। चलो दोस्तो आगे बढ़ें, यह क्या..... जिस तारे को हम एक समझते रहे ये तो जुड़वां तारे हैं। इनके नाम है, 'एल्फा सेंटाऊरी-ए' एवं 'एल्फा सेंटाऊरी-बी'। यह दोनों एक-दूसरे के गिर्द घूमते हैं। 'एल्फा सेंटाऊरी-ए' सूर्य से बड़ा है तथा पीले रंग की रंगत के साथ चमकता है जबकि 'एल्फा सेंटाऊरी-बी' सूर्य से छोटा है। यह संतरी रंग की रंगत के साथ मध्यम चमक से चमकता है। दोस्तो, यह दोनों तारे हमारे सूर्य से आयु में बड़े हैं, इनकी आयु लगभग 485 करोड़ वर्ष है जबकि हमारे सूर्य की आयु लगभग 446 करोड़ वर्ष है। इन जुड़वां तारों को चलो थोड़ा और निकट से परखें। कमाल है 'एल्फा सेंटाऊरी-बी' के गिर्द तो हमारी पृथ्वी जैसा एक अन्य ग्रह चक्कर लगा रहा मालूम होता है। इसकी जानकारी अक्तूबर 2012 में यूरोपियन दक्षिणी वेधशाला (दूरबीन) ने ढूंढी थी, परन्तु यह 'एल्फा सेंटाऊरी-बी' तारे के अत्यंत निकट चक्कर लगा रहा है। अतः अनुमान है कि अधिक गर्मी के कारण इस पर भी जीवन की संभावना नहीं लगती। एक अध्ययन के अनुसार यह 'जीवन संभावी क्षेत्र' में चक्कर लगा रहा है।

लो पहले हम 'जीवन संभावी क्षेत्र' के बारे में भी चर्चा कर लें यह किसी तारे के इर्द-गिर्द वह क्षेत्र होता है, जिसमें न अधिक गर्मी तथा न ही अधिक सर्दी होती है। अर्थात् तापमान जीवित रहने के लिए अनकूल होता है। हमारे सौर परिवार में पृथ्वी एवं मंगल ही दो ऐसे ग्रह हैं जोकि 'जीवन संभावी क्षेत्र' में आते हैं। पृथ्वी पर तो हम रह ही रहे हैं। बस मंगल पर जीवन की खोज जारी है परन्तु अभी तक इस पर जीवन के कोई प्रमाण नहीं मिले।

साथियो, थोड़ा और नजदीक से देखने पर इस तारा प्रणाली का ही एक अन्य बहुत ही मध्यम प्रकाश वाला साथी भी नज़र आ रहा है, इसका नाम 'प्रोग्जिमा सेंटाऊरी' है। वास्तव में यह हमारा सर्वाधिक निकट का पड़ोसी है। यह हमारी पृथ्वी से 4.24 प्रकाश वर्ष की दूरी पर है, परन्तु इसकी कम रोशनी के कारण इसे विज्ञानियों की ओर से महत्व नहीं मिल सका।

दोस्तो, ध्यान दो कि अब तक की हमारी यात्रा के दौरान न तो हमें अभी तक स्वर्ग-नरक ही मिले हैं और न ही 'एलियन्स'। अतः छोटे-मोटे अखबारों एवं टीवी की कहानियों की गप्पों से स्वयं को दूर रखा करो। हमारी यात्रा जारी है। देखेंगे कि तारों का जन्म, मृत्यु एवं इनके द्वारा बनाई हुई राशियां।

हिन्दी अनुवाद : बलवंत सिंह लैक्चरार

प्रतिक्रिया

मार्च 2016 के अंक में हंसराज रहबर के विषय में बहुत रोचक लेख पढ़ने को मिला। बहुत अच्छा होता यदि शेअरों में प्रयोग हुए उर्दू के कठिन शब्दों का हिन्दी अनुवाद कर दिया होता। -मास्टर च० (-9816857444)

पुनर्जन्म

एम.एन.राय

एम.एन.राय(1887–1954) को बीसवीं सदी का एक प्रमुख दार्शनिक माना जाता है। उनका जीवन बहुआयामी रहा है। 14 वर्ष की आयु में एक उग्रराष्ट्रवादी से शुरू होकर उनका सफर नवमानववादी चिंतन तक चलता है। देश-दुनिया में वे विभिन्न विषयों का अध्ययन करते रहे। 1920 में उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना की। मेक्सिको की सोशलिस्ट पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी में बदलने का श्रेय उन्हें ही जाता है जिसके वे प्रमख भी रहे। 1920 में वे मास्को में हुए कम्युनिस्ट इंटरनेशनल सम्मेलन में शामिल हुए और राष्ट्रीय आंदोलनों में बुर्जुआ वर्ग की भूमिका पर उनकी थीसिस लेनिन की थीसिस के साथ ही पूरक थीसिस के रूप में सम्मिलित की गई। 1927 में रॉय को कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल के प्रतिनिधि के रूप में चीन भेजा गया जहां पर चीन क्रांति पर उनके अध्ययन को महत्त्व दिया गया।

लेखन के रूप में उनके ग्रंथों की संख्या इतनी ज्यादा है कि अभी तक पूरी तरह से प्रकाशित भी नहीं हो पाई हैं। लगभग 30 किताबें अभी तक मिल पाई हैं। यहां प्रस्तुत लेख उनके अध्ययन की बारीकी को दर्शाता है कि दर्शन के शिखर को छूते हुए भी आम जीवन के घटनाक्रम पर उनकी नज़र कितनी पैनी रहती थी। यह लेख आज से लगभग 70 वर्ष पूर्व लिखा गया था जो आज भी प्रासंगिक होने कारण तर्कशील पथ के पाठकों के लिए प्रस्तुत है

-संपादक मण्डल।

पिछले आंक का शेषः

पहले यह देखना है कि अमर आत्मा के सिद्धांत में कोई सैद्धांतिक संगति भी है ? उसके बाद ही पुनर्जन्म को प्रयोग-सिद्ध तरीके से साबित करने की इजाजत दी जा सकती है, क्योंकि आत्मा की अमरता का विश्वास ही इस सिद्धांत की जननी है, तो इस विश्वास के पीछे भावनाओं का सख्ती से परीक्षण किया जाना चाहिए। विज्ञान इस विश्वास को चुनौती देता है ओर उसकी आधारहीनता को उजागर करता है। सबसे पहले धर्मगत आत्मा के वजूद को साबित करना पड़ेगा। तब उसकी अमरता ओर पुनर्जन्म की बात उठानी उचित होगी। हम यह मान कर चलें कि शांति देवी की कहानी सही है और प्रयोग सिद्ध है तो भी आत्मा की अमरता सिद्ध नहीं होती। अगर कुछ सिद्ध होता है तो इतना ही कि स्मरण शक्ति मृत्यु के बाद बची रहती है। मगर यह बहुत ही भ्रामक-कथन है और खासकर आत्मवाद के सिद्धांत के लिए बहुत ही खतरनाक चीज है। क्योंकि याददाश्त एक जैविक (बायोलोजिकल) क्रिया है। यह दिमाग में एकत्र होती रहती है और मृत्यु-परान्त खत्म हो जाती है। इससे पता चल जाता है कि याददाश्त निर्भर करती है शारीरिक तंत्र (दिमाग) पर, उसकी सामान्य स्थिति पर। और हर शारीरिक रचना स्थूल होती है। दिमाग एक जीवित और चेतन पदार्थ-पिण्ड है। जिसका रासायनिक परीक्षण हो सकता है। किसी ने आज तक अशरीर दिमाग की बात नहीं सोची है और शरीर रचना शास्त्र के अनुसार ऐसा कहना बेवकूफी की बात भी होगी। अगर याददाश्त बतौर आत्मा के मृत्यु के बाद बची रहती है, तो फिर आत्मा के बारे में क्या कहा जाएगा, क्योंकि वह स्थूलता से युक्त है। शारीरिक गुण मौजूद होने से आत्मा का स्थूल होना अनिवार्य हो जाएगा, लेकिन वह एक अशरीर वस्तु भी कही गई है। उसी सिद्धांतानुसार उसका पुनर्जन्म भी संभव है। आत्मा और शरीर में कोई साम्य नहीं है। वह शरीर के अंदर रहती है पर शारीरिक क्रिया-कलापों से, बतौर एक मूकदृष्टा के, बेदाग रहती है। इसलिए वह शरीर के साथ नहीं मरती है। वह शरीर को उसी तरह छोड़ देती है, जैसे लोग पुराने कपड़े उतार कर फैंक देते हैं और दूसरे शरीर में प्रविष्ट होने के लिए चली जाती है। मगर हम देखते हैं कि

पुराने कपड़े इससे चिपके रहते हैं। यह उन्हें एकदम नहीं फैंक पाती, क्योंकि अगर वह ऐसा करती तो फिर याददाश्त गायब हो जाती। बहरहाल पुराने कपड़ों की गंध इसमें जरूर आती रहती है और इससे उसका खालिसपन नष्ट हो जाता है। कोई आदमी उस वस्तु से विलग नहीं हो सकता है यदि उसकी याददाश्त उसके ऊपर इतने जोरों से हावी हो।

इस प्रकार पुनर्जन्म संबंधी वैज्ञानिक साक्ष्य आत्म सिद्धांत का ही सफाया कर देता है। आत्मा का जो अशरीर स्वरूप तसव्वुर किया गया है वह उसे साबित करने के लिए ही उस गुण से युक्त बताते हैं, जिसे सिद्धांततः उसे नहीं रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में पुनर्जन्म को वैज्ञानिक पद्धति से साबित करने के लिए हम अशरीर आत्मा को असिद्ध करने में ही सफल होते हैं। यह एक बड़ी ही अटपटी बात है-जैसे कोई वही डाल काटे, जिस पर खुद बैठा हो।

आत्मवाद के मानने वालों ने पुनर्जन्म का आधार सूक्ष्म शरीर माना है। डा. राधाकृष्णन् ने कहा है-'हमारे पूर्वज बड़े साहसी थे'। उन्होंने महसूस किया कि पुनर्जन्म में क्या-क्या तथ्य शामिल हैं और आत्मा को उसी तौर पर मोड़ दिया। पूर्वजों द्वारा मान्य आत्मा अशरीर नहीं है। यह अंगूठे के बराबर होती है। इस प्रकार के तमाम पुराने विचार उपनिषदों में खूब विस्तार के साथ दिए हुए हैं।

पूर्वज साहसी हो सकते हैं, क्योंकि तब तक विज्ञान उनके कथन को चुनौती देने के लिए अवतरित नहीं हुआ था। वे कथन और उड़ानें व्यर्थ नहीं थी। उनका एक उद्देश्य था-सांसारिक उद्देश्य। हमारे पुरखे राजाओं के लिए कानूनों की नींव डाल रहे थे। जिसके लिए लोकोत्तर अनुमोदन जरूरी था। केवल इसीलिए वह सिद्धांत आविष्कृत हुए थे और जंगली जमाने के अंधविश्वास इस्तेमाल किए गए थे।

पुनर्जन्म में विश्वास इसलिए जगाया गया था कि कर्म सिद्धांत को मान्यता प्राप्त हो सके। इस सबका उद्देश्य था कि तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रहे और हर आदमी अपने दिए हुए स्थान पर बिना चूं-चपड़ के कार्यरत रहे।

विवेकहीनता को विवेकपूर्ण बनाना बेकार की कसरत है। विश्वास ऐसी चीज है जो वैज्ञानिक तौर पर साबित नहीं हो सकता। विश्वास और आस्था सबूत के ऊपर है।

जो पुनर्जन्म होता है, जो मृत्यु के बाद बचा रहता है, वह अशरीर आत्मा नहीं है, बल्कि सूक्ष्म शरीर है। पुनर्जन्म सिद्धांत मानता है कि एक सूक्ष्म शरीर मृत्यु के बाद शेष रह जाता है। अगर यह मान लिया जाए तो पुर्वजन्म की याददाश्त का सिद्धांत कुछ सही उतर सकता है। मगर ऐसा करने पर तुम खुद ही शत्रु की भूमि पर उतर आते हो जहां से बचना की कोई तरकीब नहीं। तुम जो कथन पेश करते हो वह शर्तिया वैज्ञानिक है। और इसे अनुभवयुक्त कसौटी पर पर निखारा जा सकता है। अगर मृत्यु के बाद बचे रहने वाली चीज शरीरयुक्त है तो अगले जन्म में उसका क्या होता है। यह पता लगाना तुम्हारा पहला काम होगा।

आदमी की मृत्यु के बाद उन तथ्यों, जिनसे वह बना है, खात्मा नहीं हो जाता, बल्कि उनका रासायनिक परिवर्तन हो जाता है। शरीर संरचना संबंधी तत्वों का ह्रास हो जाने की स्थिति को मृत्यु कहते हैं। लेकिन सूक्ष्म शरीर के पक्षधरों की मान्यता है कि मृत्यु के बाद पदार्थीय संगठन शेष रह जाता है। इसमें कोई सार्थकता नहीं, क्योंकि मृत्यु पदार्थीय संगठन की होती है। पदार्थ इस प्रक्रिया में शामिल नहीं है। शेष रह जाने के माने हैं उस तत्व की अविरलता कायम रखना जिस पर इस प्रक्रिया में प्रहार होता है। शरीर के मरने की प्रक्रिया पूरी बारीकी से साथ देखी जा सकती है। बल्कि यह प्रक्रिया पहले से ही सर्वविदित है। इसे क्लीनिक (कक्ष) में विस्तार से देखा जा सकता है। कहीं भी ऐसा साक्ष्य नहीं मिलता है जिनसे जाना जा सके कि इस प्रक्रिया के किसी स्तर पर सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर को छोड़कर निकल जाता हो, जो जीवनभर के अनुभव और याददाश्त अपने में संजोये हो, क्योंकि यह सूक्ष्म शरीर चाहे, जिनता भी सूक्ष्म क्यों न हो, भौतिक और रासायनिक गुणों से युक्त होगा और वह विज्ञान की निगाह से बच नहीं सकता।

सूक्ष्म शरीर का दकियानूसी सिद्धांत अब किसी काम का नहीं रहा है, क्योंकि आज के जमाने में शरीर रचना-शास्त्री मृत्यु से संबंधित रहस्य के बहुत भीतर घुस चुके हैं। यह सिद्धांत उस युग में अपनी विश्वसनीयता रखता था, जब शरीर रचना और जीवन के विषय में महान अंधकार और अज्ञानता फैली हुई थी, लेकिन बिना सूक्ष्म शरीर को मानकर चले पुनर्जन्म साबित भी नहीं हो सकता। वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार शांति देवी की तरह की कहानियां जितनी वैज्ञानिक ढंग से कही गई हों, चलने वाली नही है। एक अशरीर आत्मा स्मरण शक्ति नहीं रख सकती है और स्थूल संगठन (फिजिकल आर्गेनाईजेशन) जो स्मरण शक्ति ढो सकने में समर्थ हो, मृत्यु के बाद शेष नहीं बच सकता। एक तरफ तुम्हारा केस तुम्हारे ही तर्क से असिद्ध हो जाता है और दूसरी ओर तुम्हारे कथन का वैज्ञानिक परीक्षण हो सके, ये दोनों बातें भ्रामक हैं। इसलिए इन पर आगे विचार करने की जरूरत नहीं है।

पूरी प्रक्रिया तार्किक तौर पर असंगत और भ्रामक है, क्योंकि इसका आधार खुद वही कथन है, जो साबित किया जाना है। अगर मृत्युपरान्त का (शेष) अकाट्य तथ्यों से साबित होता है, तो आत्मा का वजूद और उसकी अमरता अपने आप सिद्ध हो जाती है। पहले शेष रहने की संभावना को मानकर चलें। अगर उक्त मान्यता न होती तो इस तरह की कहानियां पूरे संदेह के साथ देखी जाती। उनकी विश्वसनीयता प्रत्यक्ष रूप से वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर शक पैदा करती। फिर ऐसी कहानियों के लिए यह नहीं कहा जा सकता कि वह मान्य सिद्धांतों को बल प्रदान करती है। सो इस किस्म की जांच के लिए ऐसी सख्ती की जरूरत है, जिससे वैज्ञानिक वस्तुस्थिति प्रकट हो सके। उसके लिए पूर्णतया अलग प्रणाली होगी। अभी हाल के मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों से पता चलता है कि साक्ष्यों का एकत्रीकरण कोई आसान काम नहीं। सुबूतों की विश्वसनीयता विभिन्न बातों पर निर्भर करती है। पूर्वाग्रह उनमें से मुख्य है। कुछ लोग ऐसी चीजें देखते हैं जो अन्य पूर्वाग्रही व्यक्ति द्वारा नहीं देखी जाती। दूसरी ओर भावनात्मक और शारीरिक रूप से आंदोलित आदमी साफ रखी चीज देखने में असफल रहते हैं। बहुत से लोग प्रत्यक्ष घटनाओं की असलियत से वाकिफ नहीं हो पाते। केवल कुछ माहिर जानकार और तीक्ष्ण बुद्धि लोग ही असल घटनाओं को सही ढंग से समझ पाते हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधान की पूर्व शर्त यह है कि हम जानें कि जिन्हें हम सत्य मानते हैं वह सत्य है भी। बिना इस प्रारंभिक ज्ञान के हवा में महल बनाना बेकार है। वे जरा-सी बुद्धि के इस्तेमाल से धराशायी हो जाएंगे। एक बार कल्पनाओं को सत्य मान लिया गया, तो फिर आगे के सभी तथ्य सही मालूम पड़ने लगते हैं। बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि उन्होंने प्रेत देखे हैं। वे उसे देखने का वास्तविक अनुभव भी बतलाते हैं। मगर उससे यह नहीं साबित होता कि उन्होंने किसी स्थूल तथ्य का अनुभव किया है। फिर भी यह लोग तमाम बुद्धिमान लोगों को प्रेत देखने का विश्वास दिलाने में सफल होते हैं। किसी चीज को सोचने को ही आंखों से देखा जाना मानना तभी तक सत्य है, जब तक सोचने की प्रक्रिया जारी है। इसलिए सोचना सत्य हो सकता है, मगर किसी वास्तविकता का सबूत नहीं हो सकता।

अप्रायोगिक मनोविज्ञान को लें। कोई आदमी जिसने कहानियां पढ़ी हैं, जानता है कि देखना (आबजर्व करना) कोई आसान काम नहीं है। एक चीज का देखना अलग चीज है और आबजर्व करना अलग।

श्रीमती शांति देवी की यात्रा कहानी पर भरोसा इसलिए नहीं किया जा सकता कि उसकी तसदीक नहीं हो सकती। वह वैज्ञानिक कसौटी पर खरी नहीं उतरती। कमेटी के ईमानदार गवाह विश्वनीय है। उनके कथन में मामूली सत्य और बाकी झूठ है। ऐसे साक्ष्यों से जो निष्कर्ष निकलता है, वह वैज्ञानिक तौर पर सही नहीं हो सकता।

मथुरा वालों को पहले से मालूम था कि कमेटी वाले आ रहे हैं। वे लोग जो पति और पितामह बताए गए उन्हें पहले से इस कहानी की इतिलाह थी, जिसके वे सम्मानित पात्र बने।

कमेटी का स्टेशन पर उस भीड़ ने स्वागत

किया जो चमत्कार देखने को उत्सुक थी। इसलिए वातावरण बहुत ही भावनात्मक उत्तेजना से परिपूर्ण था। उसमें किसी किस्म की आलोचना बर्दाश्त नहीं की जा सकती थी। उस वातावरण में जिसमें वह कहानी प्रमाणित की गयी, पूर्वाग्रह सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु था। यह कैसे संभव है कि उसमें आने वाले, पति, पितामह ने जब तक उसने खुद नहीं चुना, उसका स्वागत किया। माना कि उन्होंने ऐसा न करने की सावधानी बरती थी, जोकि इस किस्म की सावधानी बरतने की कोई सूचना नहीं है, फिर भी उस भीड़ की भावनाओं को कंट्रोल करना असंभव था। यह बात सोची जा सकती है कि उनके पहुंचते ही लोगों ने कहना शुरू किया हो, वह देखो तुम्हारे पति आ रहे हैं, या पुत्र आ रहा है। इस तरह की बातें लोग अपने-आप करने लगते हैं। उसमें उनकी मंशा यह नहीं रहती कि-लड़की को इशारा मिल जाए। भीड़ को इस कहानी में कोई शक नहीं था। लड़की शायद अपने रिश्तेदारों को न पहचान पाए-यह बात किसी के दिल में न थी। इसलिए उसकी मदद में कोई क्यों आता। माना कि कमेटी वाले शक्की थे, मगर वे लड़की की हरकतों पर ध्यान केंद्रित किए हुए थे। और इस तरह भीड़ का रुख देखने में असफल रहे हों। मौजूद जनता चूंकि कहानी से वाकिफ थी। पहले से सोच रही होगी कि उसके पिछले जन्म के कौन रिश्तेदार होंगे। उनके लिए यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि केवल पाक और पवित्र लोग ही लड़की के पिता, पति और पितामह हो सकते हैं। बहुत से ऐसे पवित्र लोगों ने अपने को वैसा सोचा भी होगा। बहुत मुमकिन है उनमें से कुछ लोगों ने अपने को पहले से ऐलान कर दिया हो। खैर, जब तक यह साबित न हो जाए कि इस सिलसिले में सभी सावधानियां बरती गयी थी, यह पहचान यकीन लायक नहीं है।

वास्तविकता यह है कि वैज्ञानिक खोज की सभी पूर्व शर्तों का अभाव था। प्रमाणित होने की विश्वनीयता, उसकी खोज प्रणाली और प्रक्रिया दोनों में प्रदर्शित होनी चाहिए। जांच की कार्यवाही सम्पूर्ण रूप से पूर्वाग्रही थी। क्योंकि कमेटी के मथुरा पहुंचने से पहले ही वहां सबको कहानी मालूम थी। पूर्वसूचना के होने के कारण यह स्वाभाविक है कि पिछले रिश्तेदार गर्व के साथ अपने को उपस्थिति करने के लिए स्टेशन पर आए हों। ऐसे वातावरण में कोई डींग मार सकता है कि लड़की को कोई इशारा नहीं था, उसने स्वाभाविक ढंग से व्यवहार किया। मगर सबसे प्रभावी तरीका यह होता कि मथुरा के लोगों को इस कहानी से बिल्कुल अनभिज्ञ रखा जाता। यह सावधानी नहीं बरती गई। यह किया भी नहीं जा सकता था, क्योंकि कहानी पब्लिक प्रोपर्टी बन चुकी थी।

इसी प्रकार दूसरी घटनाएं भी उसी माहौल से ओतप्रोत हैं, उसी के पक्ष में हैं। उमड़ती भीड़ जो पहले से यह मकान जानती थी, ने भी लड़की को कमेटी वालों को दिशा-निर्देश देने में मदद की। फिर उस घर में, कौन गारंटी ले सकता है कि लड़की के कार्य-कलाप उसके उत्सुक रिश्तेदारों द्वारा न थोपे गए हों। उसके पिछले जन्म की घटनाओं की याद दिलाना, उन जगहों को बताना, जहां सोने का कमरा था या नहाने का घाट था, जहां पर वह अपने कपड़े रखती थी वगैरह-वगैरह। और लड़की को यह सब याद आ जाता होगा। कोई भी जान-बूझ कर कहानी नहीं गढ़ रहा होगा। सभी अपने-अपने विश्वास में ईमानदार होंगे। इस सहज विश्वसनीयता के वातावरण में कल्पना भी आसानी से गौरवशाली सत्य बन जाती है। वहां पर मौजूद प्रत्येक व्यक्ति सत्य का प्रदर्शन देखना चाहता होगा। उसमें जरा भी शक-सुबहा करने का सवाल ही नहीं था। मान भी लें कि कमेटी वाले अपवाद थे, फिर भी वे वातावरण के शिकार तो थे ही। चूंकि जरूरी सावधानियां नहीं बरती गई थी, इसलिए कमेटी स्थिति को संभाल नहीं सकती थी। कमेटी का यह कहना बड़ा बोल होगा कि पूरी जांच के बीच ऐसा कुछ भी घटित नहीं हुआ जिसने लड़की के व्यवहार को प्रभावित किया हो। जहां तक मैं जानता हूं कमेटी का एक भी सदस्य आत्मा और पुनर्जन्म के सिद्धांत में द्विविधा नहीं रखता था-ये तथ्य मात्र ही उन सबको अयोग्य साबित करने के लिए काफी है।

आस्था को किसी टेस्ट की कसौटी पर कसा नहीं जा सकता। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। आस्था का इम्तिहान लेने की इच्छा होना ही यह

साबित करता है कि उसकी आस्था टूट चुकी है। जब तक यह विश्वास होता है कि एक चीज सत्य है, तुम उसको साबित करने की जरूरत नहीं समझतें अगर तुम ऐसा करते हो तो उन लोगों को संतुष्ट करने के लिए करते हो, जो तुम्हारी आस्था में विश्वास नहीं रखते। वास्तव में यह जांच नहीं थी, बल्कि तथ्यों को प्रमाणित करना था। जांच की पूर्व शर्त ही यह है उसमें संदेह पैदा हो। वहां पर पुनर्जन्म का मुद्दा था। उसे प्रमाणित करना था, ताकि उस सिद्धांत के समर्थन में इंद्रिय साक्ष्य दिखाए जा सकें मनोविज्ञान और प्रक्रियात्मक तरीकों को छोड़ भी दें, तो दूसरे और भी कारण है जिनसे शक पैदा होता है कि जांच के लिए जरूरी पाबंदियां नहीं बरती गयी। विभिन्न रिपोर्टस में भी तमाम अन्तरविरोध हैं। कमेटी रिपोर्ट इन विरोधों का जिक्र नहीं करती, लेकिन अखबारनवीसों ने उनका जिक्र किया है। बजाए इसके कि उस अनपढ़ बच्ची के कथन की विश्वसनीयता की जांच की जाती, पूरे वाकये को चमत्कार का दर्जा दिया गया। बजाय उसके कि उसकी पुनर्जन्म में आस्था थी, जो और पक्की हुई, लेकिन किसी आस्था में विश्वास करने से उसका सत्य साबित नहीं होता। कमेटी की रिपोर्ट साक्ष्य के लिहाज से बेकार है। उसे आस्था और विश्वास का घोषणा पत्र कहा जा सकता है। इस प्रकार इस बकवास को हम विज्ञान को चुनौती देना कहें तो हास्यास्पद होगा। चुनौती देने वालों ने खेल के मामूली नियमों का भी पालन नहीं किया। यह मजेदार बात है कि अब भी चालाक आदमी उस वैज्ञानिक आधार पर बेकार है। क्योंकि यह आंकड़े किसी प्रकार भी प्रमाणित होने योग्य नहीं। और ब किसी वैज्ञानिक जांच के लिए जरूरी शर्तें जुटाने में बहुत देर हो चुकी है। ये शर्तें पुनर्जन्म की दूसरी कहानी में लागू की जानी चाहिए। जिसमें पहली शर्त यह हो कि पाबंद शर्तें और कन्ट्रोल्ड कन्डीशंस की तैयारी के पूर्व कहानी को बिल्कुल फैलने न दिया जाए।

इस एक कहानी ने तमाम उत्तेजना फैला दी, जबकि यह कोई मात्र ऐसी कहानी नहीं है। लोगों को अपनी पुरानी घटनाओं को याद कर बताने की कहानियां अक्सर इस देश में सुनायी पड़ती हैं। यहां तक कि शिक्षित लोगों में यह बात आम है। लेकिन इसके पहले इस प्रकार की संगठित तौर पर प्रमाणित करने की घटना कभी नहीं घटी। कहानी दूसरी कहानियों से जुदा भी नहीं दिखाई पड़ती है। न ही इसमें कोई स्पष्ट और अंतिम साक्ष्य दिया गया जो पुनर्जन्म के विश्वास में वृद्धि कर सके। जांच का दायरा भी नहीं बढ़ाया गया। केस ऐसे आंकड़ों पर आधारित किया गया, जिसकी आलोचनाएं टेस्ट पर खरी नहीं उतरी और उसी कहानी से चिपके रहे जो अब दुबारा प्रमाणित नहीं हो सकती।

जो जरा भी वैज्ञानिक दृष्टि रखता है वह जानता है कि इस प्रकार की कहानियां अंधविश्वास के नाबदानों में पैदा होती हैं। वे किसी भी कठोर वैज्ञानिक जांच का आधार नहीं पेश करती। वैज्ञानिक सिद्धांत आबजर्वेशन और प्रयोगसिद्ध अनुभवों पर आधारित होते हैं। अंधविश्वासजनित उदाहरण इन वैज्ञानिक सिद्धांतों को उलट नहीं सकते। क्योंकि वे सिद्धांत के क्रमानुसार निरीक्षण, परीक्षण, निरूपण और कठिन प्रयोगों द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। वैज्ञानिक जांच, अनुमानित प्रतिज्ञा (हाइपोथिसिस) से प्रारंभ होती है। इन कहानियों के यथार्थ को लेकर कोई वैज्ञानिक जांच नहीं हो सकती। उसके लिए एक कदम पीछे की ओर जाना जरूरी है। जैसे कोई व्यक्ति अभी तक अनजानी प्रक्रिया के बारे में ऐलान करें-'आग के ऊपर पानी जम जाता है, आदमी तीन टांगों का होता है, पत्थर पानी पर तैरता है। अगर ये चीजें प्रमाणित की गई-वैज्ञानिक सिद्धांत बेकार हो जाएंगे। इन सभी बातों के लिए पहली चीज जो करनी है, वह यह कि खोज करने वाले की विश्वसनीयता तय करनी होगी। यहां पर उसके नैतिक व्यक्तित्व की नहीं, बल्कि उसकी बौद्धिक योग्यता और उसकी मनोवैज्ञानिक अवस्था की जांच जरूरी है। उसने ऐसी खोज कैसे की। कहां पर उसने ऐसी प्रक्रिया का वर्णन देखा। क्या वह पहले से वैज्ञानिक सिद्धांत से परिचित था और उसका इस सिद्धांत के प्रति मनोभाव (ऐटीट्यूड) क्या था। क्या उसने वास्तव में वर्णित प्रक्रिया खुद देखी या वह सुहही-सुनायी बात दोहरा रहा है। क्या वह ऐसी सूचनाओं की आलोचनात्मक व्याख्या करने की योग्यता रखता है, क्या वह किसी जुग का

शिकार तो नहीं हो जाता। ये कुछ ऐसे सवाल हैं, जो पहले इसके की उस खोज पर गंभीरता से विचार किया जाए और उसका प्रमाणीकरण तथ्यपरक माना जाए, संतोषजक रूप से उत्तरित होने चाहिएं।

पुनर्जन्म संबंधी कहानियां की- इससे पहले कि उन्हें वैज्ञानिक जांच का आधार बनाया जाए, ऐसी ही जांच होनी चाहिए। शांति देवी की कहानी इस तरह नहीं जांची गई।

कोई आदमी पूछ सकता है कि हम ऐसा क्यों सोचे कि एक छोटी-सी बच्ची ने इतनी बड़ी कहानी बना डाली, लेकिन इसको दूसरी तरह से भी पूछा जा सकता है, गुस्से में आकर नहीं, बल्कि पूरी सदाशयता के साथ कि एक बच्ची द्वारा गढ़ी हुई कहानी, जोकि अंधविश्वासों के वातावरण में पली हो, ज्यों की त्यों सही क्यों मान ली गयी? क्या यह नहीं सोचा जा सकता है कि ऐसी कहानी दूसरों के द्वारा गढ़ी गयी हो और उस लड़की के मुंह से कहला दी गयी हो। मनघड़ंत बात जानबूझ कर की जा सकती है, फिर भी यह मनघड़ंत ही होगी। मैं नहीं कहता कि वह मनघड़ंत थी, पर सुझाव है कि ऐसी कहानियां मात्र मनघड़ंत ही होती है।

कहानी की उत्पत्ति कैसे हुई। लड़की के पितामह और दूसरे लोग, जो पहले से उसे जानने का दावा करते थे, पहले से पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, जब ऐसा है तो कहानी लड़की की कुछ छिटपुट बातों को आधार मानकर बनायी गयी होगी। इसलिए उन लोगों से, जिनके द्वारा कहानी पब्लिक में पहुंची, विस्तृत जिरह की जानी चाहिए थी। इस तरह से कहानी की काल्पनिक उड़ान उजागर की गयी होती तो इसके प्रमाणीकरण के बारे में जो बातें उछली वे न उछली होती। कहानी की उत्पत्ति चाहे जैसे हुई हो, उससे संबंधित व्यक्तियों का पुनर्जन्म में अटूट विश्वास था। यह तथ्य मात्र इस बात को मानने के लिए काफी है कि जब तक कहानी पब्लिक मे पहुंची, उसमें तमाम काल्पनिक उड़ाने जोड़ दी गई। जो कहानी पब्लिक में पहुंची वह असल कहानी से, जो लड़की ने बतायी थी, बहुत भिन्न हो सकती है। अगर उस लड़की ने वाकई कोई कहानी कही हो तो वह सर्वविदित है। अपवादशुदा कहानियां प्रचार के जरिए रंग से बदरंग कर दी जाती हैं।

लड़की के होने वाले मथुरा निवासी रिश्तेदारों ने जब तक इस कहानी को नहीं सुना, वे लड़की की फैमिली से अनभिज्ञ थे। यह मुद्दा नहीं छुआ गया। यह इसलिए हुआ कि किसी ने भी कहानी की शुरूआत की जांच की जरूरत नहीं समझी।

लड़की गर्भ में आने के समय उसकी मां ने मथुरा की एक स्त्री की मृत्यु के बारे में सुना। अगर यह मानकर चलें कि उनका आपस में परिचय था, तब तो इस किस्म के विचार और भी आसान हैं, खास करके जब मृत्यु लड़की के जन्म दिन पर हुई हो। एक परिचित को मृत्यु के बाद याद करके सोचा करती होगी कि मृत स्त्री ने उसकी लड़की के रूप में जन्म लिया है। विचार और भावनाएं मां के गर्भधारण के समय दिमाग में बैठ जाती है। बच्चा उन विचारों को विरासत में पा सकता है। यही वजह है कि उन बच्चों में, जो प्यार दुलार के वातावरण में पैदा होते हैं और वे बच्चे, जो प्रजनन मशीनरी से पैदा होते हैं, मनोवैज्ञानिक अन्तर स्पष्ट होते हैं। बाद में मां इस संभावना की सोचती रही होगी कि मृत औरत उसकी लड़की के रूप में जन्म लेगी और उस किस्म के विचार वार्तालाप में लायी होगी। मां के इस किस्म के व्यवहार से संभव है कि लड़की पहले से सोचे हुए विचारों के साथ पैदा हुई हो और मां से उन विचारों को विरासत में लिया हो और उसके अवचेतन में पूर्वजन्म की स्मृति कायम रही हो।

इस कहानी ने जनता को इतना ज्यादा आंदोलित किया और लड़की इतनी ज्यादा पूज्य बन गयी कि पटियाला के महाराजा ने उसका स्वागत किया। यहां पर मुझे भारतीय संस्कृति के ठेकेदारों की बौद्धिक क्षमता पर तरस आता है। कितने ही गंभीर सवाल हैं जिनका पुनर्जन्म में आस्था रखने वालों को, संतोषजनक उत्तर पाने में कठिनाई होगी। हर आदमी अपने पिछले जन्म की घटनाएं क्यों याद नहीं रखता। इस सवाल का संतोषजनक उत्तर न पाने से किसी एक व्यक्ति से पिछले जन्म की स्मरण शक्ति पाने पर पुनर्जन्म के सिद्धांत को सावित कर देना खतरे से खाली नहीं

है। मृत्योपरान्त जीवन विश्वास का विषय नहीं है। उसे प्रयोग सिद्ध प्रणाली से देखा और परखा जा सकता है। अनुभवयुक्त नियम (इम्पेरिकल लाज) अनुमानित व्यापकत्व पर आधारित होते हैं। मनुष्य का मरण कुदरती कानून है, क्योंकि हर आदमी देर या सवेर मरता है। मगर पुनर्जन्म के केस में हमसे कहा जाता है कि अपवाद से व्यापकत्व पर पहुंचें। यह बात गले से उतरने वाली नहीं है।

पुनर्जन्म को प्रयोगसिद्ध ढंग से साबित करने के लिए हमें यह स्पष्ट करना पड़ेगा कि हर कोई पूर्वजन्म की याद क्यों नहीं रखता। ऐसे स्पष्टीकरण के अभाव में अनुभवयुक्त साक्ष्य इस सिद्धांत के विरुद्ध होगा। अगर स्मरण शक्ति पूर्वजीवन का सबूत है तो फिर सामान्य नियम यह है कि ऐसे सबूत का कोई अनुभव एक बेमानी चीज है। ऐसा स्पष्टीकरण कभी नहीं किया गया, क्योंकि ऐसा हुआ नहीं है। क्रमशः

इलाहाबाद हाईकोर्ट के यूपी सरकार को निर्देश–
सड़कों पर बने धार्मिक ढांचे हटाएं

लखनऊ, 11 जून (एजेंसी) : इलाहाबाद उच्च्य न्यायालय ने उत्तर प्रदेश सरकार को निर्देश दिया है कि सार्वजनिक मार्गो पर और उनके किनारे बने धार्मिक ढांचों को हटाया जाए। उसने राज्य सरकार से यह सुनिश्चित करने के लिए कहा है कि राजमार्गो, सड़कों, पैदल पथों और लेन-देन सहित कई सभी सार्वजनिक मार्गो पर किसी धार्मिक ढांचे को इजाज़त नहीं होगी तथा किसी तरह का उल्लंघन प्रशासन और पुलिस अधिकारियों की ओर से अदालती अवमानना किया जाना माना जाएगा। न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और न्यायमूर्ति राकेश श्रीवास्तव की लखनऊ पीठ ने कहा कि जनवरी, 2011 के बाद सार्वजनिक मार्गो पर बने धार्मिक ढांचों को हटाया जाएगा और संबंधित जिला मैजिस्ट्रेट की ओर से 2 माह के भीतर राज्य सरकार को अनुपालन रिपोर्ट सौंपनी होगी। जो धार्मिक ढांचे इससे पहले बनाए गए हैं, उनको किसी निजी भूखंड पर स्थानांतरित किया जाएगा अथवा 6 माह के भीतर हटाया जाएगा।

(लघु-कथा)

रक्षक

सुरेन्द्र कुमार

वह अपने माता-पिता के साथ उस विशाल मंदिर में पूजा के लिए आया था। उस मंदिर की विशेष मान्यता थी कि वहां अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए दूर-दूर से लोग आते थे। जब पिता द्वारा उसेवहां मंदिर में स्थापित उस विशाल मूर्ति को प्रणाम करने को कहा एवं बताया कि वह तीनों लोकों के रक्षक भगवान की मूर्ति है तो पुत्र ने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया। उसके पश्चात् उस ने भगवान की उस विशाल मूर्ति को निहारते हुए कहा, 'पिता जी, उस विशाल मूर्ति के आगे यह इतने मोटे एवं लंबे सींखचे क्यों लगे हैं? हमें उसके समीप क्यों नही जाने देते?

'बेटा! तुम देख रहे हो कि इस मूर्ति पर सोने के कितने आभूषण हैं एवं लाखों के नहीं बल्कि करोड़ों के हीरे एवं जवाहरात जड़े हैं। इसलिए इसे लोगों से दूर सीखचों के पीछ रखा हुआ है।' पिता ने उत्तर दिया।

कुछ क्षण पश्चात् वे बाहर आ गये। बाहर द्वार पर दो पुरुष हाथों में बंदूक लिए खड़े थे।

पुत्र ने पिता से प्रश्न किया, 'पिता जी यह यहां पर किसलिए खड़े हैं?'

'बेटा, तुम्हें बताया तो है कि अन्दर भगवान की मूर्ति कितनी कीमती है। उसकी रक्षा के लिए ये पहरेदार खड़े हैं', पिता ने उत्तर दिया

बेटे ने उन पहरेदारों को झुक कर प्रणाम किया। पिता ने चकित होकर बेटे से ऐसा करने का कारण पूछा तो बेटा बोला, 'पिता जी, मैं उनको प्रणाम कर रहा हूं, जो तीनों लोकों के रक्षक की रक्षा कर रहे है।

-(अशोक भाटिया द्वारा संपादित पुस्तक 'हरियाणा से लघुकथाएं' से साभार)

भारतीय सभ्यता के दौर में शिक्षा

उपेंद्र कुमार
7631903120

प्राचीनकाल-हमें भारत में आर्यों की जानकारी ऋग्वेद से मिलती है। ऋग्वेद की अनेक बातें अवेस्ता से मिलती हैं। अवेस्ता ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ है। भारत में आर्यों का आगमन 1500 ई० पूर्व से कुछ पहले हुआ। उन्हें दास, दस्यु आदि नाम के स्थानीय जनों से संघर्ष हुआ। ऋग्वेद में कहा गया है कि भरतवंश के एक राजा दिवोदास ने शम्बर को हराया। ऋग्वेद में जो दस्यु कहे गए हैं वे संभवत इस देश के मूल निवासी थे। भरत और वित्सु दोनों आर्यों के शासक वंश थे। पुरोहित वशिष्ठ इन दोनों वंशों के समर्थक थे। बाद में चलकर इस देश का नाम इसी भारत कुल के आधार पर भारतवर्ष पड़ा। भरत राज वंश का दस राजाओं के साथ युद्ध हुआ, जिसमें सुदास की जीत हुई और इस प्रकार भरतों की प्रभुता कायम हुई। पराजित जनों में सबसे महान पुरु थे। कलांतर में भरतों और पुरुओं के बीच मैत्री हो गई और दोनों ने मिलकर एक नया शासक कुल बनाया जो कुरु के नाम से प्रसिद्ध हुआ। फिर कुरु जनों ने पंचालों के साथ मिलकर उच्च गंगा मैदान में अपना संयुक्त राज्य स्थापित किया। ऋग्वेद काल में वशिष्ठ और विश्वामित्र दो महान पुरोहित हुए थे।

आर्य लोग गौर वर्ण के थे और मूलवासी लोग काले रंग के। आर्यो द्वारा जीते गए दास और दस्यु जनों के लोग दास और शूद्र हो गए।

इस काल में शूद्रों को शिक्षा से वंचित रखा गया। पुरोहित सिर्फ बड़े लोगों को शिक्षा देते थे। समाज में वैज्ञानिक शिक्षा का घोर अभाव था। वर्षा का होना, बिजली का चमकना, सूर्य तथा चांद का उदय, नदी-पर्वत आदि का अस्तित्व, बीमारी का कारण आर्यो के शिक्षक वशिष्ठ तथा विश्वामित्र एवं आर्य नहीं जानते थे। जब कुरुओं ने दिल्ली और दोआब के ऊपरी भाग पर अधिकार कर लिया, तो वह कुरुक्षेत्र नाम से प्रसिद्ध हुआ। धीरे-धीरे वे पंचालों से भी मिल गए जो दोआब के मध्य भाग पर अधिकार किए हुए थे। इस प्रकार कुरु पंचालों की सत्ता दिल्ली पर और दोआब के ऊपरी भाग और मध्य भाग पर फैल गई। तब उन्होंने हस्तिनापुर को अपनी राजधानी बनाया, जो मेरठ जिले में पड़ता है। कुरु-कुल का इतिहास भारत-युद्ध को लेकर मशहूर है जिस पर महाभारत नाम का विख्यात महाकाव्य है। यह भारत युद्ध माना जाता है कि 950 ई० पूर्व के आसपास कौरवों और पांडवों के बीच हुआ था, तो ये दोनों कुरु कुल के ही थे। इस युद्ध के फलस्वरूप वस्तुतः महाभारत में हस्तिनापुर का वर्णन है, उससे इसका कोई भी मेल नहीं है। क्योंकि इस महाकाव्य की रचना बहुत बाद में ईसा की चौथी सदी के आसपास हुई है।

महाभारत में कहा गया है कि युधिष्ठर के छोटे भाई दुर्योधन ने उनके राज्य का अपहरण कर लिया। राज्य के खातिर पांडवों और कौरवों के कुल का ही विनाश हो गया। इस युद्ध से स्पष्ट होता है कि सत्ता के आगे स्वजन कुछ नहीं है। उत्तर वैदिक काल में मूर्ति पूजा के आरंभ का कुछ आभास मिलने लगता है। इस काल में ब्राह्मण धार्मिक ज्ञान-विज्ञान पर अपना एकाधिकार जमा चुके थे। शूद्र इस काल में भी एक छोटा सेवक वर्ग बना रहा तथा उसे शिक्षा से वंचित रखा गया।

3. ईसा पूर्व छठी सदी में जैन धर्म और बौद्ध धर्म के सिद्धांत ने समाज में अभूतपूर्व प्रभाव डाला। बौद्ध विहार महान विद्या केंद्र हो गए। जिन्हें आवासीय विश्वविद्यालय की संज्ञा दी जा सकती है। इनमें बिहार में नालंदा और विक्रमशिला तथा गुजरात में बल भी उल्लेखनीय है। कहा जाता है कि ब्राह्मण शासक पुण्य मित्र शुंग ने बौद्धों को बहुत सताया। सताए जाने के कई उदाहरण ईसा की छठी-सातवीं

सदियों में मिलते हैं। शैव सम्प्रदाय के हूण राजा मिहिर कुल ने सैंकड़ों बौद्धों को मौत के घाट उतारा। गौड़ देश के शिवभक्त शशांक ने बौद्ध गया में उस बोधिवृक्ष को काट डाला, जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान मिला था। 1600 स्तूप और बिहार तोड़ डाले गए और हजारों भिक्षुक और उपासकों को मार डाला गया।

कहा जाता है कि गौतम बुद्ध ब्राह्मणों की सभा में गए। क्षत्रियों की सभा में गए और गृहपतियों की सभा में गए, लेकिन इस क्रम में शूद्रों का कोई उल्लेख नहीं है।

मौर्य साम्राज्य को पुण्य मित्र शुंग ने 185 ई० में अंतिम रूप में नष्ट कर दिया। ब्राह्मण होते हुए भी वह अंतिम मौर्य राजा वृहद्रथ का एक सेनानी था। कहा जाता है कि उसने लोगों के सामने वृहद्रथ को मारा डाला और बलपूर्वक पाटलीपुत्र का राजसिंहासन हड़प लिया।

जब देश के कई भागों में नए राज्यों का गठन हुआ तो पुरोहितों ने उन राजाओंकी प्रतिष्ठाजनक वंशावलियों गढ़ी और उसको मूल प्राचीन सूर्य और चंद्र वंशों से जोड़ा। इस तरह नए शासकों ने प्रजा की नजर में राजा के रूप में अपनी मान्यता स्थापित की। पुरोहितों में अधिकांश ब्राह्मण ही थे।

4. देश व समाज में अधिकांश जातियां वर्णव्यवस्था में शूद्र मानी जाती थी। यदि किसान या शिल्पी लोग उत्पादन-कर्म में, सेवाकर्म में या दायित्म चुकाने में चूकते थे, तो इसे धर्म-अर्थात परम्परागत सामान्य नियम से विचलित माना जाता था। ऐसी स्थिति को कलियुग कहा गया है। राजा का कर्त्तव्य होता था कि वह धर्म की रक्षा करे अर्थात इस तरह की गड़बड़ी न होने दे, जिसमें राजाओं और पुरोहितों का कल्याण निहित रहता था। कहा जाता है कि सातवीं सदी के बाद अनगिनत जाति-उपजातियां पैदा हुई।

ईसा की तीसरी सदी के आसपास पुराने सामाजिक संघटन में गहरा संकट आ पड़ा। इस संकट का चित्रण पुराणों के तीसरी चौथी सदी से सम्बद्ध भागों में कलियुग वर्णन में मिलता है। कलियुग का लक्षण विभिन्न वर्णों या सामाजिक वर्गों के मिश्रण का होना बताया गया है, जिसे वर्णसंकर कहते हैं। इसका आशय यह हुआ कि वैश्यों और शूद्रों ने अपने ऊपर थोपे गए उत्पादन कार्य बंद कर दिए अर्थात् वैश्य किसानों ने कर चुकाना रोक दिया और शूद्रों ने मजदूरी करना छोड़ दिया। वे विवाह आदि सामाजिक सम्बन्धों में वर्ण सबंधी प्रति प्रबंधों की उपेक्षा करने लगे। ऐसी स्थिति को देखकर रामायण और महाभारत में दण्ड या दमन नीति पर जोर दिया गया और मनु ने बताया कि वैश्यों और शूद्रों को अपने-अपने कर्त्तव्यों से विचलित नहीं होने दिया जाए।

जहां तक इस काल में शिक्षा का सवाल है तो कहना चाहूंगा कि विज्ञान, गणित, जीवविज्ञान, भूगोल, कला, साहित्य, राजतंत्र, वैश्य और शूद्र वर्ग में पनपने ही नहीं दिया।

5. वाल्मीकि रामायण के उत्तर कांड संख्या 73 से 76 के बीच इस बात की चर्चा है कि एक ब्राह्मण के इकलौते पुत्र की मृत्यु शम्बूक जैसे शूद्र व्यक्ति द्वारा तपस्या करने का परिणाम है। नारद मुनि द्वारा श्रीराम को शिकायत करने पर श्रीराम द्वारा खुद का यह वक्तव्य कि मैं जितना सामाजिक बदनामी से नहीं डरता, उससे अधिक एक ब्रह्म हत्या के पाप से डरता हूं। **बाद में श्रीराम द्वारा शूद्र शम्बूक की हत्या कर दी जाती है।**

6. महाभारत जैसे हिन्दू धर्म ग्रंथ में इसी तरह की विचारों की समानता पर आधारित एक प्रसंग है। एकलव्य जैसे एक शूद्र व्यक्ति ने अपनी धनुर्विद्या की शिक्षा के लिए कौरव-पांडव के पुत्रों के गुरु द्रोणाचार्य से विनम्रतापूर्वक आग्रह किया था कि आप मुझे धनुर्विद्या की शिक्षा दें। एकलव्य एक मात्र शूद्र जाति में पैदा होने के कारण द्रोणाचार्य ने उसे अपना शिष्य बनाने से इन्कार कर दिया, लेकिन अभ्यास ने उसे धनुर्विद्या में उच्च्व शिखर तक पहुंचा दिया। उच्च जाति एवं धनुर्विद्या में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान की अहम् में पल रहे द्रोणाचार्य को इस बात की जानकारी होने पर वे खुद हीनता बोध के शिकार हो

गए। द्रोणाचार्य अपने अहम् को धराशायी होते देख अपनी तुष्टी के लिए बड़ी ही चतुराई से कायरता का परिचय देते हुए एकलव्य से दक्षिणा के रूप में दाहिने हाथ का अंगूठा मांगकर उसकी योग्यता को कुंठित करने का काम किया।

7. मध्यकाल में प्राथमिक शिक्षा के लिए जब लड़के की उम्र 4 साल 4 माह एवं 4 दिन हो जाती, तो उसके माता-पिता धूमधाम से एक समारोह सम्पन्न करते। इस अवसर पर लड़के को मुल्ला द्वारा कुरान का कुछ अंश पढ़ाया जाता और विस्मिल्लाह-ए-रहमान-ए-रहीम शब्द को बुलवाया जाता था।

मुसलमानों के प्राथमिक शिक्षा के प्रमुख साधन मकतब के शिक्षक मियांजी अथवा मौलवी कहकर पुकारे जाते थे। समाज में इन शिक्षकों को आदरणीय स्थान प्राप्त था। छात्र भूमि अथवा कभी-कभी बेंचों पर बैठकर भू-सतह अथवा तख्ती पर लिखा करते थे।

हिन्दू छात्र प्रायः प्रारंभ में भू-सतह पर बिखरे बालू अथवा धूल पर लिखते थे। उन्हें जब लिखने का ज्ञान हो जाता था तो उन्हें भोजपत्र पर सर्की के कलम अथवा साहिल के कांटो से निर्मित कलम से लिखने की अनुमति दी जाती थी। प्राथमिक स्कूल में बच्चों को प्रवेशिका पुस्तकें, संस्कृत, आसान गणित एवं भौतिकी एवं प्राकृतिक विज्ञान का प्रारंभिक ज्ञान दिया जाता था। प्रारंभिक पाठशालाओं के पाठ्यक्रम में बहुत सीमा तक समरूपता थी और पाठ्यक्रम आसान था।

मकतब में शिक्षा की विधि अत्यंत फूहड़ थी। इस पर अधिक समय व्यतीत होता था और छात्रों का विकास भी असंतोषजनक रहता था। अकबर पहला सम्राट था, जिसका ध्यान मुस्लिम शिक्षा के इन दोषों की ओर गया। उन्होंने शिक्षक एवं छात्र दोनों के लिए कुछ आवश्यक कर्त्तव्यों का पालन करने का आदेश दिया। मकतब में अरबी और फारसी साहित्य के माध्यम से धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। कुरान की पढ़ाई विशेष रूप से होती थी। छात्रों को बिना अर्थ समझे इसको कंठस्थ करने का आदेश दिया जाता था। अकबर ने शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाकर पाठ्यक्रम को यथासंभव धार्मिक कठोरता के चंगुल से मुक्त करने का प्रयास किया।

हिन्दू छात्र पाठशालों के माध्यम से ही माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते थे। मुसलमान छात्र मकतब तथा खानकाई में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा का माध्यम फारसी था। इच्छुक छात्र अरबी भी पढ़ते थे। मुसलमान छात्र साहित्य, व्याकरण, गणित, इतिहास, न्यायशास्त्र आदि लौकिक विषयों का ज्ञानोपार्जन करते थे। हम विभिन्न कालों में पाठ्यक्रम में समरूपता की नितांत कमी पाते हैं।

मुसलमानों के बीच उच्च शिक्षा मदरसों के द्वारा दी जाती थी। मदरसे मुख्य रूप से महत्वपूर्ण शहरों में स्थापित थे। जहां दूर-दूर से आकर मुसलमान छात्र ज्ञान प्राप्त करते थे। सामान्य रूप से मदरसों में धर्मशास्त्र, कुरान आदि धार्मिक ग्रंथ व्याकरण, तर्कशास्त्र, साहित्य, न्याय शास्त्र, तत्वाकीमीमांसा, चिकित्सा शास्त्र आदि विषय पढ़ाए जाते थे। अकबर ने अपने शासन में ज्योतिष शास्त्र, गणित, चिकित्सा शास्त्र, दर्शन शास्त्र आदि लौकिक विषयों पर बल दिया गया और अपनी जनता को अरबी विषयों के अध्ययन को छोड़ने का निर्देश दिया गया। उस समय छात्र-शिक्षक संबंध मधुर होता था।

हिन्दुओं के बीच उच्च शिक्षा का प्रधान साधन टोल अथवा कालेज थे। टोल व्याकरण, न्यायशास्त्र, पुराण और दर्शन शास्त्र की शिक्षा देते थे। उच्च शिक्षा संस्कृत के माध्यम से ही दी जाती थी। उच्च शिक्षा के समापन में दस से बारह साल का समय लग जाता था। काव्य, व्याकरण, ज्योतिष, छंद, निरुपत, न्याय तथा दर्शन पर विशेष बल दिया जाता था। इन विषयों के अतिरिक्त अलंकार, कोश, अगम, निगम, भक्ति, योग, मल्वविद्या, राजनीति, धर्मशास्त्र, प्रशासन एवं युद्ध कला, तंत्र-मंत्र आदि विषय की शिक्षा दी जाती थी। संस्कृत टोलों में प्राकृत, पाली, हिन्दी, ओड़िया आदि स्थानीय भाषाओं की भी पढ़ाई होती थी।

8. शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसका प्रतिफलन मानव प्राणी है। मानवीय प्रकृति शिक्षा प्रदत्त है। मानव मस्तिष्क और तमाम अंगों से समन्वित एक

शरीर है, जिसकी तीन प्रकृतियां होती हैं-इच्छा करना, अनुभव करना तथा तर्क करना। वह अपने बौद्धिक और भौतिक गुणों के काण अन्य प्राणियों से भिन्न व श्रेष्ठ है। वर्गीय एवं सामाजिक प्राणी होने के नाते वह समाज में रहते हुए जीविका के साधनों का विकास भी करता है तथा जीने के समाजोपयोगी नवीन सिद्धांतों की सतत् खोज में लगा रहता है। शिक्षा प्रक्रिया मानव की शक्ति, बुद्धि कार्यकुशलता तथा प्राकृतिक क्षमताओं के सम्पूर्ण विकास में सहायक होती है। वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा एक ऐसा व्यवस्थित शस्त्र है जो मानव के व्यक्तित्व और समाजिक जीवन में अनुकूलित वातावरण का निर्माण करता है। प्रगति ही जीवन है। वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा सांस्कृतिक विकास की भी एक प्रक्रिया है।

शिक्षा से तात्पर्य है कि वैज्ञानिक, जनवादी एवं सामाजिक ज्ञान और शक्ति, अधिगम और सीखना मानव और समाज का विकास तथा शोषण-विहीन विश्व की निर्माण कला। वैज्ञानिक और जनवादी शिक्षा से ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा व्यक्तिगत जीवन में गुणवत्ता का विकास होता है तथा जीवन में प्रगति की प्रेरणा मिलती है।

वह शिक्षा व्यर्थ है जो रोटी, कपड़ा, मकान, दवा, स्वास्थ्य, जनोपयोगी मनोरंजन एवं मान-सम्मान न दे सके। रोटी, कपड़ा, मकान, दवा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, मान-सम्मान (इज्जत) मानव की मूल आवश्यकताएं हैं। शिक्षा को जीवन के इस तथ्य की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। शिक्षा को चाहिए कि प्रत्येक बालक एवं बालिका को इस योग्य बनाए कि वह किसी भी प्रकार के शोषण के शिकार न बन सकें। यदि भारत आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करना चाहता है तो प्रत्येक व्यक्ति को जनवादी सरकार का निर्माण करना चाहिए।

9. शिक्षा तभी सार्थक बनती है, जब प्रत्येक विद्यार्थी को प्रगतिशील बनाती है। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह जनवाद के लिए संघर्ष करे। आज के उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के संकटपूर्ण दुनियामें शिक्षा का वैज्ञानिक एवं जनवादीकरण महत्वपूर्ण है। यह एक मनोवैज्ञानिक एवं मानवीय आवश्यकता है। केवल किसी तरह खाना, पीना और सो जाना जीवन नहीं है। मानव केवल शरीर ही नहीं, बल्कि मन, बुद्धि, मस्तिष्क और संवेग भी रखता है। अतः मानव का सम्पूर्ण विकास होना चाहिए। उसे राज्यविहीन, शोषण विहीन तथा अन्य भेदभाव रहित मानवीय समाज चाहिए।

वे राष्ट्र जो केवल शिक्षा को आध्यात्मीकरण, व्यवसायीकरण, निजीकरण एवं साम्प्रदायिकरण पर बल देते हैं, उनकी शिक्षा शोषण को बढ़ावा देती है। मानव विकास को रोकती है। शिक्षा व्यवस्था को चाहिए कि वह बालक-बालिका एवं अन्य मानव की शोषण की सभी समस्याओं का सामना करने योगय बनाए। एण्डरसन के अनुसार शिक्षा का समस्त उद्देश्य वैज्ञानिक, यथार्थवादी, समाजवादी, आर्थिक, नैतिक, बौद्धिक एवं संर्वगातमक सभी पक्षों पर बल देने वाला हो। मानव एक अच्छे समाज का निर्माण करते हैं। अपने चिंतन से, अपने कार्य से, उत्पादन के साधन पर उत्पादन शक्तियों का अधिकार हो यह शिक्षा ही सिखाती है।

केंद्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद के राजनीतिक शास्त्र के विद्वान प्रो. हर गोपाल के अनुसार हमारी शिक्षा व्यवस्था अर्द्ध सामंती एवं अर्द्ध औपनिवेशक संरचना से प्रभावित है। उच्च शिक्षा में शिक्षक उच्च वर्ग से आते हैं जबकि छात्र शोषित वर्ग से है। कुलपति की नियुक्ति भ्रष्ट तरीकों से होती है। शिक्षा का निजीकरण, व्यवसायीकरण व्यक्तिगत लाभ के लिए किया जा रहा है। इससे सामाजिक ताना-बाना का विनाश होगा।

★★★

पाठक पत्रिका में छपी रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया Emai;:tarksheeleditor@gmail.com पर भेज सकते हैं। साधारण पोस्ट कार्ड पर भी आप अपनी राय भेज सकते हैं।

शिक्षा का व्यवसायीकरण

अरविन्द हंस

9896650582

पिछले कुछ वर्षों में देखने में आया है कि शिक्षा के क्षेत्र में काफी विस्तार एवं प्रसार सरकारी क्षेत्र की बजाए निजी क्षेत्र में अधिक हुआ है। स्कूली शिक्षा के उपरांत बी.टेक, एम.बी.ए, बी.डी.एस, एमबीबीएस, एमसीए आदि कई डिग्री कोर्सेज के लिए कई यूनिवर्सिटीज एवं डीम्ड यूनिवर्सिटीज को मान्यता प्रदान की गई है।

अपने देश में साक्षरता बढ़ाने के लिए यह एक अच्छा कदम है, लेकिन निजी क्षेत्र के इन संस्थानों ने इस राष्ट्र की धरोहर एवं देश का भविष्य बनाने वाले विद्यार्थियों के भविष्य संवारने में कम परन्तु इस शिक्षा के क्षेत्र के व्यवसायीकरण में अधिक दक्षता दिखाई है।

ट्यूशन फीस के नाम पर मोटी-मोटी रकम अर्जित करना तो ये अपना नैतिक अधिकार समझते ही हैं, उसके साथ-साथ होस्टल एवं भोजन आदि के नाम पर भी अच्छे-खासे पैसे लेकर जो सुविधाएं एवं जिस स्तर का खाना देने का वायदा छात्र-छात्राओं को शुरू में करते हैं, उस पर पूरे नहीं उतरते।

आरंभ में ही देखें तो जैसे ही प्रवेश की प्रक्रिया शुरू होती है, इतने महंगें-महंगे प्रवेश पत्र बेचे जाते हैं। परन्तु प्रवेश पाने की अधीरता के कारण बच्चों एवं अभिभावकों को अधिक दामों पर मजबूरन खरीदने पड़ते हैं। उसके बाद दौर शुरू होता है प्रवेश पत्र एवं प्रवेश शुल्क जमा कराने का। प्रवेश शुल्क के नाम पर तो अच्छी-खासे अभिभावकों का वित्तीय बजट हिल जाता है, परन्तु अपने बच्चों के भविष्य उज्जवल बनाने के लिए उन्हें यह सब कुछ करना पड़ता है।

यह प्रवेश पत्र एवं शुल्क जमा कराने की प्रक्रिया लगभग सभी छात्रों को केवल एक नहीं, बल्कि दो, तीन या चार संस्थानों में करनी पड़ती है। यह सोचकर कि पता नहीं कौन से संस्थान में प्रवेश मिले। इस प्रकार परिवार की एक अच्छी खासी राशि इसी उद्देश्य में निवेश हो जाती है। अतः अगर अनुमान लगाया जाए तो एक-एक संस्थान के पास कई-कई करोड़ रुपए इसी मद में इक्ट्ठे हो जाते हैं प्रवेश पत्र एवं शुल्क जमा कराने के लगभग डेढ़ से दो माह के बाद कक्षाएं शुरू होती हैं। तब तक प्रवेश के लिए आवेदन कर चुके लगभग 70-75 प्रतिशत छात्र-छात्राएं किसी दूसरे संस्थान में प्रवेश ले चुके होते हैं या अपना मन बदल चुके होते हैं। ऐसी स्थिति में उनके जमा शुल्क की वापस अदायगी का प्रावधान इन संस्थानों द्वारा छह से आठ माह बाद रखा हुआ है और वह भी भारी भरकम कटौती के साथ। इसमें भी कुछ संस्थान तो कई तरह की टालमटोल एवं बहानेबाजी करके यह राशि हजम कर जाते हैं। कुछ अभिभावक एवं छात्र समय अभाव या व्यस्तता के कारण पैसा वापिस ले ही नहीं पाते। इसके अतिरिक्त मैनेजमैंट कोटा के नाम पर प्रवेश के लिए जो सीटें आरक्षित होती हैं, उनके बदले में जो अंशदान (डोनेशन) आता है, वह एक अलग सी राशि होती है। इस प्रकार एक मोटी रकम हर वर्ष ऐसे संस्थानों के पास इक्ट्ठी हो जाती है, जो समाज सेवा के नाम पर शिक्षा के प्रसार का दम भरते हैं।

......शेष पृष्ठ 14 पर..

'मुझे मुस्लिम मत कहो, मैं नास्तिक हूं–तसलीमा नसरीन

प्राख्यात बंगलादेशी लेखिका तसलीमा नसरीन को 1994 में तब अपना देश छोड़कर भागना पड़ा जब इस्लाम की आलोचना करने के कारण उग्रवादियों ने उन्हें जान से समारने की धमकी दी। तबसे वह निर्वासित जीवन व्यतीत कर रही हैं। इस देश में हाल ही के वर्षों में अनेक बुद्धिजीवियों को या तो मौत के घाट उतार दिया गया है या फिर वेदेश छोड़कर भाग गए हें। थाबा बाबा के नाम से नास्तिकवादी ब्लॉग लिखने वाले अहमद राजीब हैदर को 2013 के शाहबाग रोष-प्रदर्शन के बाद टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया था। 'मुक्त मन' के नाम से बांगला ब्लॉग स्थापित करने वाले अन्य नास्तिक ब्लॉगर अभिजीत राय को इसी वर्ष फरवरी में उग्रवादी गुटों द्वारा ढाका में मार दिया गया था।

नारीवादी और सैकुलर मानववादी सुश्री नसरीन आजकल दिल्ली में रहती हैं। एक साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि वह अभिजीत को लंबे समय से जानती थीं। उसने नास्तिक और मानववादी आलेखों को स्थान देने के लिए अपना ब्लॉग चालू किया था क्योंकि समाचार पत्र ऐसी रचनाओं को प्रकाशित नहीं करते। अभिजीत एक मुक्त वैचारिक होने के साथ-साथ नास्तिक और तर्कवादी था। वह मुख्य तौर पर वैज्ञानिक विषयों पर लिखा करता था, लेकिन बाद में ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर होने वाली चर्चा को ब्लॉग में स्थान देना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे 'मुक्त मन' ब्लॉग उन लोगों का मंच बन गया जो इस्लाम सहित सभी मजहबों पर सवाल उठाते थे।

तसलीमा ने बताया कि अभिजीत का विशेष योगदान यह था कि 1980 के दशक के मध्य में जनरल हुसैन इरशाद के शासनकाल में खुले मन से सोचने पर जो प्रतिबंध शुरू हुए थे, उस सिलसिले को उसने इंटरनेट और ब्लॉग के माध्यम से प्रभाव हीन कर दिया था। जनरल इरशाद ने देश भर के सैकुलर संविधान का परित्याग करके बंगलादेश में इस्लाम को सरकारी मजहब घोषित कर दिया था।

तसलीमा ने बताया कि 1969-70 के दौरान राष्ट्र को स्वतंत्र करवाने के लिए जो जन आंदोलन चला था, उस दौरान लोग खुलकर अपने विचार प्रकट करते थे और मुश्किल से ही कोई महिला बुंर्का या हिजाब पहनती थी। लेकिन जनरल इरशाद द्वारा लगाए प्रतिंधों के कारण बंगलादेश के समाज में ऐसे बदलाव आए कि अब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता वहां एक दुर्लभ चीज बन गई है। 1980 और यहां तक कि 1990 के दशक में भी लोकप्रिय समाचार पत्रों में इस्लाम की आलोचना और महिलाओं की स्थिति के बारे में रचनाएं आमतौर पर प्रकाशित होती थीं लेकिन अब स्थिति वैसी नहीं है।

मदरसों की पढ़ाई का विरोध और सैकुलर शिक्षा का समर्थन करने वाली तसलीमा मजहब को राजनीति से अलग रखने की पक्षधर हैं और चाहती हैं कि सरकार बंगलादेश को मजहबी जुनूनियों की शरण स्थली न बनने दे। बंगलादेश की सरकार और दोनों प्रमुख पार्टियों बी.एन.पी. और आवामी लीग पर कट्टरपंथियों के समर्थन का आरोप लगाते हुए तसलीमा ने भारत की मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) तथा ममता बनर्जी को भी मजहबी मूलवादियों का सहयोग करने के आरोप में आड़े हाथों लिया।

तसलीमा पर अक्सर आरोप लगाया जाता है कि इस्लाम की आलोचना करके वह भारत के दक्षिणपंथियों के हाथ मजबूत कर रही हैं। इसे कोरी बकवास करार देते हुए उन्होंने कहा कि वह हिन्दू धर्म सहित सभी मजहबों की आलोचना करती हैं। वह बंगलादेश में हिन्दुओं के तथा पाकिस्तान में ईसाइयों के उत्पीड़न के विरुद्ध भी आवाज़ उठाती हैं। उन्होंने

कहा कि उन्हें मुस्लिम कहने की बजाए नास्तिक कहा जाना चाहिए।

तसलीमा हिन्दू दक्षिणपंथी तत्वों की तुलना में इस्लामिक मूलवादियों को अधिक बड़ा खतरा मानती हैं। पश्चिमी देशों के बारे में उनका कहना है कि वास्तव में वे इस्लामी कट्टरपंथियों से हाथ मिलाने को उतावले हैं। तसलीमा का मानना है कि इस्लाम की आलोचना का एकाधिकार गैर-मुस्लिमों और खास तौर पर पंश्चिमी विद्वानों के पास ही नहीं होना चाहिए, बल्कि इस्लाम के अंदर से अपने मज़हब की गलतियों के विरुद्ध आलोचना के स्वर उठने चाहिएं।

बंगलादेश के भविष्य के बारे में उनका मानना है कि यदि इस्लामी आतंकवादियों को कटघरे में खड़ा न किया गया तो यह देश अपनी कब्र स्वयं खोद लेगा। उन्होंने कहा कि यदि पुराने रिकार्ड को देखा जाए तो ऐसे तत्वों के विरुद्ध सरकार से कोई कदम उठाने की उम्मीद नहीं की जा सकती।

(साभार 'हिंदू') पंजाब केसरी 26.315 के माध्यम से

पाखण्ड का खंडन

-विनोद सिल्ला

सरस्वती को पूजा भारत ने,
पढ़ा लिखा जापान हुआ।
लक्ष्मी पूजन किया भारत ने,
अमेरिका क्यों धनवान हुआ।
विश्वकर्मा को पूजा भारत ने,
चाइना का उन्नत विज्ञान हुआ।
यहां के देव पशुओं पे सवार हैं,
अमेरिका में वायुयान हुआ।
ज्योतिषी बताये रुष्टदेवता,
जो पल भर में शैतान हुआ।
बलि मांग रहे देवी देवता,
कत्लगाह धर्म स्थान हुआ।
हाथ हथियार उठा रहे देवता,
अमन का बलिदान हुआ।
धर्म के नाम पर आडंबर है,
प्रताड़ित गरीब इनसान हुआ।
स्वामी अरबों की सम्पत्ति का,
देवता कितना धनवान हुआ।
सोना-चांदी चढ़ रहा निरंतर,
लोकहित का नुकसान हुआ।
'सिल्ला' बेचैन किया पाखण्ड ने,
जो रूढ़िवाद पर हैरान हुआ।

तांत्रिकों का माफीनामा

(गांव किरमारा जिला हिसार के एक परिवार को दो ठगबाजों ने उस परिवार कोअंधविश्वास की आड़ में जब ठगना चाहा जिसे तर्कशील सोसायटी हरियाणा के सदस्यों ने उसका पर्दाफाश किया। ठगबाज राजवीर शर्मा और सुन्दर शर्मा ने ग्राम पंचाय किरमारा खण्ड अग्रोहा जिला हिसार के सरपंच व सोसायटी के सदस्यों श्री फरियाद सिंह सनियाणा व श्री नर सिंह की उपस्थिति में माफीनामा लिखकर दिया।)

(नकल माफीनामा)

ग्राम पंचायत किरमारा
खण्ड अग्रोहा जिला हिसार

दिनांकः 4-5-2016

मैं राजबीर शर्मा पुत्र धेलू राम शर्मा गांव भीरडाना (फतेहाबाद) का स्थाई निवासी हूं। मैंने और मेरा साथी सुन्दर शर्मा पुत्र श्री कृष्ण लाल, गांव उकलाना (हिसार) ने मिल कर गांव किरमारा के एक परिवार श्री रणबीरसिंह पुत्र रामधारी के परिवार को गुमराह करके ठगना चाहा। परन्तु तर्कशील सोसायटी हरियाणा के सदस्यों ने मौके पर आकर पर्दाफाश कर दिया। हम आगे से कभी भी कहीं भी गुमराह करके ठगी नहीं मारेंगे। यदि भविष्य में ऐसा करते पाये गये तो कानूनी कार्रवाई की जाए। हमें सुधरने का मौका दें।

ह० राजवीर शर्मा व सुन्दर शर्मा

बाबाओं के काले कारनामे

पति को मारने की धमकी देकर महिला से दुष्कर्म

बरवाला- एक महिला ने एक तांत्रिक पर उसके पति को मौत का भय दिखाकर एक माह तक शारीरिक शोषण करने का आरोप लगाया है। महिला का आरोप है कि इस अनैतिक कार्य में उसकी ही एक परिचित महिला की भूमिका रही जिसने उसे नशीला पदार्थ देकर उस तांत्रिकसे शारीरिक सबंध बनाने के लिए विवश किया। महिला ने इस संबंध में पुलिस को शिकायत की है जिसक बाद महिला व तांत्रिक के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज कर लिया गया है। अभी किसी की गिरफ्तारी नहीं की गई है। ***दैनिक सवेरा-26-4-2016***

तांत्रिक को गिरफ्तार किया

बरवाला-वार्ड न. 19 में एक महिला के साथ एक तांत्रिक द्वारा पड़ोस में ही रहने वाली एक महिला के सहयोग से चाय में नशीला पदार्थ मिलाकर लगभग एक महीने तक उसको व उसके पति को तांत्रिक विद्या से जान से मारने की धमकी देकर डरा धमका कर दुष्कर्म किए जाने के मामले में संलिप्त 2 आरोपियों में से एक आरोपी तांत्रिक रवि को बरवाला पुलिस ने सोमवार देर रात को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया है। जांच अधिकरी एस.आई. महाबीर सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी रवि को मंगलवार को हिसार अदालत में पेश किया गया जहां पर अदालत ने आरोपी रवि को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

(दैनिक सवेरा-27-4-2016)

तंत्र-मंत्र का डर दिखा दुष्कर्म करने का आरोप

बरवाला। शहर की एक कालोनी में रहने वाली एक महिला ने पड़ोस के एक युवक पर एक माह तक दुष्कर्म किए जाने का आरोप लगाया है। शिकायत मिलने पर पुलिस ने इस संबंध में आरोपी रवि के खिलाफ केस दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। वहीं पुलिस द्वारा महिला का मेडिकल करवा उसके मैजिस्ट्रेट के समक्ष बयान करवाए गए हैं। फिलहाल पुलिस आरोपी रवि को अब अदालत में पेश करने की तैयारी में है। विवाहिता ने शिकायत में उसके पड़ोस में रहने वाले रवि के बारे में कहा कि रवि तंत्र-मंत्र का कार्य करता है। आरोप है कि करीब एक माह पहले रवि ने चाय में कुछ नशीला पदार्थ मिला दिया, जिससे वह बेसुध हो गई।

उमर उजाला 26-4-16

तांत्रिक विद्या से रुपए दोगुने करने के बहाने कपड़ा व्यापारी से 16 लाख की ठगी

रोहतक, (ब्यूरो)। तांत्रिक विद्या से रुपए दोगुने करवाने का लालच शहर के एक व्यापारी को भारी पड़ गया। फर्जी तांत्रिकों ने व्यापारी को दोगुनी रकम का लालच देकर कागज के नोटों से भरा थैला थमा दिया जबकि उसका 16 लाख रुपयों से भरा बैग लेकर फरार हो गए। जब 11 दिन बाद व्यापारी ने थैले को खोलकर देखा तो उसे होश उड़ गए। पीड़ित व्यापारी फर्जी तांत्रिकों से रुपए वापिस

मांगने पहुंचा तो उन्होंनेउसे जान से मारने की धमकी दे डाली। इसके बाद व्यापारी ने मामले की सूचना पीजीआई थाने में दी।

पुलिस ने मामले में जिंदरान निवासी भूप सिंह, गोहाना के रामगढ़ निवासी राजू, सोनीपत के मंतिंडा निवासी बलराज और गोहाना के सैनीपुरा निवासी कृष्ण के खिलाफ धोखाधड़ी और जान से मारने की धमकी देने का केस दर्ज किया है।

यूं हुई 16 लाख की ठगी : गांधी कैंप चौकी इंचार्ज जयबीर ने बताया कि अर्जुन नगर निवासी जितेन्द्र का कपड़ों का व्यापार है। उनकी किलो रोड पर चमेली मार्किट में दुकान है। करीब दो महीने पहले आरोपी जिंदरान निवासी भूप सिंह उनके पास आया। उसने बताया कि वह पीजीआई स्थित एक दुकान में काम करता है। कुछ दिन बाद भूप सिंह ने जितेंद्र को बताया कि वह ऐसे लोगों को जानता है जो तांत्रिक विद्या से रुपए दोगुना कर देते हैं। भूप सिंह पहले जितेन्द्र की ही दुकान में काम करता था। अमर उजाला-2-6-2016

शमशान घाट से अस्थियां चुराते तीन लोग पकड़े

यमुनानगर। थाना सदर क्षेत्र के गांव शादीपुर के श्मशानघाट के ग्रामीणों ने तीन लोगों को चिता से अस्थियां चुराते हुए पकड़ लिया। तीनों आरोपियों की ग्रामीणों ने जमकर धुनाई की और फिर इन्हें पुलिस हवाले कर दिया। तीनों आरोपी उत्तर प्रदेश के हैं और ससुर व दो दामाद हैं। पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उनकी गाय दूध देना बंद कर गई थी। एक तांत्रिक ने गाय के गले में अस्थियां बांध कर दूध देना शुरू कर देने की बात कही थी। जिस पर वे अस्थियां लेने आए थे। पुलिस ने मृतक महिला के बेटे को उसकी मां की अस्थियां लौटा दी। पीड़ित परिवार ने आरोपियों के खिलाफ पुलिस को शिकायत देने से मना कर दिया। जिसके चलते पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की और उन्हें पूछताछ के बाद छोड़ दिया।

गांव शादीपुर में शुक्रवार को एक बुजुर्ग महिला की मौत हो गई थी। शनिवार को उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया। रोजाना की तरह रविवार सुबह गांव के कुछ लोग शमशानघाट की तरफ सैर के लिए निकले। उन्होंने देखा कि तीन लोग शमशानघाट में चिता के पास खड़े होकर उसके साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं और चिता से कुछ समेट रहे हैं। यह देख ग्रामीण मौके पर गए तो तीनों लोग घबरा गए। आरोपियों के हाथ में एक थैला था। ग्रामीणों ने जब उनका थैला चेक किया तो उसमें से अस्थियां निकालीं जो आरोपियों ने चिता से निकाली थी। ग्रामीणों ने इसकी सूचना तुरंत गांव में दी। सूचना मिलने पर अन्य ग्रामीण व मृतक महिला के परिजन मौके पर पहुंच गए। अस्थियां चुराए जाने की बात का पता चलते ही ग्रामीणों ने तीनों आरोपियों की धुनाई कर डाली। इसके बाद मामले की सूचना सदर थाना पुलिस को दी। ग्रामीणों ने तीनों आरोपियों को पुलिस के हवाले कर दिया। आरोपियों की पहचान यूपी के काटावाल निवासी बीरम, उसके दामाद फुरकाजी निवासी सुनील और दूसरे दामाद गांव नागल निवासी संदीप के रूप में हुई। लेकिन पीड़ित परिवार ने आरोपियों के खिलाफ कोई कार्रवाई करवाने से मना कर दिया। जिस पर पुलिस ने तीनों आरोपियों को छोड़ दिया।पुलिस पूछताछ के दौरान उत्तर प्रदेश के गांव फुरकाजी निवासी आरोपी सुनील का कहना है कि उनकी गाय दूध नहीं दे रही थीं। एक तांत्रिक ने बताया कि किसी मुर्दे की लकड़ी और अस्थि से गाय को लगी नजर उतर जाएगी। गाय को बांधने वाले स्थान पर (खूंटे) चिता की लकड़ी दबानी होगी और अस्थि को गाय के गले में बांधना होगा। इससे गाय दूध देने लगेगी। उसने अपनी गलती को माना। लेकिन ग्रामीणों का कहना था कि आरोपी झूठ बोल रहे हैं।

-अमरउजाला (6-6-2016)

टी.वी. चैनलों की रिपोर्ट

100 महिलाओं से बलात्कार करने वाला बाबा गिरफ्तार

टी.वी. चैनलों पर बेशक अंधविश्वास बढ़ाने जैसे आक्षेप लगते रहते हैं कि वे बाबाओं के प्रवचन आदि चैनलों पर दिखाते हैं परन्तु दूसरी ओर यह भी सच है कि टी.वी.चैनल बेशक जाने अनजाने में, बहुत से ढोंगी बाबाओं का पर्दाफाश भी करते हैं अथवा ढोंगी बाबाओं, तांत्रिकों की खबरें इतनी विस्तार से प्रसारित करते हैं कि दर्शकों को सतर्क रहने की चेतावनी भी मिलती है। बाबाओं की इसी श्रृंखला में पिछले दिनों एक अन्य अय्याश बाबा की खबर सामने आई तो लगभग सभी चैनलों ने बड़े विस्तार से इसे दर्शकों को परोसा।

24 मई को बाराबंकी (उत्तर प्रदेश) के एक परमानंद नाम के बाबा के गिर फ्तरी की खबर सामने आई जब उसे कोर्ट में पेश किया गया। यह ढोंगी बाबा निःसंतान महिलाओं को संतान देने का ढोंग रच कर उन्हें अपने जाल में फंसाता था। और फिर उसके साथ बलात्कार करता था। बाराबंकी में इस बलात्कारी बाबा का आश्रम हैं। चैनलों व समाचार पत्रों द्वारा सामने लाई गई सूचनाओं के अनुसार इस बाबा ने 100 से भी अधिक महिलाओं के साथ बलात्कार किया है।

इस बाबा के खिलाफ बलात्कार जैसे आक्षेप पहले भी लगते रहे हैं परन्तु पुख्ता सबूत न होने के कारण और बड़े-बड़े प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ इस बाबा के संबंध होने व अंधश्रद्धालुओं के विरोध के कारण बातें दब जाती थी।

रमाशंकर तिवारी उर्फ परमानंद नाम के तथाकथित बाबा के काले कारनामे शायद अभी भी सामने न आते अगर उसका लैपटाप खराब न होता जिसमें अपने कुकृत्यों की वीडियो इसने स्वयं ही डाल रखी थी । अपना वह लैपटाप में कुछ खराबी आने के कारण इसने ठीक करने के लिये इसे एक मकैनिक को दिया। लेकिन मकैनिक को देते समय यह बाबा अपने कुकृत्यों की वीडियों निकालना भूल गया। मकैनिक ने अचानक वीडियो खोली तो वह हैरान रह गया जिसमें से कुछ क्लिपिंग उसने वायरल कर दी जिससे बाबा के कारनामे जनता के सामने आ गये।

ज्ञात हुआ कि बाबा महिलाओं को अपने जाल में फंसा कर अपने आश्रम की कुटिया में ही उनका यौन शोषण तो करता ही था, साथ ही गुप्त कैमरे से उनका वीडियो बना कर बाद में उन्हें ब्लैकमेल भी करता था। बात यहीं तक ही नहीं थी, वह उनसे जिस्म फरोशी भी करवाता था। प्रसारित सूचनाओं के अनुसार अधिकतर महिलाएं अच्छे घरों की भी थीं जिन्हें वह ब्लैकमेल किया करता था। इस बलात्कारी बाबा के भक्तों में कुछ नामी नेता, सांसद व पुलिस वाले भी हैं।

विभिन्न चैनल इस बाबा के उक्त समाचार तीन दिन तक दिखाते रहे। 28 मई के समाचार के अनुसार बाबा को अदालत द्वारा 3 दिन का पुलिस रिमांड दिया गया था। ❖ ❖ ❖

यह हैं हमारे पूजनीय साधू

विभिन्न चैनलों द्वारा दिखाये जाने वाले समाचारों के अनुसार 12 मई के दिन कुंभ मेले के दौरान उज्जैन में साधुओं के दो गुट जो अलग अलग अखाड़ों से संबंध रखते हैं, आपस में भिड़ गये और खूब हिंसा हुई। साधुओं के बीच आपस में गोली भी चली। जिसमें 4 साधु घायल हो गये। तीन साधुओं को गिरफ्तार कर लिया गया। प्रश्न उठता है कि क्या ये तथाकथित साधू पूजा अथवा सम्मान के लायक हैं?

अंधविश्वास के चलते

डबल के चक्कर में गंवाए 11.75 लाख गंवाये

पूंडरी, 15 मई (तलवाड़) : तांत्रिकों ने मंत्र विद्या से पैसा दोगुना करने का झांसा देकर गांव हजवाना के पढ़े-लिखे युवक व उसके परिवार से 19 तोला सोना व पौने बारह लाख की नकदी हथिया ली। पुलिस ने युवक की शिकायत पर सात लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी व जान से मारने की धमकी देने का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस में दर्ज शिकायत में गांव हजवाना के युवक दिलबाग सिंह का कहना है कि वो गांव हजवाना में पिता के साथ खेतीबाड़ी का कार्य करता है। दो-तीन साल पहले जब वो करनाल में पढ़ने के लिए जाता था, तो उसकी मुलाकात युसुफ खान से हुई। धीरे-धीरे युसुफ ने दिलबाग को दोस्त बना लिया और उसे बताया कि उनके पास तांत्रिक विद्या से पैसे को दो-गुणा करने की शक्ति है। पढ़ा-लिखा दिलबाग युसुफ की बातों में आ गया और उसे अपने घर आने का निमंत्रण दे दिया। दिनांक 24 अप्रैल 2014 को युसुफ खान अपने रिश्तेदार महबूब खान, नूरजहां, नच्छो, कमील व नासीम के साथ दिलबाग के घर हजवाना आया। सभी ने दिलबाग व उसके घर वालों को पैसे दोगुणा करने की तंत्र विद्या के बारे में बताया। घर वालों ने उन्हें 15 हजार रुपए एकत्रित करके दिए, जिन्हें लेकर सभी आरोपी दिलबाग के घर की छत पर गए और उन नोटों को बरसा दिया। जब घर वालों ने नोटों को एकत्रित करके गिना तो वे 30 हजार रुपए निकले। दिलबाग व उसके घर वालों को तांत्रिकों की बातों पर विश्वास हो गया।

दिनांक 3 मई 2014 को युसुफ खान फिर से दिलबाग के घर आया और पूजा पाठ किया। युसुब व उसके रिश्तेदारों ने दिलबाग के परिवार वालों को घर के सभी जेवर एकत्रित करने को कहा तो दिलबाग ने अपने घर का 13 तोले सोना तथा अपनी बुआ का 6 तोले सोना तांत्रिकों के हवाले कर दिया। तांत्रिकों ने सवा मीटर नीले रंग का कपड़ा व सवा मीटर की गई अन्य चीजें मंगवाकर सारे जेवर उस कपड़े में बांध दिए और दिलबाग को स्वच्छ जल लाने के लिए नीचे भेज दिया। जब तक दिलबाग जल लेकर आया, तांत्रिकों ने सभी जेवर कपड़े में बांध कर घर की अलमारी में रखने का दावा किया, साथ ही ये भी कहा कि यदि सवा महीने से पहले कोई अलमारी खोलेगा, तो वह अंधा हो जाएगा। इसके बाद तांत्रिकों ने दिलबाग से फोन पर सम्पर्क जारी रखा और दोगुणा करने के लिए बड़ी राशि एकत्रित करने की बात कही।

जान से मारने की दी धमकी : दिलबाग जब आरोपियों द्वारा दिए गए पते पर सोनीपत पहुंचा तो आरोपियों ने उसे जान से मारने की धमकी भी दी। मानसिक स्थिति और तनाव के चलते उवसने कई महीनों तक पुलिस में भी इसकी शिकायत दर्ज नहीं करवाई। शनिवार को उसने पुलिस को इस पूरे मामले की शिकायतदी। थाना प्रभारी अंग्रेज सिंह ने बताया कि दिलबाग की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों युसुब खान व महबूब खान पुत्र बांदू ठेकेदार, नूरजहां पत्नी युसुफ तथा नच्छो पत्नी बोंदू निवासी जटरावा सोनीपत के अलावा कमील निवासी कैराना उत्तर प्रदेश व नासीम निवासी शामली उत्तर प्रदेश के खिलाफ 406ए 420ए 120बी व 506 के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

पीड़ित युवक को घर आने पर पता चला धोखाधड़ी का : दिनांक 3 जून 2014 को युसुफ फिर से अपने रिश्तेदारों के साथ पूंडरी आया और दिलबाग ने पूंडरी स्थित लक्ष्मी ट्रेडिंग कम्पनी की दुकान में सुखबीर के सामने 11 लाख 75 हजार की राशि आरोपियों को थमा दी। आरोपियों ने दिलबाग से कहा कि चलो हजवाना चलते हैं। रास्ते में सभी मंडी से ताजे फल लेने के लिए आरोपियों ने दिलबाग को नीचे उतारा और फरार हो गए। दिलबाग जब फल लेकर वापिस आया तो आरोपी गायब थे। दिलबाग को शक हुआ और उसने घर जाकर अलमारी में रखे जेवर चैक किए, ये देखकर उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई कि अलमारी में रखे कपड़े में एक भी जेवर नहीं था।

(दैनिक सवेरा : 16-5-2016)

देश में देवदासी कुप्रथा कब तक?

-जाहिद खान

देश में आज भी कई ऐसी कुप्रथाएं हैं, जो धर्म की आड़ में पुरुषों को महिलाओं के शोषण का अधिकार देती हैं। देवदासी, ऐसी ही एक अमानवीय कुप्रथा है। तमाम कानूनी प्रावधानों के बावजूद दक्षिणी राज्यों में यह कुप्रथा बंद होने का नाम नहीं ले रही। यही वजह है कि देश की सबसे बड़ी अदालत सुप्रीम कोर्ट को खुद एक बार फिर इस कुप्रथा और उसके उन्मूलन की संभावना के बारे में वक्त से हल्फनामा दाखिल करने में नाकाम रहने पर केंद्र सरकार को फटकार लगाते हुए 25 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है। एक गैर सरकारी सामाजिक संगठन एसएल फाउंडेशन की जनहित याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय ने पिछले साल ही इस मामले में केंद्र सरकार से जवाब तलब किया था। याचिका में अदालत से केंद्र और कर्नाटक सरकार दोनों को राज्य के देवनगर जिले के उत्तांगी माता दुर्गा मंदिर में 13 फरवरी 2014 को आधी रात को 'देवदासी' समर्पण को रोकने के लिए फौरन कदम उठाने का निर्देश देने का अनुरोध किया था। याचिकाकर्ता की इस संबंध में दलील थी कि 'देवदासी' कुप्रथा के खिलाफ कानून होने के बावजूद देश के विभिन्न हिस्सों में यह कुप्रथा आज भी बदस्तूर जारी है। कर्नाटक भी अपवाद नहीं। राज्य में यह गतिविधि 'कर्नाटक देवदासी समर्पण निषेध कानून-1982' के खिलाफ है और इससे किशोर के अधिकारों का हनन होता है। याचिकाकर्ता की अदालत से मांग थी कि वह इस कुप्रथा को रोकने के लिए कानून और दिशा-निर्देश बनाने का निर्देश केंद्र सरकार को दें, ताकि देश में देवदासी प्रथा के नाम पर दलित किशोरियोंके शोषण को रोका जा सके।

अदालत ने इस मामले में तुरंत कार्यवाही करते हुए कर्नाटक के मुख्य सचिव को 14 फरवरी 2014 के भोर पहर में होने वाले इस कार्यक्रम में, जहां दलित किशोरियों को देवदासी के रूप में समर्पित किया जाना था, के संबंध में सभी एहतियाती उपाय करने का निर्देश दिया था। इसके साथ ही अदालत ने राज्य के मुख्य सचिव को यह तय करने का भी निर्देश दिया कि 13 फरवरी 2014 की रात या फिर 14 फरवरी 2014 के भोर पहर में ऐसी कोई घटना न हो। इस फौरी कार्यवाही के बाद अदालत ने जनहित याचिका पर कर्नाटक सरकार को जवाब दाखिल करने का भी निर्देश दिया। इस मामले में जब कर्नाटक और केंद्र सरकार ही आगे नहीं बढ़ी, तब जाकर अदालत ने अपना सख्त रुख दिखलाया।

देवदासी एक ऐसी प्रथा है, जिसमें किसी किशोर महिला के मंदिर में समर्पण के बाद, वह अपना सारा जीवन मंदिर या ईश्वर की पूजा और सेवा में समर्पित कर देती है। जाहिर है कि एक बार जो वह देवदासी बनी, तो उसी भूमिका में कैद होकर रह जाती है। उसे अपना सब कुछ मंदिर के लिए अर्पित कर देना होता है। उनका काम मंदिरों की देखभाल और नृत्य एवं संगीत सीखना होता है। देवदासियां परंपरागत रूप से वे ब्रह्मचारी होती हैं, लेकिन असल में इनका काम मंदिर के पुजारियों और गांव के रसूखदारों की कामेच्छा की पूर्ति करना भर रह जाता है। उनका पूरा जीवन धर्म और शारीरिक शोषण के बीच जूझना रहता है। देवदासी बनी महिलाओं को इस बात का भी अधिकार नहीं रह जाता कि वो किसी की हवस का शिकार होने से इंकार कर सके। जिस शारीरिक शोषण के शिकार होने के सिर्फ जिक्र भर कर देने से रुह कांप जाती है, उस दिल दहला देने वाले शोषण का सामना ये देवदासियां हर रोज करती हैं। आंकड़ों की बात करें तो देश में इस वक्त तकरीबन साढ़े चार लाख महिलाएं धर्म की आड़ में चलने वाली इस घिनौनी कुप्रथा का शिकार हैं। अलग-अलग राज्यों में देवदासी को अलग-अलग नाम दिया गया है।

मसलन आंध प्रदेश में इसे जोगिनी, गोवा में भावनिस, तमिलनाडू में धेवारदियर, महाराष्ट्र में मुरालिम, असलम में नतिस और कनार्टक में देवदासियों को बेसविस कहा जाता है। जाहिर है कि नाम भले ही अलग हों, लेकिन उनका काम वही है।

देवदासी कुप्रथा को रोकने के लिए कई सामाजिक आंदोलन हुए, लेकिन यह प्रथा खत्म नहीं हुई। धर्म के ठेकेदार आज भी देवदासी प्रथा पर धर्म का मुलम्मा चढ़ाकर दलित एवं गरीब परिवारों को गुमराह करने में कामयाब हो रहे हैं। कहने को कर्नाटक सरकार ने साल 1982 में और आंध्र प्रदेश सरकार ने साल 1988 में इस कुप्रथा को गैर कानूनी घोषित करते हुए इस पर पूरी तरह से पाबंदी लगा दी थी, लेकिन फिर भी यह कानून देवदासी प्रथा को रोकने में नाकाम रहे हैं। कर्नाटक के 10 और आंध्र प्रदेश के 14 जिलों में यह प्रथा अब भी जारी है। देवदासी कुप्रथा को लेकर जब भी कोई अपना विरोध दर्ज करता है तो उसे मंदिर के पुजारियों और अंधविश्वासी लोगों का गुस्सा झेलना पड़ता है। विरोध की ये आवाजें नक्कारखाने में तूती की तरह साबित होती हैं और वहीं गुम होकर रह जाती हैं कोई देवदासी इस कुप्रथा के भंवर से यदि निकलना चाहे तो उसे ऐसी-ऐसी सजा दी जाती है, जिससे कोई दूसरी देवदासी ऐसा करने की हिम्मत नहीं जुटा पाती। देवदासी कुप्रथा को रोकने के लिए सख्त कानून होने के बाद भी यदि यह कुप्रथा देश में आज भी जारी है तो सरकार के लिए इससे बड़ी शर्म की बात क्या होगी? देवदासी प्रथा पर अदालत के सख्त रुख के बाद उम्मीद बंधी है कि इस अमानवीय और गैर कानूनी प्रथा से देश को जल्द ही मुक्ति मिलेगी।

★★★

पाठकों के लए सूचना

हिन्दी व पंजाबी में छपती पत्रिका तर्कशील के बारे में पाठक अपनी राय वट्स अप नं. 941606203 पर या बने ग्रुप तर्कशील साहित्य में जुड़कर भी भेज सकते हैं। जिसमें से चुनी हुई राय को पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। ....**संपादक**

स्मृति शेष

मुद्राराक्षक नहीं रहे

हिन्दी के तेजस्वी चिन्तक, नाटककार, कथाकार व्यंग्यकार मुद्राराक्षस नहीं रहे । हिंदी के बाग़ी कहे जाने वाले इस साहित्यकार का दिनांक 12 जून, 2016 को निधन हो गया।

मुद्राराक्षस जी को हिंदी का बागी साहित्यकार कहा जाता है। दयानंद पाण्डेय ने उन्हें 'हिंदी के चंबल का एक बागी मुद्राराक्षस' कहा था। 'अगर मुद्राराक्षस के लिए मुझ से कोई एक वाक्य में पूछे तो मैं कहूंगा कि हिंदी जगत अगर चंबल है तो मुद्राराक्षक इस चंबल के बाग़ी हैं। जिंदगी में उलटी तैराकी और सर्वदा धारा के खिलाफ चलने वाला कोई व्यक्ति देखना हो तो आप लखनऊ आइए और मुद्राराक्षस से मिलिए।' उन्होंने लिखा था।

'मुद्राराक्षक बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। 'मरजीदवा' 'योर्स फेथफुल', 'तेंदुआ' , 'तिलचट्टा', 'गुफाएं', 'आला अफसर' समेत कुल 13 मंच नारक उन्होंने लिखें। लगभग 30 मंच नाटकों का निर्देशन भी किया। उनके उपन्यासों में 'दंडविधान' और 'हस्तक्षेप' प्रसिद्ध हैं। व्यंग्य संग्रह प्रपंच-तंत्र, और आलोचना-पुस्तक 'आलोचना का समाजशास्त्र' के अलावा 'धर्मग्रंथों का पुनर्पाठ' और 'भगतसिंह होने का मतलब' जैसी वैचारिक पुस्तकों से उनके लेखन-कर्म के व्यापक दायरे का पता चलता है। 1962 से 1976 तक दिल्ली में आकाशवाणी में काम करते हुए उन्होंने कर्मचारियों संगठित करने में सक्रिय भूमिका निभाई थी। वे लम्बे समय तक वहां की यूनियन में महासचित के पद पर रहे। मुद्राराक्षस का निधन प्रगतिवादी सोच की दुनिया के लिए एक बड़ी क्षति है। तर्कशील सोसायटी हरियाणा की ओर से उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट की जाती है।

(मुरली मनोहर प्रसाद सिंह व संजीव कुमार की टिप्पणी पर आधारित) (जयपाल द्वारा प्रेषित)

खोज खबर

दिमाग तरोताज़ा रखना है, तो जमकर दौड़िये

रोजाना दौड़ना न सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य के लिये फायदेमंद होताहै, बल्कि इससे दिमाग भी दुरुस्त रहता है। हालिया शोध में पाया गया कि दौड़ने से शरीर और दिमाग में रक्त का संचार बेहतर ढंग से होने लगता है जिससे तनाव खत्म होता है और दिमाग तरोताजा हो जाता हैं इससे सोचने समझने और सीखने की क्षमता में भी सुधार होता है। शेधकर्ताओं का कहना है कि सिर्फ 30 से 40 मिनट तक दौड़ने से मस्तिष्क में नए न्यूरॅन्स बनने लगते हैं। इस न्यूरॅन्स की वजह से याददाश्त दुरुस्त और सीखने की क्षमता में इजाफा होता है।
– (अमर उजाला से साभार)

धूम्रपान से मुंह की बीमारियों का खतरा

न्यूयार्कः 8 जून (एजेंसी)–सिगरेट पीन से न सिर्फ कुछ जीवाणु मुंह में जमा हो जाते हें, बल्कि वे शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र पर भी हावी हो जाते हें, जिसके कारण मुंह संबंधी कई बीमारियां हो सकती हैं। एक नए शोध से यह जानकारी मिली है। वे जीवाणु दांत, हृदय वॉल्व और धमनियों में बायोफिल्म्स का निर्माण करते हैं। बॉयोफिल्म कई सारी सूक्ष्म जीवाणुओं से मिलकर बनी जटिल संरचना होती हैं शोधार्थियों में से एक अमरीका के यूनिवर्सिटी ऑफ लूईसकविले स्कूल ऑफ डेंटिस्ट्री के डेविड स्कॉट ने कहा :एक बार ये रोगाणु अपने आप को बॉयोफिल्म में तब्दील कर लेते हैं। फिर इसका उन्मूलन काफी कठिन हो जाता है। क्योंकि यह मेजबान के प्रतिरक्षा तंत्र के खिलाफ अवरोध उत्पन्न कर देता है। यहां तक कि इन पर एंटीबायोटिक दवाओं का भी असर नहीं होता है और लगातार संक्रमण में मदद करने लगता है।' यह शोध टोबैको अनड्स्ड नाम पत्रिका में प्रकाशिता किया गया है।

खुद को बिजी रखें, दिमाग रहेगा तरोताजा

यदि आप पच्चास पार हो चुके हैं और आपकी लाइफस्टाइल में खालीपन है तो इसका असर आपकी मेंटल हैल्थ पर पड़ सकता है। इसलिए दिल थाम लीजिए और खुद को व्यस्त रखें ताकि दिमाग तरोताजा रहे। एक रिसर्च में सामने आया है कि किसी लाइफस्टाइल की वजह से ब्रेन की प्रोसेसिंग भी तेज हो जाती है। इससे मेंटल हैल्थ बिगड़ने का खतरा नहीं होता। न सिर्फ मेमोरी शार्प रहती है बल्कि शब्दावली भी रिच रहती है।

यूनीवर्सिटी ऑफ टैक्सास की पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च स्कॉलर सारा फैस्टिनी कहती हैं कि रिसर्च में पाया गया कि जिन लोगों की लाइफस्टाइल काफी बिजी है, उनकी मैमोरी भी काफी शार्प पाई गई। एकाग्रता भी उनमें अधिक देखी गई। वे पिछले इवेंट्स को भी अव्छे से याद रख पाते हैं। यह स्टडी एजिंग प्यूरोसाइंस के जर्नल में प्रकाशित की गई है। इसके लिए 330 महिला पुरुषों का अध्ययन किया गया जिनकी उम्र 50 से 89 के बीच थी। इसमें उनके काफी अधिक न्यूरो साइकोलॉजिकल टेस्ट किए गए। मनोरोग चिकित्सक डा॰ अनिल ताम्बी बताते हैं कि इस उम्र में ज्यादातर डिप्रेशन और एंजाइटी जैसी समस्या होती है। उससे मेमोरी लॉस होन की आशंका अधिक होती है। वहीं 65 की उम्र पार करने के बाद एलजाइमर्स डिजीज़ होने का खतरा भी बढ़ जाता है। इसलिए पच्चास की उम्र होने के बाद खुद को अपनी हॉबी और किसी न किसी एक्टिविटी या फिर चैलेंजिंग टास्क में इन्वाल्व रखें क्योंकि इससे आपको खुशी का अहसास होगा। पॉजिटिव इमोशंस बढ़ेंगे और मेंटलहैल्थ फिट रहेगी।

अनमोल वचन

अदृश्य वस्तुओं का डर उस चीज का बीज है जिसे प्रत्येक व्यक्ति धर्म कहता है।
–थॅमस हॉब्स (1588'1679)

स्वास्थ्य

बिना साइड इफेक्ट दूर होगा जोड़ों का दर्द

पवन कुमार

नई दिल्ली। रियूमेटॉरायड आर्थ्राइटिस (जोड़ों का दर्द) से पीड़ित लोगों के लिए एम्स अच्छी खबर लेकर आया है। पहली बार रियूमेटार्रायड आर्थ्राइट्स के इलाज के लिए ऐसी कारगर दवा तैयार की गई है, जिसका कोई साइड एफेक्ट नहीं है और दवा भी बेहद कारगर है। दवा पर किया जा रहा प्री-क्लीनिकल ट्रायल सफल रहा है और अब एथिकल क्लीयरेंस के बाद दवा का मानव पर परीक्षण किया जाएगा। इसके बाद आम लोगों के लिए दवा बाजार में उपलब्ध हो सकेगी। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) की मदद से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के फॉर्माकोलॉजी विभाग ने यह दवा तैयार की है। सबसे अच्छी बात है कि यह दवा औषधीय पौधों से तैयार की गई है। दवा बनाने में सुरंजन, हड़जोड़, दारु हल्दी और धनिया के पौधों का प्रयोग किया गया है। फार्माकोलॉजी विभाग के इस शोध को फरवरी-2016 में इंडियन जर्नल ऑफ फॉर्माकोलॉजी में प्रकाशित भी किया गया है। शोध में शामिल फॉर्माकोलॉजी विभाग के प्रमुख डा. वाई के गुप्ता और डा. सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि पिछले करीब छह वर्षो से रियूमेटॉयड आर्थ्राइटिस बीमारी के इलाज के लिए दवा पर शोध किया जा रहा है। अब इसके सकारात्मक परिणाम आ गए हैं। प्री-क्लीनिकल ट्रायल में सफलता भी मिल गई है। एथिकल क्लीयरेंस के बाद तैयार दवा का मानव पर उपयोग किया जाएगा। जोड़ों के दर्द से राहत के लिए दर्द कम करने अथवा शरीर में इम्यून पावर बढ़ाने के लिए दवा दी जाती है जिनका साइड एफेक्ट ज्यादा होता है। डा. सुरेन्द्र ने बताया कि दवा के शोध के लिए चूहों के समूह पर अध्ययन किया गया। पहले चूहों में केमिकल के माध्यम से जोड़ों का दर्द विकसित किया किया, इसके बाद जोड़ों का अल्ट्रासाउंड कर उसका परीक्षण किया गयां इसके बाद चूहों के उस समूह को तैयार की गई दवा दी गई। इसके बाद देखा गया कि नई दवा से चूहों के जोड़ों के दर्द में राहत मिली है। *अमर उजाला-20-4-16*

कितनी खर्च होती है

व्यायाम में कैलोरीज़

हम जो भी कार्य करते हैं उसमें शरीर की ऊर्जा को नापने का पैमाना है कैलोरी। हम जो भी खाते हैं उससे हमारे शरीर को ऊर्जा मिलती है जबकि हम कोई शारीरिक कार्य करते हैं या व्यायाम करते हैं तो उसमें ऊर्जा खर्च होती है। हम मोटापे से बचने के लिए यह आवश्यक है कि भोजन से जितनी ऊर्जा हमें मिलती है, हम लगभग उतनी ही ऊर्जा शारीरिक कार्यो और व्यायाम में खर्च कर दें।

आइए देखें विभिन्न कार्यो में कितनी ऊर्जा खर्च होती है। ये आंकड़ें 68 किलो के व्यक्ति के हिसाब से दिए गए हैं। यदि वज़न अधिक हो तो अधिक ऊर्जा खर्च होगी जबकि वज़न कम हो तो ऊर्जा कम खर्च होगी। तैराकी में एक घंटे में लगभग 472 कैलोरी ऊर्जा खर्च होती है जबकि दौड़ने में एक घंटे में लगभग 590 कैलोरी खर्च होती है।

तेज़ गति से साइकिल चलाने से 531 कैलोरी खर्च होती है किन्तु व्यायाम वाली साइकिल चलाने में एक घंटे में केवल 260 कैलोरी ही खच होती है। एरोबिक्वस में एक घंटे में लगभग 245 कैलोरी खर्च होती है, जबकि तेज़ चाल में चलने से 300 कैलोरी प्रति घंटा खर्च होती है।अब आपको तय करना है कि आप अपने लिये कौन सा व्यायाम चुनना चाहते हैं। (साभार दैनिक स्वेरा)

बच्चों का कोना

न्यूटन के तीसरे नियम पर आधारित दो गतिविधियों का मज़ा लें।

फुवारा कैसे घूमता है

बगीचों या खेतों में घूमते हुए फव्वारे से पानी का छिड़काव होते हुए आपने देखा ही होगा। हम समझने की कोशिश करेंगे कि वह क्या युक्ति है जिससे यह फव्वारा घूमता है ?

जरूरी सामानः

प्लास्टिक की लंबी चौकोन बोतल (गोल बोतल न लें), एक बाल्टी पानी, कील और धागा।

इस तरह से करेंः-

बोतल की चारों दीवार पर तले के पास, कील से एक-एक छेद बना लें। चारों छेद, या तो दीवारों के बाएं किनारे के पास बनाएं या दाहिने किनारे के पास।

बोतल की गर्दन पर इस तरह से धागा बांधें कि धागा पकड़कर बोतल को सीध लटकाया जा सके। लटकती हुई बोतल में पानी भर दें। छेदों से पानी की धार निकलती है और बोतल विपरीत दिशा में गोल-गोल घूमने लगती है।

कुछ चर्चाः

बगीचों में फव्वारे को घुमाने के लिए स्पिंकलर नाम उपकरण इस्तेमाल किया जात हैं स्प्रिंक्लर के नोज़ल से निकलता पानी ही स्प्रिंक्लर को घुमाता रहता है।

इतिहासकारों का मानना है कि 2000 साल पहले भी ग्रीस के हैरॉनश ने इस सिद्धांत पर आधारित उपकरण बनाए थे।

चक्र घूमती स्ट्रॉ

सामान : दो मोड़दार स्ट्रॉ (बेंडी स्ट्रॉ) लें।

दोनों मोड़दार स्ट्रॉ की लम्बीं भुजाओं को एक-दूसरे में फंसा कर एक बडी स्ट्रॉ बना लें। छोटी भुजाएं इस तरह मोड़ लें कि वे दोनों, लंबी भुजा से भी और एक दूसरे से भी समकोण बनाएं।

एक छोटी भुजा अपने मुंह में पकड़ें । पकड़ ढीली रखें ताकि स्ट्रॉ आसानी से घूम सके। स्ट्रॉ में फूंक मारें। स्ट्रॉ चकरी की तरह गोल-गोल घूमेगी।

तर्कशील हलचल

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति (महाराष्ट्र) का दूसरा साहित्य सम्मेलन

महाराष्ट्र की अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति का दूसरा साहित्य सम्मेलन सांगली में 14 व 15 मई 2016 को दक्कन मैनूफैक्चिरिंग हाल, माधवनगंज रोड, आर.टी.ओ. आफिस समोर में हुआ।

शनिवार 14 मई 2016 को पहले सत्र में 10 बजे उद्घाटन में सम्मेलन के अध्यक्ष डा. आ. ह. सालुखे (ज्येष्ठ विचारवंत व लेखक) तथा मुख्यअतिथि उत्तम कांबले, (गाजी सम्मेलनाध्यक्ष पहले अंधश्रद्धा निर्मूलन साहित्य सम्मेलन पिंपरी-चिंचड़) थे। इनका स्वागत के.डी. शिंदे, प. रा. आर्डे, अविनाश पाटिल द्वारा किया गया।

डा. सालुखे ने अंधविश्वासों को खत्म करने के लिए धर्म की आलोचना करना अनिवार्य बताया। उन्होंने बताया कि भारत में प्राचीन काल से ही धर्म की आलोचना अनेक चिंतकों द्वारा की जाती रही है। वेदकाल में भी चार्वाक चिंतकों ने देवों व ईश्वर के न होने का विचार दिया था। डा. सालुंखे ने अनेक उदाहरण पेश करते हुए यह स्पष्ट किया कि ईश्वरवाद के चंगुल से बाहर निकलने के लिए धर्म चिकित्सा अनिवार्य है। चार्वाकियों ने वेदों के प्रमाणों को ठुकराया था। यज्ञ में होने वाली हिंसा का विरोध किया था। परलोक के स्थान पर इस लोक के वास्तविक सत्य-जीवन को जीने पर जोर दिया था। जाति-वर्ण व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया था। धर्म की आड़ में पेट भरने वाले तांत्रिक, ज्योतिषियों इत्यादि की पोल खोली गई थी। महिलाओं की स्वतंत्रता पर बल दिया गया था। इसलिए आज के युग में धर्म की आड़ में पल रही इन सब रूढ़िवादी धारणाओं का विरोध होना चाहिए।

डा. गणेश देवी (ज्येष्ठ भाषा अभ्यासक, अहमदाबादी) ने स्पष्ट किया कि आज देश में लोकतांत्रिक विचारों को उखाड़ने का काम जारी है। तानाशाही के प्रयास किए जा रहे हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गला घोंटा जा रहा है। इसलिए सभी प्रगतिशील संस्थाओं के लिए यह एक चुनौती का समय है।

इसके बाद 'वार्तापत्र' के संपादक अविनाश पाटिल ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रभाकर नानावटी, राजा झिरमुपे, हमीद दाभोलकर, मेघा पानसारे, डा. बाबू राम, मुक्ता दाभोलकर, डा. तारा भवालकर, गौतमीपुत्र कांबुले, प्राचार्य विश्वास सायनावुर, झेरवर गायकवाड़, डा. प्रदीप पाटेकर, डा. प्रज्ञा दया पवार, कृष्णा चांदगुड़े, डा. धनाजी मुख इत्यादि ने संस्था के हजारों सदस्यों के सम्मुख अपने विचार व्यक्त किए।

दूसरा सत्र भोजन उपरांत दोपहर दो बजे से साढ़े 4.30 बजे तक चला। इस सत्र में भारत के विविध प्रदेशों से संपादकों व सम्पादक मंडल के सदस्यों ने भाग लिया। पत्रिका 'पेरियार पुंज (तमिलनाडू) के संपादक के. वीरामणी', नास्तिक मार्गम् (आंध्रप्रदेश) की सम्पादिका मिसेज मैत्री, 'तर्कशील' (पंजाब) की ओर से भूरा सिंह, 'तर्कशील पथ' की ओर से रैशनेलिस्ट सोसायटी हरियाणा के पूर्ण प्रधान राजाराम हंडिआया तथा राज्य कार्यकारिणी सदस्य राजेश पेगा, 'विवेकापंथी' (गुजरात) की संपादिका हर्षा भेड़ा, इंडियन स्केप्टिक (कर्नाटक) की ओर से जी. सतीश, यादवशक्ति पत्रिका (उत्तर प्रदेश) के संपादक राजवीर सिंह, ब्रेक थ्रू साईंस (प. बंगाल) संपादक सौमित्र बैनर्जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

अधिकतर विचारकों ने अपने विचार मराठी भाषा में ही व्यक्त किए, जिसके कारण अन्य भाषाओं के ज्ञाताओं को भाषा की समस्या खलती रही। केवल तीन-चार वक्ताओं ने ही हिन्दी भाषा का प्रयोग किया। श्री भूरा सिंह व श्री राजाराम ने इस बात पर जोर दिया कि सभी भारतीय भाषाओं में संपादित पुस्तको ंका अनुवाद हिन्दी भाषा में होना

चाहिए, ताकि प्रगतिशील साहित्य देश के कोने-कोने तक पहुंचे व देश का प्रत्येक नागरिक इस साहित्य को पढ़ व समझ सके। जिस प्रकार पंजाबी साहित्य का महाराष्ट्र को कोई लाभ नहीं पहुंच सकता, उसी प्रकार मराठी साहित्य का पंजाबी को कोई लाभ नहीं पहुंच रहा। साहित्य के आदान-प्रदान के लिए भाषा की संकीर्णता से ऊपर उठना चाहिए। श्रोताओं ने इस बात के महत्व को समझते हुए खूब तालियां बजाई। श्री भूरा सिंह ने वायदा किया कि यदि मराठी भाषा की किसी भी पुस्तक का हिन्दी अथवा पंजाबी भाषा में अनुवाद होता है तो पंजाब की तर्कशील संस्था द्वारा इसे छापा जाएगा। श्री राजाराम द्वारा ले जाई गई कुछ हिन्दी पुस्तकों को भी मराठी लोगों ने खरीदा।

तीन बजे से साढ़े 4 बजे तक कवि सम्मेलन किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष श्यामसुंदर सोनर महाराज थे। सायं 4 बजे से 6.30 बजे तक कथा व कवि सम्मेलन चला।

चौथे सत्र में सायं 7 बजे से 9 बजे तक संत तुकडोजी महाराज के चेले सतपाल महाराज का कीर्तन हुआ। 9 बजे रात भोजन उपरांत सत्र खत्म हुआ। रविवार 15 मई 2016 को सुबह 6 बजे 'निभर्य मार्निंग वाक' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पांचवें सत्र (10 से साढ़े 11 बजे) तक मराठी पत्रिका के संपादक मंडल की मीटिंग हुई। छटे सत्र (11.30 से 3.30 बजे) में विचार मंथन हुआ।

दोपहर बाद तीन से पांच बजे तक डा. जब्बार पटेल, डा. अ.ह. सालुंखे, डा. सुनील कुमार लवटे, डा. वी.एन.डी. पाटिल (राज्याध्यक्ष महाराष्ट्र अंनिस) ने अपने विचार व्यक्त किए। लेकिन ये सभी मराठी भाषा मे बोले, जिस कारण पंजाब व हरियाणा के साथियों को बहुत कम समझ में आया। अतः पूरे कार्यक्रम के दौरान भाषा की समस्या बनी रही।

इस कार्यक्रम के प्रबंधन में मुख्य भूमिका राहुल थोराट, संजय बनसोड़े, डा. प्रदीप पाटिल, राजीव देशपांडे, उमेश सूर्यवंशी, माधव नांवगे, मिलिन्द देशमुख, सुशीला मुंडे, सुतास थरोडकर, सुहास पवार, चंद्रकांत वंजावे, चंद्रकांत शिंदे, ज्योति अनाटे, प्रियंका तुपलोढे, अंकुड़ा चव्लण, फारुख गंवडी, योगेन्द्रो भारते, डा. संतोष भकोडे, रमेश माणगावे इत्यादि की रही।

रिपोर्ट : राजाराम हंडिआया

ईश्वर की अवधारणा मानव प्रगति में बाधकः डॉ॰ रणजीत

विवेकवाद, मानववाद और नास्तिकवाद एक ही सिद्धांत के अलग-अलग पहलू हैं। धर्म निरपेक्षता भी इसी में से एक है। नास्तिक दर्शन के अनुसार ईश्वर के न होने से मानव जाति पर अपने-आपको सभी विषमताओं और विद्रूपताओं से मुक्त करने का सीधा दायित्व है। ये बातें वामपंथी लेखक व प्रतिवादी कवि डा. रणजीत ने डायलॉग सोसायटी द्वारा आयोजित संवाद गोष्ठी में कही।

इस जीवंत संवाद-गोष्ठी में अध्यक्ष मंडल के सदस्य गीतेश शर्मा ने कहा कि अनिश्वरवादी अवधारणा भारत की ही देन है। यह मानवता को एकजुट करती है, जबकि धर्म बांटता है। विमल वर्मा ने कहा कि विचार से ज्यादा गहरा संस्कार होता है। इसलिए ईश्वरवादी संस्कारों को बदलने की ज्यादा आवश्यकता है। कथाकार सिद्धेश की राय में आस्तिक व नास्तिक में संवाद होना चाहिए। परशुराम ने धर्म के नाम पर, राष्ट्रप्रेम के नाम पर जो कुछ हो रहा है, उय पर खुल कर बहस करने की बात कही।

संवाद-गोष्ठी के साथ-साथ विभिन्न भाषाओं के कवियों ने काव्य-पाठ किया, जिनमें डा. रणजीत के अलावा जितेंद्र धीर, कुसुम जैन, रावेल पुष्प, प्रो. आशीष सान्याल, अमिताभ चक्रवर्ती, राज भिठौलिया, शाहिद हुसैन शाहिद, शाहिद फरोगवी, राजेंद्र डेनियल हासदा, रविप्रताप सिंह, प्रभामयी सामंत राय, सोफिया यास्मीन, प्रेम कपूर व अन्य ने भागीदारी।

कार्यक्रम में डा. रणजीत को अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन कवि, गजलकार जितेंद्र धीर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विमल शर्मा ने किया।

प्रस्तुति : प्रेम कपूर

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक सम्पन्न

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक बीते दिनों रोड़ धर्मशाला-करनाल में सम्पन्न हुई। मीटिंग की अध्यक्षता तर्कशील पत्रिका के सम्पादक बलवंत सिंह ने की। बैठक में सर्वप्रथम वहां पहुंचे समस्त सदस्यों ने अपना परिचय दिया।

सर्वप्रथम सोसायटी के पूर्व प्रधान राजा राम हंडियाया ने वर्तमान दौरे में तर्कशीलता के समक्ष चुनौतियां विषय पर अपनी बातचीत रखते हुए सोसायटी के इतिहास के बारे में जानकारी दी। उन्होंने आगे यह भी बताया कि वर्तमान दौर में देश की शासन व्यवस्था फासीवाद की और अपने कदम बढ़ाती जा रही है। अपने वक्तव्य में बलवंत सिंह लैक्चरार ने विकासवाद के क्रम को समझाते हुए बताया कि समाज के इतिहास का पहिया सदैव आगे की ओर ही बढ़ता है, चाहे विध्वंसक शक्तियां कितने भी अवरोधक पैदा करें, समाज के विकास को रोक नहीं सकती। उन्होंने वैज्ञानिक चिंतन एवं तर्कशीलता का झंडा बुलंद करते हुए अपना बलिदान देने वाले वैज्ञानिकों एवं अन्य समाज सेवकों का स्मरण करते हुए तर्कशील कार्यकर्त्ताओं को जनहित में कार्य करते हुए जनता को जागरूक करते रहने के लिए आह्वान किया।

बैठक में डा. विजय कुमार कलायत, राजेश कुमार पेगा, जयदेव बदरपुर, मा. धर्म सिंह करनाल, स. जसविन्द्र सिंह काछवा, रामेश्वर दास जींद, बलबीर नरवाल ने भी अपने विचार सांझा किए।

इसके अतिरिक्त डा. परमानन्द ने 'डर का मानव के शरीर व व्यक्तित्व पर प्रभाव' पर प्रकाश डालते हुए डर के मनोविज्ञान को अपने सरल शब्दों में समझाया। करनाल के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक श्री जे.सी. बठला ने तर्कशील कार्यकर्त्ताओं द्वारा मानसिक रोगों के विषय में पूछे गए प्रश्नों के सरल उत्तर देते हुए कार्यककर्त्ताओं की जिज्ञासा को शांत किया। बैठक का संचालन मा. बलजीत भारती ने किया।

इसके अतिरिक्त बैठक में तर्कशील पथ पत्रिका का प्रचार-प्रसार और भी अधिक जोर-शोर के साथ करने का एवं असंध में तर्कशील केंद्र के निर्माण की गतिविधियां चलाने का भी निर्णय लिया गया।

तर्कशील सोसायटी, कालांवाली (सिरसा) का शिक्षकों के बीच कार्याक्रम

-अजायब जलालाआना

दिनांक 1-6-2016 को डिंग डाईट (जेबीटी शिक्षण संस्थान) सिरसा हरियाणा में तर्कशील सोसायटी पंजाब ईकाई कालांवाली की टीम ने अपना प्रोग्राम करीब 200 भावी शिक्षकों और स्टाफ सदस्यों के बीच रखा, जिन्होंने बड़े गौर से तर्कशील प्रोग्राम सुना तथा तर्कशील साहित्य खरीदा। इस कार्यक्रम में तर्कशील संस्थाओं द्वारा किये जा रहे कार्यो और उद्देश्यों की जानकाकरी दी। टी. अब्राहिम कोवूर के जीवन के बारे जानकारी मा॰ जगदीश सिंहपुरा ने दी। मा॰ बूटा सिंह ने सोशल मीडिया टीवी चैनलों पर छाये अंधविश्वासी मैसजों का वैज्ञानिक विश्लेषण पेश किया। और हर एक अध्यापक के लिये वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अति महत्वपूर्ण बताया। मा॰ अजायब जलालआना ने जादू और उसके पीछे छुपे हुए रहस्यों की जानकाकरी दी एवं आसपास घटित रहस्यों (चमत्कारों) से उन्हें स्वयं ऐसी स्थिति से निपटने के लिए तैयार होने के लिए टिप्स दिए। ढोंगी बाबाओं, तांत्रिकों,. मुल्लों-मौलवियों, सयानों, चेलों को उनके द्वारा दैवीय शक्ति प्रदर्शित करने की चुनौती दी गई। आखिर में विद्यार्थियों ने जिज्ञासापूर्ण प्रश्न पूछे जिनका तार्किक जवाब दिया गया। एक अध्यापक के इस प्रश्न पूछे जाने पर कि डिस्कवरी चैनल पर किसी मनुष्य द्वारा 22 मिनट तक सांस रोकने बारे बताया गया था, इस पर उनके प्रश्न का समाधान करते हुए बताया गया कि चैनल तो भूत प्रेत के प्रोग्राम भी दिखाते हैं। अतः ऐसी सुनी या चैनल पर देखी अप्रमाणिक बातों को सत्य नहीं माना जा सकता जब तक कि उनका कोई वैज्ञानिक आधार न हो। जिस पर प्रश्नकर्ता निरुत्तर होकर खिसक गया। एक सच्चे शिक्षक को विज्ञान की सैद्धांतिक जानकारी होना आवश्यक है।

'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषय पर सेमिनार

दिनांक 15 मई, 2016 को ईस्माइलाबाद (कुरुक्षेत्र) में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की ओर से अपनी द्विमासिक मीटिंग में 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया । इस मीटिंग व सेमिनार में तर्कशील कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त स्थानीय निवासियों ने भाग लिया। 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के राजनीति विज्ञान के प्रो० जितेन्द्र कुमार ने देश में बढ़ रही विभिन्न घटनाओं पर अपने विचार व्यक्त करते हुए आज के संदर्भ में इस विषय की अहमियत पर प्रकाश डाला और अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहने का आह्वान किया।

तर्कशील विषयों को रेखांकित करते हुए प्रा० बलवन्त सिंह ने डाक्टर अब्राहम थामस काव्वूर के अब तक के आंदोलन को रेखांकित किया और कहा कि तर्कशीलता का अर्थ ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़ा है। उन्होंने डा०नरेन्द्र दाभोलकर, का० गोविन्द पानसरे और डा० कलबुर्गी जैसे महान तर्कशीलों का अभिव्यक्ति की स्वंतत्रता पर अडिग रहते बलिदान का उल्लेख किया।

सभा की अध्यक्षता सोसायटी के अध्यक्ष गुरमीत सिंह ने की। सभा के अन्त में उपस्थित दर्शकों व भागीदारों का धन्यवाद किया और तर्कशीलता के प्रति सोसायटी के कार्यकर्ताओं की लगातार सक्रियता पर प्रसन्नता व्यक्ति की। इस मीटिंग में आयोजन में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की ईमाइलाबाद ईकाई ने अहम भूमिका निभाई जिसमें टहल सिंह गिल, स्वर्ण सिंह आदि की भूमिका उल्लेखनीय रही।

सभा के अन्त में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की ओर से प्रचार सचिव व अन्य साथियों ने तर्कशील साहित्य की प्रदर्शन लगाई, जिसमें स्थानीय लोगों ने बेहद दिलचस्पी दिखाई और तर्कशील साहित्य खरीदा।

सामाजिक बहिष्कार जैसे सामाजिक कुरीति के खिलाफ सशक्त कानून बनेः

-डॉ दिनेश मिश्र

अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने बताया है कि हमारे यहां सामाजिक और जातिगत स्तर पर सक्रिय पंचायतों द्वारा सामाजिक बहिष्कार के मामले लगातार सामने आते रहते हैं। ग्रामीण आंचल में ऐसी घटनायें बहुतायत में होती हैं जिसमें समाज से बाहर विवाह करने, समाज के मुखिया का कहना न मानने, पंचायतों के मनमाने फरमान व फैसलों को सिर झुकाकर न पालन करने पर किसी व्यक्ति या उसके पूरे परिवार को समाज व जाति से बहिष्कार कर दिया जाता है व उसका समाज में हुक्का पानी बंद कर दिया जाता है । इसके विरोध में किसी प्रकार का कानून नहीं होने से दोषियों पर उचित कार्यवाही नहीं हो पाती।

उन्होंने बताया कि सामाजिक बहिष्कार होने से दंडित व्यक्ति व उसका परिवार गांव में बड़ी मुश्किल में पड़ जाता है। पूरे गांव-समाज में कोई भी व्यक्ति बहिष्कृत परिवार से न ही कोई बातचीत करता है और न ही उससे किसी प्रकार का व्यवहार करता है। उस बहिष्कृत परिवार को हैन्ड पम्प से पानी लेने, तालाब में नहाने व निस्तार करने, सार्वजनिक कार्यक्रमों में शामिल होने, पंगत में साथ बैठने की मनाही हो जाती है। यहां तक उसे गांव में किराना दुकान में सामान खरीदने, मजदूरी करने, शादी-ब्याह जैसे सामाजिक व सार्वजनिक कार्यक्रमों में भी शामिल होने से वंचित कर दिया जाता है, जिसके कारण वह परिवार गांव में अत्यंत अपमानजनक स्थिति में पहुंच जाता है तथा गांव में रहना मुश्किल हो जाता है। सामाजिक पंचायतें कभी-कभी सामाजिक बहिष्कार हटाने के लिए भारी जुर्माना, अनाज, शारीरिक दंड व गांव छोड़ने जैसे फरमान जारी कर देती हैं

उन्होंने बताया कि अब तक इस बारे कोई सक्षम कानून नहीं बन पाया है। इसलिए ऐसे मामलों में कोई उचित कार्यवाही नहीं हो पाती है न ही रोकथाम का कोई प्रयास होता है। सामाजिक बहिष्कार के मामलों के आंकड़े को लेकर नेशनल क्राईम रिकार्ड

शेष पृष्ठ 48 पर....

केस रिपोर्ट

उसकी पढ़ाई से किनाराकशी की दास्तान

 बलवंत सिंह लेक्चरार

मो : 94163-24802

वर्तमान दौर में चाहे कोई व्यक्ति अमीर हो अथवा गरीब सभी को शिक्षा के महत्व का ज्ञान हो चुका है। अब सभी लोग अपनी संतान को, चाहे वह लड़का हो अथवा लड़की, उसे अच्छी शिक्षा दिलवाना चाहता है। यह बात अलग है कि निर्धन व्यक्ति बड़े-बड़े नाम वाले स्कूलों की महंगी फीस देने में सक्षम न होने के कारण सरकारी स्कूलों में ही अपने बच्चों को पढ़ाने पर मजबूर रहते हैं सरकारी स्कूलों में पढ़ने की मजबूरी की बात इसलिए कहनी पड़ रही है क्योंकि अधिकतर सरकारी स्कूलों में अध्यापकों की कई-कई पोस्टें रिक्त पड़ी रहती हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी स्कूलों के अध्यापकों से बहुतायत में गैर शिक्षण कार्य लिए जाते हैं, जिनके कारण अध्यापक चाह कर भी गुणवत्ता वाली शिक्षा नहीं प्रदान कर पाते। यदि सरकार ईमानदारी से चाहे तो सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर प्राईवेट स्कूलों से भी बेहतर हो सकता है, क्योंकि सरकारी स्कूलों के अध्यापक प्रायः उच्च शिक्षा प्राप्त होते हैं। खैर यह सब कुछ तो किसी सरकार की नीतियों पर निर्भर करता है।

पुष्पा उस समय गांव के सरकारी स्कूल में नौवीं कक्षा में पढ़ रही थी। पुष्पा के उससे छोटे तीन और भाई-बहन थे। पुष्पा का पिता दिहाड़ी मजदूरी करके अपने परिवार का जैसे-तैसे गुजारा चला रहा था। पुष्पा के छोटे भाई-बहन भी गांव के ही सरकारी स्कूल में पढ़ रहे थे। उन्होंने दो-तीन पशु भी पाल रखे थे। बच्चों को स्कूल भेजने के बाद पुष्पा की मां जमींदारों के खेतों से पशुओं के लिए चारा लेने चली जाती थी। वे कुछ दूध घर रखकर बाकी दूध को बेच देते थे, जिससे उनके घर का गुजारा चलता जा रहा था। पढ़ाई में पुष्पा मध्यम वर्ग की थी। आठवीं तक तो वह नियमित तौर पर स्कूल में जाया करती थी और घर पर आकर स्कूल का सारा गृह-कार्य भी नियमित रूप से कर लिया करती थी। उसके देखा-देखी उसके छोटे भाई-बहन भी नियमित तौर पर स्कूल जाया करते थे। पुष्पा अपने भाई-बहनों का गृह कार्य भी करवा दिया करती थी। मां-बाप की नजर में पुष्पा पढ़ाई में बहुत अच्छी थी, जोकि घर में खुद भी पढ़ती रहती थी, और अपने भाई-बहनों को भी पढ़ा देती थी।

परन्तु अब पिछले कुछ दिनों से पुष्पा स्कूल जाने से आनाकानी करने लग गई थी। प्रतिदिन जब स्कूल जाने का समय होता तो पुष्पा को कभी सिर दर्द और कभी पेट दर्द की शिकायत हो जाती। कई दिनों से जब वह अपनी निजी समस्याओं के कारण स्कूल में नहीं गई, तो उनकी कक्षा की इंचार्ज ने उसके पड़ोसी बच्चों के द्वारा पुष्पा के मां-बाप को स्कूल में बुलवा भेजा। अगले दिन पुष्पा की मां पुष्पा को जबरदस्ती अपने साथ लेकर स्कूल में चली गई। उसकी कक्षा की इंचार्ज ने पुष्पा की मां से शिकायत की कि पुष्पा कई दिनों से स्कूल नहीं आ रही है। अब यदि यह रोजाना स्कूल में नहीं आएगी तो स्कूल से उसका नाम कट जाएगा। अभी कक्षा इंचार्ज और पुष्पा की मां आपस में बातचीत कर ही रही थीं कि पुष्पा को दौरा सा पड़ गया और वह अपनी कक्षा में ही बेसुध ा सी होकर गिर पड़ी। उसकी हालत देख कर उस कक्षा के बच्चे डर से गए। कक्षा इंचार्ज भी घबरा गई और पुष्पा की मां से कहने लगी कि इसको घर

ले जाओ और जब यह ठीक हो जाए तब स्कूल में भेज दिया करना। उसने पुष्पा की मां से उसके बीमार होने की अर्जी पर हस्ताक्षर करवा लिए और उसे वापिस घर ले जाने के लिए कह दिया। इतने में पुष्पा ठीक हो कर बैठ गई और उसकी मां उसे लेकर वापिस घर आ गई।

उसके बाद पुष्पा सारा दिन तो घर में ठीक-ठाक रहती। घर का काम भी करती रही, परन्तु सुबह-सुबह उसे कोई न कोई परेशानी हो जाती। अब उसे स्कूल गए हुए एक महीने से अधिक समय हो चुका था। जिस दिन भी उसकी कक्षा इंचार्ज उसके पड़ोस के बच्चों के मार्फत उसे स्कूल में आने का संदेश भेजती, उसी दिन पुष्पा को दौरा सा पड़ जाता।

अब तक पुष्पा के घर वाले बहुत परेशान हो चुके थे। जितने मुंह उतनी बातें, कोई कहता कि स्कूल के पास किसी घर में कभी एक लड़की पहले कभी फांसी लेकर मर गई थी, अब उस लड़की की इसे 'पकड़' हो गई है। कोई कहता कि इसका चौराहे पर पैर आ गया है। इसीलिए 'ओपरी कसर' हो गई है।

परेशान होकर उसके घर वाले बाबाओं, तांत्रिकों-मंत्रिकों की शरण में जाने लग गए। बाबाओं ने उनके मन में अंधविश्वास को और भी पक्का कर दिया। जब भी वे किसी बाबा अथवा तांत्रिक-मांत्रिक के पास जाते, तो बाबा लोग बातों-बातों में उनसे सब कुछ दरयाफ्त कर लेते और फिर 'पुच्छा' में बता देते कि पुष्पा को स्कूल के पास 'फांसी लेकर मरी हुई लड़की के प्रेत का साया' परेशान कर रहा है। इस प्रकार वे लोग विभिन्न बाबाओं, तांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों की चौकियां भरते रहे, परन्तु पुष्पा को फांसी लेकर मरी हुई लड़की का तथाकथित 'प्रेत' और अधिक परेशान करता चला गया।

अंत में उनके एक परिचित ने उन्हें मेरे पास मनोरोग परामर्श केंद्र में भेज दिया। मैं जब उससे उस के घर वालों के सामने बातचीत करने लगा तो वह दौरा पड़ने का ढोंग सा करने लगी। में समझ गया कि पुष्पा के मन पर कोई बोझ है, जिसे वह घर वालों के सामने व्यक्त नहीं कर सकती। मैंने उसके घर के सदस्यों को बाहर बैठने का निर्देश दिया और एकांत में पुष्पा के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से बातचीत करनी प्रारंभ कर दी। पहले तो वह कोई सहयोग नहीं दे रही थी। फिर मैंने एक ट्रिक का इस्तेमाल करके उस पर और अधिक मानसिक प्रभाव डाल कर उसके मन में थोड़ा भय भी उत्पन्न कर दिया। फिर उसके मन में एहसास करवा दिया कि उसके द्वारा की गई सभी गतिविधियों का मुझे पूरा पता है। यदि वह एकांत में अपनी सारी समस्या बता देगी तो बात यहीं पर खत्म हो जाएगी। परन्तु अगर उसने अपने मन की सारी बात न बताई तो मैं उसके घर वालों के सामने उसकी सारी पोल खोल दूंगा। यह सुनकर वह बुरी तरह से घबरा गई और हाथ जोड़ कर कहने लगी कि घर वालों को मत बुलाओ, मैं सारी बात बता देती हूं।

फिर उसने अपनी जो गंभीर समस्या बताई, उसका विवरण इस प्रकार है :

पढ़ाई में वह मध्यम दर्जे की थी। पहले वह प्रतिदिन स्कूल जाया करती थी और नियमित रूप से अपना होमवर्क कर लिया करती थी। अध्यापकों की नजर में वह एक मेहनती लड़की थी। वह अपने गृह कार्य के साथ-साथ अपने छोटे भाई-बहनो का गृह कार्य भी नियमित रूप से करवा दिया करती थी। आठवीं कक्षा तक तो उसकी पढ़ाई बिल्कुल ठीक तरह से चल रही थी।

पुष्पा का एक चाचा राजमिस्त्री का कार्य करता है। पुष्पा की बुआ का लड़का विनोद, जोकि 12वीं कक्षा कक्षा में फेल हो गया था, उनके पास राज मिस्त्री का काम सीखने के लिए आ गया। विनोद वैसे तो पुष्पा के चाचा के घर में रहता था, परन्तु उनके घर पास-पास होने के कारण वे खाली समय में इक्ट्ठे ही खेला करते थे। खेल-खेल में पुष्पा और विनोद एक-दूसरे के काफी नजदीक आ गए। चढ़ती हुई जवानी के जोश में वे दोनों अपनी रिश्तेदारी की मर्यादा को भूल गए और लाज-शर्म की सारी सीमाएं लांघ गए। एकांत मिलने पर जब

एक बार उन्होंने अपने शारीरिक संबंध बना लिए तो धीरे-धीरे उन्हें ऐसा करने की आदत सी पड़ती चली गई।

वैसे तो उनको एकांत मे मिलने के पल नसीब नहीं होते थे, परन्तु एक दिन पुष्पा ने किसी जरूरी काम से अपनी मां के कहने पर स्कूल से छुट्टी ली हुई थी। उसकी मां पशुओं का चारा लेने के लिए जब बाहर खेतों में गई हुई थी और पुष्पा घर में अकेली अपने घर का कार्य कर रही थी तो उसी दौरान विनोद दिहाड़ी पर काम करते-करते अपने फूफा के कहने पर राजमिस्त्री का कोई सामान लेने के लिए घर पर आ गया। जब उसने पुष्पा को अपने घर में अकेली को काम करते हुए देखा तो वह उसके पास चला गया। बातों-बातों में दोनों ने मयार्दा की सीमा लांघ कर अपने शारीरिक संबंध स्थापित कर लिए। इससे आनंद की अनुभूति होने पर वे फिर से एकांत में मिलने का अवसर तलाशते रहते। परन्तु कई दिनों तक उन्हें ऐसा मौका न मिल सका। वे दोनों बेचैन से रहने लगें फिर एक दिन पुष्पा ने तबीयत खराब होने का बहाना बनाकर स्कूल से छुट्टी ले ली। पुष्पा को स्कूल में न जाती देखकर विनोद की बांछें खिल गई। जब पुष्पा की मां घास लेने के लिए खेतों में चली गई तो बहाना बनाकर विनोद उनके घर आ गया और दोनों ने अपनी काम पिपासा शांत कर ली। पहले तो पुष्पा कभी-कभी ही तबीयत खराब होने का बहाना बनाकर स्कूल से छुट्टी लेती थी, परन्तु धीरे-धीरे उन दोनों में काम वासना का आवेग बढ़ता चला गया। अब ध ीरे-धीरे पुष्पा अवचेतन तौर पर काम वासना की गुलाम सी बनती चली गई। अब जब भी स्कूल जाने का वक्त होता तो उसकी तबीयत खराब हो जाती। पुष्पा ने भी अन्य गांव वालों से स्कूल के पास किसी लड़की द्वारा फांसी लेकर मर जाने की बात सुनी हुई थी। अतः स्कूल न जाने का बहना बनाने के लिए अवचेतन तौर पर उसकी जुबान पर कभी-कभार उस लड़की की बात भी आ जाया करती थी। जिस दिन उसकी मां उसे जबरदस्ती अपने साथ स्कूल ले गई तो स्कूल में पुष्पा को दौरा सा पड़ गया और उसकी जुबान पर उसी फांसी लेकर मरी हुई लड़की का नाम आया तो स्कूल के अध्यापक और पुष्पा की मां और अधिक डर गए। इससे पुष्पा को स्कूल में जाने से निजात मिल गई।

जब घर वाले उसे बाबाओं की चौकियों पर ले गए तो बाबाओं ने उनके अंधविश्वास को और भी पक्का कर दिया। परन्तु अब जब मेरे तर्कपूर्ण सवालों का उसे सामना करना पड़ा तो उसके चेहरे की हवाईयां उड़ने लग गई। जब मैंने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए इन गलत कारनामों की सच्चाई उसके सामने रखी तो वह अत्यंत घबरा गई। जब मैंने उसे विश्वास दिलाया कि यदि वह आगे से सच्चे रास्ते पर आ जाएगी तो उसके रहस्य पर हमेशा पर्दा पड़ा रहेगा। परन्तु यदि उसने फिर से ऐसी गलती की तो मजबूर होकर मुझे उसकी सच्चाई उसके घर वालों के सामने रखनी पड़ सकती है।

उसने वचन दिया कि वह अब रोजाना स्कूल जाया करेगी और अब वह गलत रास्ते पर कभी भी नहीं चलेगी। उसके बाद वह स्कूल जाने लग गई और उसकी किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं मिली। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक दिशा-निर्देश से एक लड़की का जीवन सही पटरी पर लौट आया।

नोट : *यह एक सत्य घटना है, परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिए गए हैं।* ★★★

---

*पृष्ठ 45 का शेष...***(सामाजिक बहिष्कार)**

ब्यूरो, राज्य सरकार, पुलिस विभाग के पास कोई अब तक रिकार्ड जानकारी नहीं है, ऐसी मुझे जानकारी सूचना के अधिकार के अंतर्गत प्राप्त हुई है। जबकि ऐसी घटनाएं देशभर में लगातार होती हैं। अतः सामाजिक बहिष्कार के संबंध में सक्षम कानून बनाया जाना आवश्यक हो गया है। इस हेतु राष्ट्रपति को पत्र भेजकर सामाजिक बहिष्कार के विरोध में सक्षम कानून की मांग की गई है।

आईना

वह नहीं आएगा

बलजीत भारती
मो. 8295051400

भारत में बहुगिनती उन लोगों की है, जो आध्यात्मिकता में यकीन रखते हैं। उनका विश्वास है कि इस दुनिया को ईश्वर ने बनाया है, वही इसका संचालन करता है और वही इसे खत्म करेगा। उनके इस मत का समर्थन करने वाले धार्मिक स्थान लाखों की संख्या में कुकरमुतों की तरह जगह फैले हुए हैं। डेरावाद का सिस्टम भी उनके इस मत को मजबूत करने में जुटा हुआ है। हमारे धर्मग्रंथों में आध्यात्मिकता ठूंस-ठूंस कर भरी हुई है। यानि कहने का अर्थ यह है कि कदम-कदम पर आध्यात्मिक रंग दिखाई देता है और लोग ये कहते नहीं थकते कि भारत विश्व का आध्यात्मिक गुरु है। इन धार्मिक ग्रंथों एवं तथाकथित गुरुओं के हजारों वर्षों के अनवरत प्रचार के कारण लोगों के दिमाग में यह बात बैठ गई है कि दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, वह ईश्वर के इशारे पर हो रहा है, उसकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता, आदि-आदि।

अब विचार करने योग्य बात यह है कि मनुष्य जिसके ऊपर इतना अन्धा विश्वास करता है क्या वह कभी इनकी मदद करने के लिए आया है? हमने फिल्मों या टीवी के पर्दे पर या धार्मिक ग्रंथों में तो यह देखा-पढ़ा है कि जब मनुष्य पर कोई मुसीबत आती है, तो वह फौरन मदद को पहुंच जाता है। प्रार्थना या तपस्या के फलस्वरूप वह फौरन हाजिर हो जाता है। लेकिन वास्तविक जीवन में कभी वह किसी की मदद करने आया हो, ऐसा कोई प्रमाण नहीं है। लोग दिन-प्रतिदिन घरों व मंदिरों में प्रार्थनाओं एवं कथा-कीर्तन में जुटे पड़े हैं। कुछ लोग तो कठिन पूजा-पाठ व घोर तपस्या भी करते हैं। क्या उसने किसी की पूजा-पाठ व तपस्या पर ध्यान दिया है? कुछ जुनूनी लोग तो भगवान व देवी-देवता को खुश करने के लिए अपने अंगों को काट कर उनकी मूर्ति के सम्मुख चढ़ा देते हैं। यहां तक कि कुछ लो तो अपना सम्पूर्ण शरीर ही उनकी भेंट चढ़ा देते हैं। मैंने इसी कॉलम में राजस्थान के एक परिवार का जिक्र किया था, जहां शिव को प्रकट कराने के लिए पूजा करते हुए पूरे परिवार ने अपने प्राण त्याग दिए थे। वे शिव को अपने सम्मुख बुलाना चाहते थे, लेकिन उसने न आना था, न ही वो आया।

कई साल पहले एक विमान दुर्घटना हुई थी जिसमें सवार 100 लोगों में से 99 लोग मारे गए थे और केवल एक बच्चा संयोगवश बच गया था। अखबार का शीर्षक था-'जाको राखे सांईयां मार सके न कोय'। यानी उस बच्चे को भगवान ने बचाया था। यदि उसको बचाने वाला भगवान था तो 99 लोगों को मारने वाला कौन था। यदि उसमें बचाने की ताकत है, तो सभी को क्यों नहीं बचाया। और वे तो कहते भी हैं कि मारने वाला है भगवान, बचाने वाला है भगवान।

वास्तविकता यह है कि हजारों वर्षों से लगातार हमारे धार्मिक ग्रंथ व पंडे-पुजारी यही मिथिहास हमारे दिमागों में घुसेड़ते जा रहे हैं, जिससे हमारे मस्तिष्क ने तर्क-शक्ति व विवेक शक्ति जड़ हो गई है। धार्मिक पुस्तकों एवं फिल्म व टीवी के पर्दे से बाहर निकलकर वह कभी किसी की मदद करने को नहीं आया। आपकी आर्थिक तंगी में वह आपकी एक रुपए की भी मदद नहीं कर सकता। आपके बच्चे की प्रवेश परीक्षा में एक अंक भी ज्यादा नहीं दिलवा सकता। छोटी-छोटी बच्चियों के साथ कुकर्म हो रहे हैं, परन्तु वह बचाने नहीं आता। यहां तक कि धार्मिक स्थानों पर दुर्घटनाओं में लोग मर रहे हैं, वह किसी की मदद को नहीं आता। किसी दुख-संकट में, बीमारी में, आपदा में, यदि कोई आपकी मदद कर सकता है, तो आप खुद और इन समस्त संघर्षों से आपको खुद ही गुजरना पड़ता है।

उसके आगे हाथ फैलाना बंद कीजिए। विवेक से काम लीजिए। हाथों की लकीरों पर नहीं, हाथों पर यकीन रखिए। मेहनत कीजिए और अपने परिवार, समाज व देश को खुशहाल कीजिए। यदि कोई समस्या है तो इसे भगवान के समक्ष नहीं, सरकार के समक्ष उठाइये। स्वयं को संगठित कीजिए, निश्चित तौर से आपको सफलता मिलेगी। अपने ऊपर विश्वास रखिए। दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो आप हासिल नहीं कर सकते। ★★★

लेखकों/पाठकों के लिएः-

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

बोले-पागल स्याणे होगे

रामेश्वर दास 'गुप्त'

अंधविश्वास नै मार दिए, हम पढ़े-लिखे निमाणे हो गे
अक्लमंद तै बे अक्ले हम, बौले-पागल स्याणे हो गे।।

कदे भूत नै घेर लिया मैं, कदे जिनां गेल्यां जंग होग्या,
किस-किस का जिक्र करूं मैं, आज देश के दंग होग्या,
लम्बी-लम्बी गप्प छोड़ र्या, मालिक मेरा मलंग होग्या,
ऊतां के हाथ्यां चढ़ग्या, मेरे चेहरे का चिट्टा रंग होग्या,
मांग-मांग कै खाया करते, उस कुल्हड़ी म्हं दाणे हो गे।

सदा पढ़ाया ग्रहण चांद का, लगता मेरे भाई रै,
खुद मैं अंधविश्वासी सूं, मन्नै साईंस की करी पढ़ाई रै,
मैं कोन्या चाल्या उस बात पै, जो मन्नै बात बताई रै,
ग्रहण लग्या तै सरोवर के म्हं, जा कै डुबकी लाई रै,
साईंस के असूल आज यें, सारे अदल-पिछाणे हो गे।

माया का मोह छोड़ द्यो, मुक्ति की राह दिखावैं,
लालच नाश की राही सै, या जनता नै समझावैं,
हमनै त्याग सिखाणे आले, नि रातां नोट कमावैं,
खुद दोनूं हाथों लूट रहे, डेरे के म्हं ऐश उड़ावैं,
चिमटे मारैं गात दाग दें, मंदिर-मस्जिद ठाणे हो गे।

तर्क सीख ल्यो फैदा होगा, इसी सीख कई बार दई,
मन्नै कह दी, तन्ने सुण ली, कांनो पै को तार दई,
अंधविश्वासां की तन्ने भाई, चौगिर्दे को लार दई,
'रामेश्वर' की सीख ईब ठा, धरती के म्हं मार दई,
नए कपड़े पहनो साथी, ये कपड़े फटे-पुराणे हो गे।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

'**तर्कशील केंद्र**' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने सफीदों जिला जींद में भूखण्ड प्रदान किया है, जिस पर इस केंद्र का निर्माण करना है। इस लिए सभी से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें, ताकि कार्य को जल्दी आरम्भ किया जा सके । सहयोग राशि चैक या कैश के रूप में दिये गये सोसायटी के अकाऊंट में जमा करवाई जा सकती है या व्यक्तिगत रूप से राज्य कार्याकारिणी की मीटिंग में कोषाध्यक्ष के पास जमा करवाई जा सकती है।

राज्य कार्यकारिणी

निर्भय प्रभात फेरी

सांगली (महाराष्ट्र) 15 मई, 2016 प्रातः 6 बजे

सुबह हो गई–

सुबह हो गई–विज्ञान की सुबह

अंधश्रद्धा दूर करें

ज्ञान की सीढ़िया चढ़ें

आओ, दिल से शुरूआत करें।

ये मराठी में गूंजता, उल्लासमय तराना, सांगली की फिजा को रोमांचित कर रहा था। ऐसी घोषणा से गूंजायमान फिजा सांगली के लोगो को ही नहीं, देश भर के तर्कशीलों (Rationalists) को प्रेरित कर रही थीं कि डा॰ नरेन्द्र दाभोलकर की प्रातः भ्रमण करते की गई हत्या से यह आन्दोलन विचलित होने वाला नहीं है, इस लिए इस निर्भय प्रभात फेरी का सीधा संदेश था कि 'तर्कशील निर्भय' हैं। कोई भी बाधा विज्ञान का सवेरा होने से नहीं रोक सकती।

शहीद डा. नरेन्द्र दाभोलकर अमर रहे

शहीद का. गोविंद पानसरे अमर रहे

शहीद का. एम.एम. कलबुर्गी अमर रहे

ऐसे जोशीले नारों से आगाज हुआ इस का। डफली बजी और दो दिवसीय महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती के आयोजन में देश भर से पहुंचे तकशील साथी इकट्ठे होकर निकल पड़े। एक संदेश देने के लिए कि आने वाला कल विज्ञान का है, हमारा है। प्रभात फेरी की शुरूआत आमराई से हुई, डफली पर बजते विज्ञान की सुबह के तराने से जोश दुगना हो गया। कालेज कार्नर से गुजरते हुए यह फेरी शिवाजी स्टेडियम पहुंची।

नारे गुजायमान थेः

लड़ेगे जीतेंगे–

डा. नरेन्द्र दाभोलकर अमर रहे!

अंधश्रद्धा निर्मूलन साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा. आ.ह.सालुंखे, महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के कार्याध्यक्ष अविनाश पाटिल, अंधश्रद्धा निर्मूलन वार्तापत्र के संपादक प.रा.आर्डे, तर्कशील सोसायटी पंजाब के साहित्य विभाग प्रभारी भूरा सिंह, तर्कशील सोसायटी हरियाणा से वरिष्ठ तर्कशील राजाराम हंडियाया, तर्कशील सोसायटी हरियाणा उप महासचिव राजेश कुमार पेगा इस प्रभातफेरी में शामिल थे और लोगों का नेतृत्व कर रहे थे। इसके अतिरिक्त डा. नरेन्द्र दाभोलकर एवं का. गोविन्द पानसरे के परिवार के सदस्य भी इस यात्रा में शामिल हुए।

समापन पर सम्मेलन अध्यक्ष डा. आ.ह. सालुंखेनी ने आहवान करते हुए कहा, 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की कामना करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। इस स्वतंत्रता पर जो भी आघात करेगा, उसका प्रतिरोध होगा। आज मानवीय मूल्यों को ध्वस्त किया जा रहा है। उनका सभी को एक जुट हो कर विरोध करना होगा। ये ही इस प्रभात फेरी का आहवान है ।

हम निर्भय हैं!

हम संघर्ष करेंगे!

हम जीतेंगे!

इस निर्भय प्रभातफेरी में सांगली के लोगों का उत्साहपूर्ण सहयोग मिला। सांगली शहर सुधार समिति, शहीद अण्णा साहेब पत्रावले ने इस आयोजन में अहम् सहयोगी की भूमिका निभाई।

प्रस्तुतिः गुरमीत, अम्बाला

महाराष्ट्र के शहर सांगली में महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती के द्वितीय साहित्य सम्मेलन के दृश्य

सम्मेलन को संबोधन करते हुए भूरा सिंह महमा सरजा एवं प्रधानगी मंडल

सांगली में निकाले गए जागरूकता मार्च का दृश्य

तर्कशील सोसायटी पंजाब की बरनाला में छ:माही एकत्रता

प्रधानगी मंडल

सभा में उपस्थित प्रतिनिधी

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।